यज्ञ

लेखक एवं प्रकाशक

धर्मपाल कपूर

बी०ए० ऑनर्स, एम०ए०

कोठी नं. 1135, सैक्टर 11

पंचकूला-134112 (हरियाणा)

फोन : 0172-2567845

मोबाइल : 9356301618

संस्करण : 2017
प्रतियाँ :

धर्मपाल कपूर
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 9356301618

टंकण एवं साजसज्जा : **अभिनव इंटरप्राइजिज, मो. 94683 40497**
मुद्रक :

दो शब्द

चाहे अमीर है कोई, चाहे ग़रीब है ।
जो नित्य यज्ञ करता है वह खुशनसीब है ।।
हम सब में रहें सर्वथा यज्ञीय भावना ।
'ज़ख्मी' की सच्चे दिल से यह श्रेष्ठ कामना ।।
होती है पूर्ण कामना, महान् यज्ञ से ।
होता है सारे विश्व का, कल्याण यज्ञ से ।। —जख्मी

भद्र आत्माओ ! मानव प्रभु की सर्वश्रेष्ठ कलाकृति है । मानव के अतिरिक्त जितनी भी शेष योनियाँ हैं भोग योनियाँ कहलाती हैं । परन्तु मानव उभय (भोग एवं कर्म) योनि में गिना जाता है । वह अपने कर्मों एवं भाग्य से महामानव भी बन सकता है यदि वह मानव कल्याण के कार्य करे । वस्तुतः मानव का प्रत्येक शुभ कर्म यज्ञ है । जब वह अपने व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर कोई भी परोपकारी के कार्य करता है । तभी उसका जीवन यज्ञमय जीवन बन जाता है । यज्ञरहस्य को स्पष्ट करने के लिए उद्दालक ऋषि ने महाराजा जनक की यज्ञ सभा में निम्नलिखित 5 प्रश्न किये थे—

1. यज्ञ की आत्मा क्या है ?
2. यज्ञ का प्राण क्या है ?
3. यज्ञ का सार क्या है ?
4. यज्ञ के विभिन्न देवों का मुख क्या है ?
5. यज्ञ की सफलता क्या है ?

यज्ञ सभा में जब कोई भी विद्वान् इन प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सका तो महाराज जनक ने उद्दालक ऋषि से इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिये निवेदन किया था । ऋषि उद्दालक ने इन प्रश्नों का उत्तर इस प्रकार दिया था—

1. स्वाहा यज्ञ की आत्मा है ।
2. इदं न मम यज्ञ के प्राण हैं ।
3. सुगन्धि यज्ञ का सार है ।
4. यज्ञ देवों का मुख अग्नि है ।
5. दान यज्ञ की सफलता है ।

अतः हम देखते हैं कि यज्ञ मानव जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण है । परन्तु दुर्भाग्यवश अधिकांश आर्य समाजों एवं अन्य धार्मिक संस्थाओं में यज्ञ मुख्यतः संस्कृत भाषा में ही किया जाता है । यज्ञ में पधारे हुये अधिकांश व्यक्तियों को संस्कृत भाषा समझ में नहीं आती है । अतः मैं विभिन्न संस्थाओं के अधिकारीगण

से सविनय निवेदन करता हूँ कि वे संस्कृत के साथ उसका अर्थ हिन्दी में अवश्य करें ताकि वहाँ पधारे सब व्यक्तियों को समझ में आ सके। यदि समय का अभाव हो तो थोड़े मंत्र ही अर्थ सहित बोलें। ऐसा करने से वहाँ पधारे व्यक्तियों में यज्ञ के प्रति रुचि अवश्य बढ़ेगी और सबको लाभ होगा। कृपया यज्ञशाला को संस्कृत की पाठशाला न बनाएं।

मैंने अनेक पुस्तकों के गम्भीर अध्ययन एवं अनुशीलन के उपरांत प्रस्तुत पुस्तक का सृजन किया है। क्योंकि मुझे धार्मिक संस्थाओं में कोई भी उपयोगी पुस्तक दिखाई नहीं देती थी। इसमें मैंने मंत्रों के अर्थों को पद्य और गद्य के रूप में वर्णित किया गया है। इससे सत्संगियों की मंत्रों और यज्ञ के प्रति भावना अत्यंत प्रबल होगी ऐसा मेरा विश्वास है।

मैंने प्रस्तुत पुस्तक का सृजन अनेक पुस्तकों के गंभीर अध्ययन एवं अनुशीलन के उपरांत इसलिये किया है क्योंकि यज्ञ पर आर्य समाजों एवं अन्य धार्मिक संस्थाओं में कोई उपयोगी पुस्तक मुझे दिखाई नहीं देती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक यज्ञ करने के लिये अत्यंत लाभदायक सिद्ध होगी क्योंकि इसमें विभिन्न वेदमंत्रों का अर्थ पद्य एवं गद्य सहित प्रस्तुत किया गया है ताकि साधारण यज्ञकर्ता यज्ञ को सरलता से समझ सकें।

प्रस्तुत पुस्तक के लिखने में मुझे सर्वश्री लालचंद चौहान, रोशन लाल अग्रवाल, नरेश बंसल, जय किशन आदि ने सहयोग प्रदान किया है। अतः इन मित्रों का स्तवन न करना मेरी कृतघ्नता होगी। श्री लालचंद चौहान जी ने इस पुस्तक के सम्पादन में विशेष योगदान दिया है। मुझे यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं है कि इनके बिना प्रस्तुत पुस्तक का वर्तनान रूप में संयोजन न हो पाता। जिस अचिंत्य शक्ति प्रभु की असीम अनुकम्पा से मैं अपने संकल्प को मूर्तरूप दे सका उसका मैं कोटि-कोटि धन्यवाद करता हूँ। मैं उन सभी लेखकों एवं कृतिकर्ताओं का भी अत्यंत धन्यवादी हूँ जिनकी कृतियों से मैंने संदर्भ उद्धृत किये हैं। मैंने प्रस्तुत पुस्तक के लिखने में पूर्ण सावधानी बरती है। परन्तु संसार का प्रत्येक व्यक्ति अल्पज्ञ एवं अपूर्ण है। अतः कोई भी त्रुटि रह गई हो तो पाठकों से अनुरोध है कि उस त्रुटि को लिखकर निम्नलिखित पते पर भेजें ताकि भविष्य में उसे सुधारा जा सके। मैं इसके लिये आपका धन्यवादी हूँगा।

धर्म पाल कपूर

तिथि : 11.03.2017

(धर्मपाल कपूर)
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 9356301618

निवेदन

आज व्यक्ति असीमित अधिकार, असीमित धनदौलत, मानप्रतिष्ठा की होड़ में रात दिन दौड़ रहा है । वह किसी नियम, विधान, कानून को मानने को तैयार ही नहीं । परिणामस्वरूप तनाव और हताश ने उसे जकड़ लिया है । बेचारा करे तो क्या? दधीचि, याज्ञवल्क्य, अश्वपति और दयानन्द का देश आज अग्रणी क्यों नहीं रहा? सत्य पथ पर चलने और असत्य को त्यागने की सोच बदल गई है । विश्व में आधुनिक उपकरणों के अम्बार लग गये है जो सब वायुमण्डल को प्रदूषित कर रहे हैं, इस प्रदूषित वायुमण्डल को बचाने के लिये ऋषि, मुनियों ने वेद में प्रतिपादित यज्ञ के द्वारा एक सरल उपाय बतलाया था, जिसको बहुत कम लोग समझ पाये हैं ।

यज्ञ – यज्ञ का अर्थ तीन प्रकार का है, विद्वानों का आदर, पदार्थों के संयोग और वियोग के ज्ञान से शिल्पविद्या का प्रत्यक्षीकरण तथा विद्या, धर्म और दान का सम्पादन । यज्ञ क्यों करें? सम्पूर्ण जगत् के उपकार के कार्य यज्ञ हैं । आप किसी भूखे को अन्नदान करेंगें तो एक आत्मा तृप्त होगी और यज्ञ से वायुमण्डल शुद्ध होता है, मेघों से एकत्रित जल भी शुद्ध होता है, इससे जितना वायुमण्डल शुद्ध होगा, उसमें रहने वाले सब प्राणियों को लाभ होगा । जल से अन्न, औषधि, वनस्पति आदि उत्पन्न होते हैं । शुद्ध अन्न और जल से शरीर नीरोग रहता है । यज्ञ में घी, सामग्री, चावल, तिल, मिष्ठान्न आदि रोगनाशक व पुष्टिवर्धक हैं । इनके अग्नि में भस्म होने से प्राणी मात्र को शुद्ध हवा, जल की प्राप्ति से निरोगी काया सुख मिलता है । कहते भी हैं, पहला सुख निरोगी काया ।

यज्ञ के लाभ – वेद मन्त्रों के साथ आहुति दी जाती है, इससे मन्त्र स्मरण हो जाते हैं और उन मंत्रों का भावार्थ पढ़ें तो उस मंत्र द्वारा ईश्वर से क्या प्रार्थना की गई है, उसका ज्ञान होता है । इससे यज्ञ के लाभ एवं महत्त्व का ज्ञान होता है । जैसे **ओ३म् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय.....** भावार्थ – हे वेदों के मूलस्रोत परमेश्वर! समस्त पदार्थों में विद्यमान अग्ने! यह आत्मा तेरी समिधा है (जैसे कि यह समिधा अग्नि की आत्मा है) हे अग्ने! इससे तुम प्रदीप्त हो, बढ़ो और हमको भी प्रजा, पशु,

ब्रह्मवर्चस तथा अन्नादि प्राप्त करा कर भौतिक रूप से आगे बढ़ाओ तथा आत्मिक उन्नति में भी हमारे सहायक हो। इस प्रकार से जिस मन्त्र द्वारा यज्ञ में आहुति डाली जाती है, उसके द्वारा ईश्वर से सुख, शान्ति, वृद्धि की प्रार्थना की जाती है। इससे ज्ञान की वृद्धि, यश प्रताप की रक्षा, सुख की वृद्धि, रोग, दुःख का नाश, अन्न और रस की प्राप्ति, दीर्घ जीवन, समस्त औषधियों, वनस्पतियों की उत्पत्ति। दुःख, घृणा, क्रोध और ईर्ष्या आदि विकारों में परिवर्तन। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि। सम्पूर्ण जगत् का उपकार। यज्ञ धूम से बादल, बादलों से वर्षा, वर्षा से औषधियाँ और अन्न। अन्न से धातु (शक्ति), धातु से शरीर और स्वास्थ्य शरीर से कर्म का सम्पादन। क्या ऐसा लाभ किसी अन्य कर्म से हो सकता है?

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पंच महायज्ञ बतलाए हैं। पितृ यज्ञ, ब्रह्म यज्ञ, देव यज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ, अतिथि यज्ञ– इनमें ब्रह्म यज्ञ से धर्म, सभ्यता, विद्या, शिक्षा आदि गुणों का विकास होता है। देव यज्ञ से वायु, जल आदि की शुद्धि होकर वर्षा द्वारा संसार को सुख प्राप्त होता है। शुद्ध वायु से सभी प्राणियों को श्वास, शुद्ध खान पान से आरोग्य, बल पराक्रम आदि की वृद्धि होती है।

यज्ञ नामक इस पुस्तक में श्री धर्मपाल कपूर जी द्वारा जो यज्ञ के मन्त्र दिये गये हैं, उनके द्वारा यज्ञ करने से अवश्य ही लाभ होगा। इसमें महत्वपूर्ण वेद मन्त्र शामिल किये गये हैं। निःसन्देह यह पुस्तक लाभप्रद सिद्ध होगी। श्री धर्मपाल कपूर जी का यह श्रम, प्रयास अत्यंत सराहनीय है। ईश्वर से इन्हें दीर्घायु एवं आरोग्यता प्रदान करने की प्रार्थना करता हूँ।

लालचन्द चौहान
से.नि. राज्य विकास अधिकारी,
कोठी नं. 591, सैक्टर 12,
पंचकूला (हरियाणा)
मोबाइल : 9814881501
दूरभाष : 0172-4188079

विशेष सूचना

1. स्वाध्याय, मनन और आत्मसात् ।
2. पाठकगण पुस्तक पढ़ने के पश्चात् किसी भी स्वाध्यायशील मित्र को इसे देने की कृपा करें ।
3. कोई भी जिज्ञासु अपनी इच्छानुसार इसकी प्रतियाँ फोटोस्टेट करवा कर स्वाध्यायशील मित्रों में प्रचार-प्रसार के लिये बाँट सकता है ।
4. पुस्तक केवल प्रचारार्थ लिखी गई है और सदुपयोग ही इसका मूल्य है । इसके अतिरिक्त ओ३म् का ध्यान, यज्ञ का अनुष्ठान, राष्ट्रहित बलिदान और उत्तम सन्तान निर्माण प्रस्तुत पुस्तक का मुख्योद्देश्य है ।
5. सर्वाधिकार लेखकाधीन ।

धर्मपाल कपूर
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मो० : 9356301618

विषयसूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	यज्ञ	1
2.	प्रातःकाल व सायंकाल के मंत्र	4
3.	ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या)	7
4.	ईश्वर-स्तुति-प्रार्थनोपासना	21
5.	स्वस्तिवाचनम्	24
6.	शान्तिकरणम्	34
7.	देवयज्ञ (अग्निहोत्र) हवन	44
8.	विशेष आहुतियाँ	54
9.	पितृयज्ञ	64
10.	बलिवैश्वदेव यज्ञ (भूतयज्ञ)	66
11.	अतिथि यज्ञ (नृयज्ञ)	69
12.	यज्ञफल	69
13.	पंचमहायज्ञ	71
14.	मुख्य विशेष पर्व	72
15.	कुछ विशेष पर्वों पर आहुति देने के मंत्र	74
16.	यज्ञप्रार्थना	76
17.	अग्निहोत्र के लाभ	77
18.	विदेशों में अग्निहोत्र	81
19.	शान्तिपाठ	84
20.	वेदमहिमा (कविता)	85

1. यज्ञ

अग्निहोत्र है 'देवयज्ञ' सर्वोपरि कर्म सर्वहितकारी,
वायु मण्डल होता है शुद्ध, सुख पाते सभी प्राणधारी।
यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म सर्वदा जो प्राणी अपनाता है,
लोक और परलोक सुधारे मन वांछित फल पाता है।

यज्ञ को आध्यात्मिक जीवन में एक महत्त्वपूर्ण अंग माना जाता है। इससे वायु और जल की शुद्धि होती है, मानसिक एवं शारीरिक रोगों से मुक्ति मिलती है। महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा है–

यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म। –शतपथ ब्राह्मण 1-7-1-5

यज्ञ 'यज्' धातु से बनता है। महर्षि पाणिनि ने इसके अर्थ किये हैं–देवपूजा, दान और संगतिकरण। यज्ञ में अग्नि देव है, आज्य (घी) दान है और समिधा संगतिकरण का प्रतीक है। यज्ञ में स्त्री, पुरुष, बच्चे तथा वृद्ध सभी मिलकर बैठते हैं यह समाज का संगतिकरण है। बनारस विश्वविद्यालय के एक शोध के अनुसार अग्नि में घी डालने से 300% ऑक्सीजन उत्पन्न होती है तथा जौ, तिल आदि डालने से हाइड्रोजन उत्पन्न होती है। अर्थात् विज्ञान के H_2O के फार्मूले को यज्ञ के द्वारा सिद्ध किया गया है।

यज्ञ के पीछे अनेकों वैज्ञानिक कारण हैं क्योंकि यज्ञ में सब जड़ी बूटियाँ ही डाली जाती हैं। आम की लकड़ी, देशी घी, तिल, जौ, शहद, कपूर, अगर, तगर, गुग्गुल, लौंग, अक्षत, नारियल, शक्कर और अन्य निर्धारित आहुतियाँ भी वनस्पतियाँ ही होती हैं। आम, आक, पलाश (ढाक), खैर, शमी, अपामार्ग, पीपल, गूलर, वट (बरगद), बिल्व, चन्दन, कुश, दूर्वा सब आयुर्वेद में प्रतिष्ठित औषधियाँ हैं। मंत्रोच्चारण के द्वारा यज्ञ करने पर न केवल ये अधिक शक्तिशाली होती हैं अपितु यज्ञकर्ता/यजमान/रोगी की आंतरिक, बाह्य और मानसिक शुद्धि भी करती हैं। यज्ञ में डाली गई आहुति उच्च तापमान में जलती है जिससे ये वनस्पतियाँ परमाणु रूप होकर श्वास के द्वारा व्यक्तियों के शरीर में प्रवेश करती हैं और उन्हें स्वस्थ बनाती हैं। सभी वनस्पतियों में कुछ तरल पदार्थ होते हैं जिन्हें विज्ञान की भाषा में एल्केलॉइड कहा जाता है। आज वैज्ञानिक इन्हीं एल्केलॉइड्स पर शोध कर विभिन्न पौधों

से कई नई दवाइयाँ बना रहे हैं ।

जब ये वनस्पतियाँ जलती हैं तो ये एल्केलॉइड्स धुएं के साथ उड़ कर हमारे शरीर से चिपक जाते हैं और श्वास से भीतर जाते हैं तथा सीधे प्रभाव करते हैं । यह पद्धति दवाओं की अपेक्षा सस्ती और टिकाऊ भी है । हवन की भस्म से भी अनेकों प्रकार के रोग दूर होते हैं । यज्ञ से कई अन्य गैसें जैसे फारमैल डी हाइड, ऐसी टैल्डी हाइड, पाइरुविक ऐल्डी हाइड, प्रोपियानिक ऐल्डीहाइड, फुरल, मैथिल अल्कोहल, एथिल अल्कोहल, एलिल अल्कोहल, प्रापिल अल्कोहल, एमिल अल्कोहल, फारमिक अम्ल और बैसिलस टाइफोसस आदि उत्पन्न होती हैं । कपूर से सिनेअल उत्पन्न होता है जो कृमिनाशक होता है । इसीलिए भोपाल गैस रिसाव दिनांक 3-12-1984 ई० को केवल दो परिवार सुन्दर लाल कुशवाह एवं एम.एल. राठौर यज्ञ से पूर्ण स्वस्थ बने रहे जबकि इसके विपरीत हज़ारों लोग जहरीली गैस से मर गये थे ।

एक रिपोर्ट के अनुसार फ्रांस के ट्रेले नामक वैज्ञानिक ने हवन पर शोध किया जिसमें उन्हें पता चला कि हवन मुख्यतः आम की लकड़ी द्वारा किया जाता है । जब आम की लकड़ी जलती है तो फॉर्मिक एल्डिहाइड नामक गैस उत्पन्न होती है जो कि खतरनाक बैक्टीरिया और जीवाणुओं को मारती है तथा वातावरण को शुद्ध करती है । इस शोध के बाद ही वैज्ञानिकों को इस गैस का और इसे बनाने का तरीका पता चला । शक्कर के जलने पर भी एल्डिहाइड गैस उत्पन्न होती है ।

टौटीक नामक वैज्ञानिक ने हवन पर की गई अपनी खोज में ये पाया कि यदि आधे घंटे हवन में बैठा जाये अथवा हवन के धुएं से शरीर का सम्पर्क हो तो टाइफाइड जैसे भयानक रोग फैलाने वाले जीवाणु भी मर जाते हैं और शरीर शुद्ध हो जाता है । हवन की महत्ता को देखते हुए राष्ट्रीय वनस्पति अनुसन्धान संस्थान लखनऊ के वैज्ञानिकों ने भी एक अनुसंधान के अन्तर्गत पाया कि हवन सामग्री जलाने से वातावरण में जहाँ शुद्धता आ जाती है वहीं हानिकारक जीवाणु 94% तक नष्ट हो जाते हैं । इस औषधीय धुएं का 30 दिन तक वातावरण पर प्रभाव बना रहता है । इस अवधि में जहरीले कीटाणु नहीं पनपते ।

हवन के द्वारा न केवल मनुष्यों को ही लाभ मिलता है अपितु वनस्पतियों को भी इसका लाभ प्राप्त होता है । फसलों को नुकसान पहुँचाने वाले बैक्टीरिया का भी नाश होता है । इससे फसलों में रासायनिक खाद का प्रयोग भी कम हो जाता है । हवन में चार प्रकार के द्रव्य डाले जाते हैं ।

सुगन्धित – केशर, कस्तूरी, अगर, तगर, चन्दन, इलायची, जायफल, जावित्री, छड़ीला, कपूर, कचरी, बालछड़, पानड़ी आदि ।

पुष्टिकारक – घृत, गुग्गुल, सूखे फल, जौ, तिल, चावल, शहद, नारियल ।

मिष्टान्न – शक्कर, छुहारा, दाख आदि ।

रोगनाशक – गिलोय, हरड़, अजवायन, अश्वगंधा, काली मिर्च, आक, जायफल, सोमवल्ली, ब्राह्मी, तुलसी, अजशृंगी, अगर, तगर, तिल, इन्द जौ, आंवला, मालकांगनी, तेजपत्र, प्रियंगु आदि । अतः यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि यज्ञ एक वैज्ञानिक एवं परोपकारी कार्य है ।

यज्ञ की सामग्री–

1. चावल = सतोगुणी ।
2. जौ = रजोगुणी ।
3. तिल = तमोगुणी ।
4. घी = स्नेह
5. मीठा = श्रद्धा

यज्ञ मुख्यतः निम्नलिखित चार विद्वानों के निर्देश में किया जाता है–

(1) होता – ऋग्वेद में निपुण विद्वान् को होता कहा जाता है ।

(2) अध्वर्यु – यजुर्वेद के ज्ञाता को अध्वर्यु कहा जाता है ।

(3) उद्गाता – यज्ञ की समाप्ति पर सामवेद करके गान करने वाले को उद्गाता कहा जाता है ।

(4) ब्रह्मा – सारे यज्ञ का संचालक और अपने साथी याज्ञिकों से यज्ञ विधियों को संचालित करने वाले को ब्रह्मा कहा जाता है ।

●●●

2. प्रातःकाल के प्रार्थना मंत्र

प्रातःकाल ब्रह्ममुहूर्त (चार बजे) उठकर प्रथम हृदय में परमेश्वर का निम्नलिखित मंत्रों से चिन्तन करें ।

1. ओ३म् प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरिश्वना । प्रातर्भगं पुषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम ।।

वसिष्ठ ऋषि लिंगोक्त देवता ऋ. 7-41-1

हम प्रातःकाल उठकर तेजस्वी, ऐश्वर्यशाली, मित्र के समान हितकारी, वरणीय, शीघ्रता से कर्म करने वाले, ऐश्वर्य सम्पन्न पोषक, ज्ञानी, आनंददायी तथा शत्रुओं को रुलाने वाले प्रभु की उपासना करें ।

2. ओ३म् प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितर्यो विधर्ता । आध्रश्चिद्यं मन्यानस्तुरचद्रजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह ।।

वसिष्ठ ऋषि लिंगोक्त देवता ऋ. 7-41-2

पाँच घड़ी रात्रि रहे जयशील परमात्मा आपकी महिमा को कौन जान सकता है? आपने सूर्य, चन्द्र, तारागण लोकों को बनाया है । इन सबको धारण किया है । उनमें बसने वाले प्राणियों के गुण, कर्म, स्वभाव को आप ही जानते हैं । आपको प्रातः काल की बेला में हम स्मरण करते हैं ।

3. ओ३म् भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः । भग प्रणो जनय गोभिरश्वैर्भग प्रनृभिर्नवन्तः स्याम ।।

वसिष्ठ ऋषि लिंगोक्त देवता ऋ. 7-41-3

हे ईश्वर! आप संसार के उत्पत्तिकर्ता हैं । जिससे आप प्रसन्न हों ऐसी बुद्धि देकर आप हमारी रक्षा करें । समस्त सुखों की जननी उत्तम बुद्धि है, अतः हम आपसे प्रज्ञा, मेधा और उज्ज्वल बुद्धि प्राप्त कराने की प्रार्थना करते हैं ।

4. ओ३म् उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत् प्रतित्व उत मध्ये अहनाम् । उतोदिता मघवन्तसूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम ।।

वसिष्ठ ऋषि लिंगोक्त देवता ऋ. 7-41-4

असंख्य धन आदि के दाता परमेश्वर! आपकी कृपा और अपने पुरुषार्थ से हम ऐश्वर्यवान बने । आपकी कृपा और विद्वानों के उपदेशों से हम अपना लोक और परलोक सुधार कर सुखी रहें ।

5. ओ३म् भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम । तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भगपुर एता भवेह । ।

वसिष्ठ ऋषि लिंगोक्त देवता ऋ. 7-41-5

ऐश्वर्यशाली प्रभु ही हमारे उपास्य हों, उस प्रभु की कृपा से हम भी धनवान् हों । इस प्रभु को ही हमारा जन समाज बुलाता है ।

रात्रि को सोते समय के प्रार्थना मंत्र

1. ओ३म् यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति । दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।

शिवसंकल्प ऋषिः मनो देवताः यजु. 34-1

प्रभो! जागते हुए सदा जो दूर-दूर तक जाता है ।
सोते में भी दिव्य शक्तिमय कोसों दौड़ लगाता है । ।
दूर-दूर वह जाने वाला तेजों का भी तेज निधान ।
नित्य युक्त शुभ संकल्पों से, वह मन मेरा हो भगवान् । ।

जो दिव्यगुणों से युक्त, जागते हुए का, अधिक दूर जाता है और वह सोते हुए का भी उसी प्रकार जाता है । दूर जाने वाला और विषयों के प्रकाशक चक्षुरादि इन्द्रियों का जो प्रकाशक है वह मेरा मन अच्छे संकल्प वाला होवे ।

2. ओ३म् येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः । यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।

शिवसंकल्प ऋषिः मनो देवताः यजु. 34-2

जिसके द्वारा बुद्धिमान् सब नाना करतब करते हैं ।
सत्कर्मों को करें मनीषी, वीर युद्ध में बढ़ते हैं । ।
पूजनीय अतिशय जिसका है, प्रजा वर्ग में अद्‌भुत मान ।
नित्य युक्त शुभ संकल्पों से, वह मन मेरा हो भगवान् । ।

हे प्रभु ! जिस मन से सत्कर्मनिष्ठ मन को दमन करने वाले, बुद्धिमान लोग अग्निहोत्रादि कार्यों में और वैज्ञानिक युद्धादि व्यवहारों में इष्ट कर्मों को करते हैं, और जो अद्‌भुत प्राणिमात्र के भीतर मिला हुआ है, वह मेरा मन श्रेष्ठ संकल्प वाला हो ।

3. ओ३म् यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्नऽऋते किं चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।

शिवसंकल्प ऋषिः मनो देवताः यजु. 34-3

जिसमें धैर्य, शक्ति चिन्तन का तथा ज्ञान रहता भरपूर।
प्राणिमात्र में अमृतमय है और प्रकाश का बहता पूर।।
जिसके बिना नहीं चलता है निश्चय कोई कार्य विधान।
नित्य युक्त शुभ संकल्पों से, वह मन मेरा हो भगवान्।।

हे प्रभो! जो बुद्धि का उत्पादक और स्मृति का साधन है जो धैर्यस्वरूप और मनुष्यों के भीतर नाशरहित प्रकाशस्वरूप है तथा जिसके बिना कोई भी काम नहीं किया जाता, वह मेरा मन शुद्ध संकल्प वाला है।

4. ओ३म् येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।

शिवसंकल्प ऋषिः मनो देवताः यजु. 34-4

अमर तत्त्व जो तीन काल का, भेद यथावत् पाता है।
बुद्धि, ज्ञान की पाँच इन्द्रियाँ, अहंकार से नाता है।।
सात हवन करने वालों का, जिसमें फैला यज्ञ-विधान।
नित्य युक्त शुभ संकल्पों से, वह मन मेरा हो भगवान्।।

हे प्रभु! जिस मन से भूत, वर्तमान भविष्यत् इन सब व्यवहारों को जाना जाता है, जिसमें ज्ञान और क्रिया है और जिसके प्रभाव से पांचों ज्ञानेन्द्रियों द्वारा यज्ञ विस्तृत किया जाता है, वह मेरा मन शुद्ध संकल्प वाला हो।

5. ओ३म् यस्मिन्नृचः साम यजूꣳषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिंश्चितꣳसर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।

शिवसंकल्प ऋषिः मनो देवताः यजु. 34-5

चार वेद निगम आगम सारे, ईश ज्ञान के सुन्दर स्रोत।
रथ के पहिये में ज्यों अरे, वैसे रहते ओत-प्रोत।।
जंगम जग का चित अचल हो, जिसमें रहता निष्ठावान्।
नित्य युक्त शुभ संकल्पों से, वह मन मेरा हो भगवान्।।

हे प्रभु ! जिस शुद्ध मन से ऋग्वेद, सामवेद तथा यजुर्वेद रथ की नाभि में अरों की नाई स्थित हैं और जिसमें प्राणियों का समस्त ज्ञान सूत्र के मणियों में समान सम्बद्ध है, वह मेरा मन वेदादि सत्य शास्त्रों के प्रचार रूप शुद्ध संकल्प वाला हो ।

6. ओ३म् सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिनऽइव । हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।

शिवसंकल्प ऋषिः मनो देवताः यजु. 34-6

मानव-जन को बांध डोर से, इधर-उधर ले जाता है ।
चतुर सारथी ज्यों घोड़ों को, उत्तम चाल चलाता है ।।
हृदय-देश में सदा विराजे जो, अतिगामी अजर महान् ।
नित्य युक्त शुभ संकल्पों से, वह मन मेरा हो भगवान् ।।

अच्छा सारथि जिस प्रकार लगामों से वेगवाले घोड़ों को बलात् ले जाता है, उसी प्रकार जो मन मनुष्यों को इधर-उधर विचार क्षेत्र में ले जाता है, जो हृदय में स्थित और कभी बूढ़ा न होने वाला और अत्यन्त वेगवान् है, वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्प वाला हो ।

●●●

3. ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या)

जिसके द्वारा प्रभु का भली-भाँति ध्यान करते हैं एवं ध्यान किया जाये वह सन्ध्या है । अतः रात और दिन के संयोग समय दोनों सन्ध्याओं में सब व्यक्तियों को प्रभु की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करनी चाहिये ।

पहले बाह्य जलादि से शरीर की शुद्धि एवं राग-द्वेष आदि के त्याग से भीतर की शुद्धि करनी चाहिये क्योंकि मनु जी ने मनुस्मृति के अध्याय 5 श्लोक 109 में यह लिखा है कि शरीर जल से, मन सत्य से, जीवात्मा विद्या और तप से तथा बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है । परन्तु शरीर शुद्धि के अतिरिक्त अन्तःकरण की शुद्धि भी सबको अवश्य करनी चाहिये क्योंकि वही सर्वोत्तम और परमेश्वर प्राप्ति का एक साधन है । (पंचमहायज्ञ विधि)

तब कुशा वा हाथ से मार्जन करें अर्थात् परमेश्वर का ध्यान आदि करने के समय किसी प्रकार का आलस्य न आवे, इसलिये शिर और नेत्र आदि पर जल प्रक्षेप करें। यदि आलस्य न हो तो न करना।

फिर कम से कम तीन प्राणायाम करें अर्थात् भीतर के वायु को बल पूर्वक निकाल कर यथाशक्ति बाहर ही रोक दें परन्तु बलपूर्वक न रोकें। फिर शनैः शनै ग्रहण करके कुछ समय भीतर ही रोक के बाहर निकाल दें और वहाँ भी कुछ रोकें और मन में ओ३म् का जाप करते जाएँ। इस प्रकार कम से कम तीन बार करें।

इसके अनन्तर गायत्री-मन्त्र से शिखा को बांध के रक्षा करे। इसका प्रयोजन यह है कि इधर-उधर केश न गिरें, सो यदि केशादि पतन न हो तो न करें और रक्षा करने का प्रयोजन यह है कि परमेश्वर प्रार्थित होकर सब भले कामों में सदा सब जगह में हमारी रक्षा करें।

गायत्री मंत्र

1. ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।। विश्वामित्र ऋषि सविता देवता यजु. 36-3

तूने हमें उत्पन्न किया, पालन कर रहा है तू।
तुझसे ही पाते प्राण हम, दुःखियों के कष्ट हरता है तू।।
तेरा महान् तेज है, छाया हुआ सभी स्थान।
सृष्टि की वस्तु-वस्तु, तू हो रहा है विद्यमान्।।
तेरा ही धरते ध्यान हम मांगते तेरी दया।
ईश्वर हमारी बुद्धियों को श्रेष्ठ मार्ग पर चला।।

हे प्रभु! आप सर्वरक्षक, प्राणाधार, सुखस्वरूप, दुःखनाशक, सत्-चित्-आनन्द स्वरूप हैं। आप ही सृष्टि के उत्पादक, पालक, संहारक, वेदज्ञानदाता एवं कर्मफलदाता हैं। हम आपके प्रेरणादायक शुद्धस्वरूप वरणीय, परमपिता, दिव्यस्वरूप का हृदय मन्दिर में ध्यान धरते हैं। आप हमारी बुद्धियों को कृपया श्रेष्ठमार्ग की ओर प्रेरित कीजिए।

आचमन-मंत्र

2. ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभि स्रवन्तु नः।। अथर्वण ऋषिः आपो देवताः, यजु. 36-12

ओंकार प्रभु तेरा नाम, गुण गावे संसार तमाम।
तेरी महिमा गावें वेद, तेरे जपे न आवें खेद।।
सत् चित् आनन्द स्वरूप, निराकार निर्भय अनूप।
जग का स्वामी पालनहारा, जगत् प्रकाशक व्यापक सारा।।
आयें हैं शान्ति सुख कामी, पूर्ण आनन्द देओ स्वामी।
वर्षा सुख की करो विशेष, होवें दूर ताप और क्लेश।।

हे समस्त संसार के प्रकाशक और सबको आनन्द देनेवाला सर्वव्यापक ईश्वर! सांसारिक सुख समृद्धि, मनोवांछित आनन्द और पूर्णानन्द की प्राप्ति हेतु हमको कल्याणकारी हो अर्थात् हमारा कल्याण करे। परमेश्वर हम पर सुख की सर्वदा वृष्टि करे।

अंगस्पर्श मंत्र

3. ओ३म् वाक् वाक्। ओ३म् प्राणः प्राणः। ओ३म् चक्षुः चक्षुः। ओ३म् श्रोत्रम् श्रोत्रम्। ओ३म् नाभिः। ओ३म् हृदयम्। ओ३म् कण्ठः। ओ३म् शिरः। ओ३म् बाहुभ्यां यशो बलम्। ओ३म् करतल करपृष्ठे।।

दीन दयाल दया के सागर, दीजिये हमको बुद्धि उजागर।
ज्ञान-कर्म दस इन्द्रिय मेरे, कभी न आवें पाप के नेरे।।
प्यारी मीठी बोलें वाणी, प्राण पवित्र करो हे स्वामी।
दो आँखें दो कान पिताजी, देखें सुनें पवित्र कथा ही।।
नाभि, हृदय, सुकण्ठ, भुजायें, हाथों से न पाप कमायें।
यश, बल, जितना मिले प्रभुजी, शुभ कर्मों में लगे सदा ही।।

हे सर्वशक्तिमान, सर्वरक्षक परमेश्वर! आपकी कृपा से मेरी समस्त इन्द्रियाँ अर्थात् मेरी वाणी, नासिका, चक्षु, कान, नाभि, हृदय, कण्ठ, शिर दोनों भुजाओं में यश और बल हो तथा मेरे करतल और करपृष्ठ आदि भी धर्मयुक्त कार्यों में संलग्न, यशस्वी और बलवान् हों अर्थात् समस्त इन्द्रियाँ जीवन पर्यन्त मेरा साथ देती रहें, इनमें कार्य करने की शक्ति आपकी कृपा से बनी रहे।

मार्जन मंत्र

4. ओ३म् भूः पुनातु शिरसि। ओ३म् भुवः पुनातु नेत्रयोः। ओ३म् स्वः पुनातु कण्ठे। ओ३म् महः पुनातु हृदये। ओ३म् जनः पुनातु नाभ्याम्। ओ३म् तपः पुनातु पादयोः। ओ३म् सत्यं पुनातु पुनः शिरसि। ओ३म् खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र।। तैत्ति. 10-17

प्राणों से हे प्यारे भगवन् सिर को पावन कर दो निशदिन।
दुःख विनाशक दीन दयाला, आँखों में रहे ज्ञान उजाला।।
सर्वव्यापक सुखों के दाता, कण्ठ सुपावन करो विधाता।
महा प्रभु तुम ईश प्यारे, हृदय पवित्र करो हमारे।।
करो पालना जगत् बनाकर, पवित्र मेरी नाभि दो कर।
न्यायाधीश ज्ञान भण्डारा, मार्ग रहे पवित्र हमारा।।
सत्यस्वरूप अविनाशी ईश्वर, करो सिर मेरा पुनः पवित्र।
व्यापक हो तुम ही सर्वत्र, मेरा अंग-अंग करो पवित्र।।

समस्त जगत् के जीवन, प्राण से भी प्रिय परमात्मन् मेरे शिर को पवित्र करें। दुःख विनाशक प्रभो! मेरे नेत्रों को पवित्र करें। सर्वदा आनन्दमय तथा सबको आनन्द देने वाले सुखस्वरूप ईश्वर! मेरे कण्ठ को पवित्र करें। सबसे महान्, सबके पूजनीय परमात्मा मेरा हृदय पवित्र करें। सबको उत्पन्न करने वाले जगदीश! मेरी नाभि को पवित्र करें। दुष्टों को सदा सन्तापकारक, सत्य-ज्ञानस्वरूप परमेश्वर! मेरे दोनों पैरों को पवित्र करें। सत्यस्वरूप अविनाशी भगवन्! मेरे शिर को पुनः पुनः पवित्र करें। सर्वव्यापक प्रभो! आप मेरे सभी अंगों को पवित्र करने की कृपा करें। यह पवित्रता आजीवन बनी रहे।

प्राणायाम-मंत्र

5. ओ३म् भूः। ओ३म् भुवः। ओ३म् स्वः। ओ३म् महः। ओ३म् जनः। ओ३म् तपः। ओ३म् सत्यम्।। तैत्ति. 10-27

प्राण स्वरूप प्राणों से प्यारे, दूर दुःखों को करने हारे।
सर्वव्यापक आनन्ददाता, सबसे बड़े जगत पितुमाता।।
दुष्टों को दण्ड देने हारे, सब की ही सुध लेने हारे।
सत्यस्वरूप दया-सागर हो, अविनाशी तुम अजर अमर हो।।

हे सर्वरक्षक परमदेव परमात्मन्! आप प्राणों से भी प्रिय हैं, सर्वदुःख विनाशक और सुख प्रदाता हैं। आप सर्वव्यापक, सबको धारण कर नियम से रखने वाले हैं, आप सबसे महान् और पूजनीय हैं, आप सकल जगत् को उत्पन्न करने वाले, दुष्टों को दण्ड देने वाले, सदा एकरस, अखण्ड, अविनाशी और अपरिवर्तनशील हैं। हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर! ऐसी कृपा करो कि हम आपके गुणों को धारण करते हुए, अपना जीवन महान् बना सकें।

6. ओ३म् ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत । ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ।। मधुच्छंदा ऋषिः भाववृत्तम देवताः ऋ. 10-190-1

अपनी सत्ता से परमेश्वर, प्रकृति से सब जगत् बनाकर ।
ज्ञान दिया जगगुरु कहलाया, वेदों का प्रकाश फैलाया ।।
जीव वृक्ष पृथिवी के अन्दर, सागर नदियाँ रचे समुन्द्र ।
जिस सत्ता से जग उपजावे, उसी से जग में प्रलय करावे ।।

प्रकाशस्वरूप ईश्वर ने अपने अनन्त ज्ञानमय सामर्थ्य से सब विद्या का खज़ाना वेद-शास्त्र को प्रकाशित किया, जैसा कि पूर्व सृष्टि में प्रकाशित किया था और आगे के कल्पों में भी इस प्रकार से वेदों का प्रकाश करेगा । उसी ईश्वर से त्रिगुणात्मक प्रकृति पूर्व कल्प के समान उत्पन्न हुई । उसी परमात्मा के सामर्थ्य से प्रलय उत्पन्न हुई और तदनन्तर उसी के सामर्थ्य से पृथिवी और मेघ मण्डल में जो महा समुद्र है, सो भी पूर्व सृष्टि के सदृश ही उत्पन्न हुआ है ।

7. ओ३म् समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत । अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ।। मधुच्छंदा ऋषिः भाववृत्तम देवताः ऋ. 10-190-2

जगत् को वश में रखने वाले, परमेश्वर के खेल निराले ।
रात बनाई दिवस बनाया, काल को हिस्से कर दिखलाया ।।

सारे ब्रह्माण्ड को सहज ही वश में रखने वाले सब जगत् का धारण और पोषण करने वाले उसी ईश्वर ने सहजस्वभाव से जगत् के रात्रि, दिवस, घटिका, पल, क्षण आदि को पूर्व की भांति रचा । उसी परमेश्वर ने समुद्र की उत्पत्ति के पश्चात् संवत्सर अर्थात् क्षण, मुहूर्त, प्रहर, आदि-काल भी पूर्व सृष्टि के समान बनाए हैं ।

8. ओ३म् सूर्य्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् । दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ।। मधुच्छंदा ऋषिः भाववृत्तम देवताः ऋ. 10-190-3

चन्द्र सूर्य भूमण्डल तारे, लोक लोकान्तर रच के सारे ।
नियम रखे इसमें भी ऐसे, थे पहले कल्पों में जैसे ।।

सब जगत् का धारण और पोषण करने वाला और सबको वश में करने वाला परमेश्वर जैसा कि उसके सर्वज्ञ विज्ञान में जगत् के रचने का ज्ञान था और जिस प्रकार पूर्वकल्प की सृष्टि में जगत् की रचना की थी और जैसे जीवों के पुण्य पाप थे, उनके अनुसार ईश्वर ने मनुष्यादि प्राणियों के देह बनाये हैं। जैसे पूर्वकल्प में सूर्य-चन्द्रलोक रचे थे, वैसा ही इस कल्प में भी रचे हैं। जैसा पूर्व सृष्टि में सूर्यादि लोकों का प्रकाश रचा था, वैसा ही इस कल्प में भी रच गया है तथा पृथिवी और सूर्यलोक के बीच में पोलापन है, जितने आकाश के बीच में लोक हैं उनको ईश्वर ने रचा है। जैसे अनादिकाल से लोक-लोकान्तर को जगदीश्वर बनाया करता है वैसे अब भी बनाये हैं और आगे भी बनाएगा।

वेद से लेके पृथिवी पर्यन्त जो यह जगत् है, सो सब ईश्वर के नित्य सामर्थ्य से ही प्रकाशित हुआ है। ईश्वर सबको उत्पन्न करके सबमें व्यापक होके अन्तर्यामी रूप से सबके पाप-पुण्यों को देखता हुआ पक्षपात छोड़ के सत्य-न्याय से सबको यथावत् फल दे रहा है।

आचमन मंत्र

9. ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभि स्रवन्तु नः।। अथर्वण ऋषिः आपो देवताः, यजु. 36-12

ओंकार प्रभु तेरा नाम, गुण गावे संसार तमाम।
तेरी महिमा गावें वेद, तेरे जपे न आवें खेद।।
सत् चित् आनन्द स्वरूप, निराकार निर्भय अनूप।
जग का स्वामी पालनहारा, जगत् प्रकाशक व्यापक सारा।।
आये हैं शान्ति सुख कामी, पूर्ण आनन्द देओ स्वामी।
वर्षा सुख की करो हमेश, होवें दूर ताप और क्लेश।।

सबका प्रकाशक और सबको आनन्द देनेवाला सर्वव्यापक ईश्वर मनोवांछित आनन्द के लिये और पूर्णानन्द की प्राप्ति हेतु हमको कल्याणकारी हो अर्थात् हमारा कल्याण करे। वही परमेश्वर सब पर सुख की सर्वदा वृष्टि करे।

10. ओ३म् प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।

अथर्वा ऋषिः अग्नि देवताः अथर्व. 3-27-1

हे ज्ञानमय प्रकाशक, बन्धन विहीन प्यारा।
पूरब में रम रहा तू, रक्षक पिता हमारा।।
रवि रश्मियों से जीवन, पोषण विकास पाता।
अज्ञान के अन्धेरे में, है तू प्रभा दिखाता।।
हम बार-बार भगवन् करते तुम्हें नमस्ते।
जो द्वेष हों परस्पर, वह तेरे न्याय हस्ते।।

जो प्राची दिक् अर्थात् जिस ओर अपना मुख हो उस ओर अग्नि जो ज्ञानस्वरूप अधिपति जो सब जगत् का स्वामी बन्धन रहित प्रकाशस्वरूप परमेश्वर सब प्रकार से रक्षा करने वाला, जिसके बाण आदित्य की किरणें हैं अर्थात् रक्षा के साधन हैं। उन सब गुणों के अधिपति ईश्वर के गुणों को हम लोग बारम्बार नमस्कार करते हैं। जो ईश्वर के गुण और ईश्वर के रचे पदार्थ जगत् की रक्षा करने वाले हैं और पापियों को बाणों के समान पीड़ा देने वाले हैं, उनको हमारा नमस्कार हो। इसलिये कि जो प्राणी अज्ञान से हमारा द्वेष करता है और जिस अज्ञान से धार्मिक पुरुष का तथा पापी पुरुष का हम द्वेष करते हैं, उन सबकी बुराई को उन बाणरूप किरण मुखरूप के बीच दग्ध कर देते हैं कि जिससे किसी से हम लोग वैर न करें और कोई भी प्राणी हमसे वैर न करे किन्तु हम सब लोग परस्पर मित्रभाव से वर्तें।

11. ओ३म् दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।

अथर्वा ऋषिः इन्द्र देवताः अथर्व. 3-27-2

तू इन्द्र रूप भगवन्, दक्षिण में भी दिखाता।
है जड़ जीव जन्तु से, तू ही हमें बचाता।।

वैदिक सुधा पिलाता, तू ज्ञानियों के द्वारा।
तुझसे लगन लगी है, सर्वस्व तू हमारा।।
हम बार-बार भगवन् करते तुम्हें नमस्ते।
जो द्वेष हों परस्पर, वह तेरे न्याय हस्ते।।

जो हमारे दाहिनी ओर दक्षिण दिशा है उसका अधिपति इन्द्र अर्थात् जो पूर्ण ऐश्वर्य वाला है। जो जीव कीट, पतंग, वृश्चिक आदि तिर्य्यक कहाते हैं उनकी जो पंक्ति है, उनसे रक्षा करने वाला एक परमेश्वर है जिसकी सृष्टि में ज्ञानी लोग बाण के समान हैं। उन सब गुणों के अधिपति ईश्वर के गुणों को हम लोग बारम्बार नमस्कार करते हैं। जो ईश्वर के गुण और ईश्वर के रचे पदार्थ जगत् की रक्षा करने वाले हैं और पापियों को बाणों के समान पीड़ा देने वाले हैं, उनको हमारा नमस्कार है। इसलिये कि जो प्राणी अज्ञान से हमारा द्वेष करता है और जिस अज्ञान से धार्मिक पुरुष तथा पापी पुरुष का द्वेष करते हैं, उन सबकी बुराई को उन बाणरूप किरण मुखरूप के बीच में दग्ध कर देते हैं कि जिससे किसी से हम लोग वैर न करें ओर कोई भी प्राणी हमसे वैर न करे किन्तु हम सब लोग परस्परमित्र भाव से वर्तें।

12. ओ३म् प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।

अथर्वा ऋषिः वरुण देवताः अथर्व. 3-27-3

पश्चिम में वास तेरा, तू ही वरुण कहाता।
विषधारियों के भय से, हमको सदा बचाता।।
सब प्राणियों का पोषण, करता है अन्न द्वारा।
दुःख में तू ही है साथी, सुख में तू ही सहारा।।
हम बार-बार भगवन्! करते तुम्हें नमस्ते।
जो द्वेष हों परस्पर, वह तेरे न्याय हस्ते।।

जो पश्चिम दिशा अर्थात् अपने पृष्ठ भाग में है उसमें वरुण जो सबसे उत्तम सब का राजा परमेश्वर है, जो बड़े-बड़े अजगर, सर्पादि विषधारी प्राणियों से रक्षा करने वाला है। जिसके अन्न अर्थात् पृथिव्यादि पदार्थ बाणों

के समान हैं, जो श्रेष्ठों की रक्षा और दुष्टों की ताड़ना के निमित्त है । उन सब गुणों के अधिपति ईश्वर के गुणों को हम लोग बारम्बार नमस्कार करते हैं । जो ईश्वर के गुण और ईश्वर के रचे पदार्थ जगत् की रक्षा करने वाले हैं और पापियों को बाणों के सामन पीड़ा देने वाले हैं उनको हमारा नमस्कार हो इसलिए जो प्राणी अज्ञान से हमारा द्वेष करते हैं उन सबकी बुराई को उन बाण रूप किरण मुखरूप के बीच में दग्ध करते हैं कि जिससे किसी से हम लोग वैर न करें और कोई भी प्राणी हमसे वैर न करें किन्तु हम सब लोग परस्पर मित्र भाव से वर्तें ।

13. ओ३म् उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।

अथर्वा ऋषिः सोम देवताः अथर्व. 3-27-4

हे सोम रूप स्वामी! उत्तर दिशा निहारा ।
तेरी उपासना है, भव-सिन्धु में सहारा ।।
विद्युत बना के तूने, भूलोक जगमगाया ।
जीवों में उसकी सत्ता, संचार कर सजाया ।।
हम बार-बार भगवन्! करते तुम्हें नमस्ते ।
जो द्वेष हों परस्पर, वह तेरे न्याय हस्ते ।।

जो अपनी बाईं ओर उत्तर दिशा है, उसमें सोम नाम से अर्थात् शान्त्यादि गुणों से आनन्द करने वाला जगदीश्वर सब जगत् का राजा है, जिसका ध्यान करना चाहिये । जो अच्छी प्रकार अजन्मा और रक्षा करने वाला है । जिसके बाण विद्युत हैं । उन सब गुणों के अधिपति ईश्वर के गुणों को हम लोग बारम्बार नमस्कार करते हैं । जो ईश्वर के गुण और ईश्वर के रचे पदार्थ जगत् की रक्षा करने वाले हैं और पापियों को बाणों के समान पीड़ा देने वाले हैं, उनको हमारा नमस्कार हो इसलिए कि जो प्राणी अज्ञान से हमारा द्वेष करता है और जिस अज्ञान से धार्मिक पुरुषों का तथा पापी पुरुष का द्वेष करते हैं उन सबकी बुराई को उन बाणरूप मुखरूप के बीच में दग्ध करते हैं कि जिससे किसी से हम लोग वैर न करें और कोई भी प्राणी हम से वैर न करें किन्तु हम सब लोग परस्पर मित्र भाव से वर्तें ।

14. ओ३म् ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माष्ग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।

अथर्वा ऋषिः विष्णु देवताः अथर्व. 3-27-5

हे विष्णु सर्वव्यापी! नीचे निवास करते।
फल-फूल पेड़ पल्लव, सब में तुम्हीं विचरते।।
रक्षण तू कर रहा है सन्तानवत् हमारा।
सुख-दुःख सभी समय में साथी सम हमारा।।
हम बार-बार भगवन्! करते तुम्हें नमस्ते।
जो द्वेष हों परस्पर, वह तेरे न्याय हस्ते।।

जो अपने नीचे की ओर है, उसमें विष्णु अर्थात् व्यापक नाम से परमात्मा सब जगत् का स्वामी है उसका ध्यान करना चाहिये। जिसके हरित रंगवाले वृक्षादि ग्रीवा के समान हैं। जिसके बाण के समान सब वृक्ष हैं। उनसे अधोदिशा में हमारी रक्षा करे। उन सब गुणों के अधिपति ईश्वर के गुणों का हम लोग बारम्बार नमस्कार करते हैं। जो ईश्वर के गुण और ईश्वर के रचे पदार्थ जगत् की रक्षा करने वाले हैं और पापियों को बाणों के समान पीड़ा देने वाले हैं, उनको हमारा नमस्कार हो। इसलिये कि जो प्राणी अज्ञान से हमारा द्वेष करता है और जिस अज्ञान से हम धार्मिक पुरुष का तथा पापी पुरुष का लोग द्वेष करते हैं, उन सबकी बुराई को उन बाण रूप किरण मुखरूप के बीच में दग्ध करते हैं जिससे कि हम लोग किसी से वैर न करें और कोई भी प्राणी हमसे वैर न करे किन्तु हम सब लोग परस्पर मित्र भाव से वर्तें।

15. ओ३म् ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।

अथर्वा ऋषिः बृहस्पतिः देवताः अथर्व. 3-27-6

अन्तर दृगों से भगवन्! ऊपर भी दृष्टि आते।
सुन्दर सुवृष्टि होती, सब सृष्टि को चलाते।।
भौतिक विभूतियां हैं, तेरी प्रकट निशानी।
कैसे कहेगी वाणी, ऐसी है अकथ कहानी।।

हम बार-बार भगवन् करते तुम्हें नमस्ते।
जो द्वेष हो परस्पर, वह तेरे न्याय हस्ते।।

जो ऊपर की दिशा है उसमें बृहस्पति जो कि वाणी का स्वामी परमेश्वर है, उसको हम अपना रक्षक जानें। जिसके बाण के समान वर्षा के बिन्दु हैं उनसे हमारी रक्षा करें। उन सब गुणों के अधिपति ईश्वर के गुणों का हम लोग बारम्बार नमस्कार करते हैं। जो ईश्वर के गुण और ईश्वर के रचे पदार्थ जगत् की रक्षा करने वाले हैं और पापियों को बाणों के समान पीड़ा देने वाले हैं, उनको हमारा नमस्कार हो। इसलिए कि जो प्राणी अज्ञान से हमारा द्वेष करता है और जिस अज्ञान से हम धार्मिक पुरुष का तथा पापी पुरुष का लोग द्वेष करते हैं, उन सबकी बुराई को उन बाण रूप किरण मुख रूप के बीच में दग्ध करते हैं जिससे कि हम लोग किसी से वैर न करें और कोई भी प्राणी हम से वैर न करे किन्तु हम सब लोग परस्पर मित्रभाव से चलें।

उपस्थान मंत्र

16. ओ३म् उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्य्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।। आदित्य ऋषिः सूर्य्यो देवताः यजु. 35-14

रवि रश्मि के रचैया! पावन प्रभा दिखा दो।
अज्ञान का अन्धेरा, भूलोक से मिटा दो।।
देवों के देव! दिन-दिन, हो कृपा-दृष्टि प्यारी।
श्रुतिगान को न भूले, रसना कभी हमारी।।

हे परमेश्वर! सब अज्ञान अन्धकार से पृथक् प्रकाशस्वरूप प्रलय के पीछे सदा वर्तमान, देवों में भी देव अर्थात् प्रकाश करने वालों में प्रकाशक, आनन्दस्वरूप, चराचर के आत्मा ज्ञानस्वरूप और सबसे उत्तम आपको जानके हम लोग सत्य से प्राप्त हुए हैं। हमारी रक्षा करनी आपके हाथ है क्योंक हम लोग आपकी शरण हैं।

17. ओ३म् उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्य्यम्।। कण्व ऋषिः सूर्य्यो देवताः यजु. 33-31

वेद ज्ञान के दाता प्रभु ही, ज्ञान रश्मि छिटकाते हैं।
वेद श्रुति के द्वारा उसके ऋषि मुनि भी गुण गाते हैं।।

विश्व ज्ञान के हेतु महा प्रभु हम तुमको अपनाते हैं।
सूर्य रूप तुम आत्म प्रकाशक इसीलिए हम ध्याते हैं।।

जिससे ऋग्वेदादि चार वेद प्रसिद्ध हुए हैं और जो प्रकृत्यादि सब भूतों में व्याप्त हो रहा है, जो सब जगत् का उत्पादक है, सो परमेश्वर जातवेद नाम से प्रसिद्ध है। जो सब देवों का देव और सब जीवादि जगत् का प्रकाशक है, उस परमात्मा के विश्व-विद्या की प्राप्ति के लिये हम लोग उपासना करते हैं। वेद की श्रुति और जगत् के पृथक्-पृथक् रचनादि नियामक गुण उस परमेश्वर का ज्ञान कराते और प्राप्त कराते हैं। उस विश्व की आत्मा अन्तर्यामी प्रभु की हम सदा उपासना किया करें। अन्य किसी की भी नहीं।

18. ओ३म् चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा।।

कुत्स ऋषिः सूर्य्यो देवताः यजु. 7-42

अद्भुत स्वरूप तेरा, तेरी अनूप करनी।
है आप में अवस्थित, द्यौ अन्तरिक्ष अवनी।।
तेरी कृपा से प्रभुवर! सच्चा प्रकाश पाया।
श्रद्धा की अञ्जली ले, तेरे समीप आया।।

प्राणी और जड़ जगत् का जो आत्मा है उसको सूर्य कहते हैं। जो सूर्य और अन्य लोकों को बनाके धारण और रक्षण करने वाला है, जो मित्र अर्थात् राग-द्वेषरहित मनुष्य, सूर्य लोक और प्राण का चक्षु अर्थात् प्रकाश करने वाला है, सब उत्तम कामों में जो वर्तमान मनुष्य, प्राण, अपान और अग्नि का प्रकाश करने वाला है, जो अद्भुतस्वरूप विद्वानों के हृदय में सदा प्रकाशित रहता है, जो सकल मनुष्यों के सब दुःख नाश करने के लिए परम उत्तम बल है, वह परमेश्वर हमारे हृदयों में यथावत् प्रकाशित रहे।

19. ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतंँ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।। अथर्वण ऋषिः सूर्य्यो देवताः यजु. 36-24

हो आँखों की आँख पिता जी, देवों के महादेव अनादि।
महिमा देखें सौ वर्ष तक, सुनें कीर्तन सौ वर्ष तक।।

सुख से जीवें सौ वर्ष तक, ध्यावें ईश्वर सौ वर्ष तक।
प्रेम लीन हों सौ वर्ष तक, स्वाधीन होवें सौ वर्ष तक।
सौ वर्ष से ज्यादा जीवें, ओम् नाम रस अमृत पीवें।।

जो ब्रह्म सबका द्रष्टा, धार्मिक विद्वानों एवं अपने भक्तों का परम हितकारक है तथा सृष्टि के पूर्व, पश्चात् और मध्य में सत्यस्वरूप से वर्तमान रहता और सब जगत् का कर्ता, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है। उसी ब्रह्म को हम लोग सौ वर्ष पर्यन्त निरन्तर देखें और उसी की कृपा से सौ वर्ष तक प्राणों को धारण करें उसी की स्तुति प्रार्थना के लिए जीवें, उसी परमदेव के गुणों में पूर्ण श्रद्धा तथा विश्वास वाले होकर हम उसके गुणों को सौ वर्ष पर्यन्त देव के गुणों में पूर्ण श्रद्धा तथा विश्वास वाले होकर हम उसके गुणों को सौ वर्ष पर्यन्त सुनें तथा उसी ब्रह्म व उसके गुणों तथा वेद-ज्ञान का अन्यों को नित्य उपदेश करें और उसकी कृपा से उसी परमेश्वर की आज्ञा पालन और कृपा से सौ वर्षों के उपरान्त भी हम लोग देखें, जीवें सुनें, सुनावें और स्वतन्त्र रहें।

गायत्री मन्त्र

20. ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।। विश्वामित्र ऋषि सविता देवता यजु. 36-3

तूने हमें उत्पन्न किया, पालन कर रहा है तू।
तुझसे ही पाते प्राण हम, दुःखियों के कष्ट हरता है तू।।
तेरा महान् तेज है, छाया हुआ सभी स्थान।
सृष्टि की वस्तु-वस्तु में, तू हो रहा है विद्यमान्।।
तेरा ही धरते ध्यान हम मांगते तेरी दया।
ईश्वर हमारी बुद्धियों को श्रेष्ठ मार्ग पर चला।।

हे प्रभु! आप सर्वरक्षक, प्राणाधार, सुखस्वरूप, दुःखनाशक, सत्-चित्-आनन्द स्वरूप हैं। आप ही सृष्टि के उत्पादक, पालक, संहारक, वेदज्ञानदाता एवं कर्मफलदाता हैं। हम आपके प्रेरणादायक शुद्धस्वरूप वरणीय, परमपिता, दिव्यस्वरूप का हृदय मन्दिर में ध्यान धरते हैं। आप हमारी बुद्धियों को कृपया हमें श्रेष्ठ मार्ग की ओर प्रेरित कीजिए।

समर्पणम्

21. हे ईश्वर दयानिधे ! भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादि कर्मणा, धर्मार्थकाम मोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः ।

दयानिधे ! हे ईश्वर प्यारे ! जितने हैं शुभ कर्म हमारे ।
हों अर्पण वे कर्म तमामी, तेरे शुभ चरणों में स्वामी ।।
होवे प्राप्त भक्ति तेरी, सत्य धर्म में प्रीत घनेरी ।
धर्म, अर्थ और काम हमारे मोक्ष आदि पदार्थ चारे ।।
इनकी सिद्धि प्राप्त होवे, जन्म मरण के कष्ट को खोवे ।।

हे ईश्वर दयानिधे ! आपकी कृपा से जो-जो उत्तम काम हम लोग करते हैं, वे सब आपके अर्पण है जिससे हम लोग आपको प्राप्त होके, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पदार्थों की सिद्धि हमको प्राप्त होवे ।

नमस्कार मंत्र

22. ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च । मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ।।

परमेष्ठी ऋषिः रुद्राः देवताः यजु. 16-41

नमस्कार कल्याण स्वरूपम्, नमस्कार हो प्रभु अनुपम् ।
नमस्कार सुखों के दाता, नमस्कार हो ईश विधाता ।।
नमस्कार हो शान्ति भण्डारा, नमस्कार सौ सौ बार हमारा ।।

जो सुखस्वरूप, संसार के उत्तम सुखों का देने वाला, कल्याण का कर्ता, मोक्षस्वरूप धर्मयुक्त कामों को ही करने वाला, अपने भक्तों को सुख का देने वाला और धर्म-कामों में युक्त करने वाला, अत्यन्त मंगलस्वरूप और धार्मिक मनुष्यों को मोक्ष सुख देने हारा है, उसको हमारा बारम्बार नमस्कार हो ।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

विशेष सूचना – वस्तुतः ब्रह्मयज्ञ के अन्तर्गत दो चीजें आती हैं एक संध्या और दूसरा स्वाध्याय । संध्या साधक को घर पर ही अकेले में करना चाहिये । यदि यह सामूहिक रूप से आर्य समाज में की जाती है तो यह केवल वेदपाठ ही बन कर रह जाता है । एक व्यक्ति संस्कृत में संध्या के मंत्र बोलता है और अधिकांश श्रोताओं को समझ नहीं आता है । इसके अतिरिक्त यदि व्यक्ति स्वाध्याय नहीं करता तो ब्रह्मयज्ञ अधूरा माना जायेगा । अतः संध्या और स्वाध्याय पूर्णतः व्यक्तिगत विषय हैं ।

●●●

4. ईश्वर-स्तुति-प्रार्थनोपासना मंत्र

1. ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद् भद्रं तन्नऽ आसुव।। नारायण ऋषिः सविता देवताः यजु. 30-3

बुराई को त्यागे भलाई करें हम।
तुम्हारे ही गीतों को गाते रहे हम।।
वेदों के ज्ञान सागर को पाकर सदा ही।
गोते उसी में लगाते रहे हम।।
दुरितों को त्यागे सदा दूर रहें हम।
भावों को अच्छे जगाते रहें हम।।
मेरा ज्ञान क्या है तरा ही दिया है।
सभी को हमेशा सुनाते रहें हम।।
समर्पित तुम्हीं को तुम्हारा ही वैभव।
हृदय से तुम्हीं को बुलाते रहे हम।।

हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त, शुद्धस्वरूप, सब सुखों के दाता प्रभु! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन तथा दुःख को दूर कीजिए और जो कल्याणकारी पदार्थ हैं, वह सब हमको प्राप्त कराइए।

2. ओ३म् हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

हिरण्यगर्भ ऋषिः प्रजापति देवताः यजु. 13-4

तू ही स्वयंप्रकाश सुचेतन, सुखस्वरूप शुभ त्राता है।
सूर्य चन्द्रलोकादिक को तू ही रचता और टिकाता है।।
पहले था अब भी तू है, घट-घट में व्यापक स्वामी।
योग भक्ति तप द्वारा तुझको, पाएं हम अन्तर्यामी।।

जो स्वप्रकाशस्वरूप है और जिसने प्रकाश करने वाले सूर्य-चन्द्रादि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किये हैं, जो उत्पन्न हुए जगत् का प्रसिद्ध स्वामी एक ही चेतनस्वरूप है तथा जो सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व विद्यमान था, वह इस भूमि और सूर्यादि को धारण कर रहा है। हम लोग उस सुखस्वरूप

शुद्ध परमात्मा के लिए ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अति प्रेम से विशेष भक्ति किया करें ।

3. ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः । यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

प्रजापति ऋषिः परमात्मा देवताः यजु. 25-13

तू ही आत्मज्ञान बलदाता! सुयश विज्ञ-जन गाते हैं ।
तेरी चरण-शरण में आकर, भव सागर तर जाते हैं ।।
तुझको ही जपना जीवन है, मरण तुझे बिसराने में ।
मेरी सारी शक्ति लगे, प्रभु तुझसे लगन लगाने में ।।

जो आत्मज्ञान का दाता, शरीर, आत्मा और समाज के बल का देने वाला है, जिसकी सब विद्वान् लोग उपासना करते हैं और जिसके प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन, न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं, जिसका आश्रय ही मोक्षसुखदायक है, तथा जिसका न मानना अर्थात् भक्ति न करना ही मृत्यु आदि दुःख का हेतु है । हम लोग उस सुखस्वरूप सकल ज्ञान के देने वाले परमात्मा की प्राप्ति के लिए आत्मा और अन्तःकरण से भक्ति विशेष करें ।

4. ओ३म् यः प्राणतो निमिषतो महित्वैकऽइद्राजा जगतो बभूव । य ईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

प्रजापति ऋषिः परमात्मा देवताः यजु. 23-3

तूने अपनी अनुपम माया से, जगज्योति जगाई है ।
मनुज और पशुओं को रचकर, निज महिमा प्रकटाई है ।।
अपने हिय-सिंहासन पर, श्रद्धा से तुझे बिठाते हैं ।
भक्ति-भाव से भेंटें लेकर, तव चरणों में आते हैं ।।

जो प्राण वाले और अप्राणिरूप जगत् का अपना अनन्त महिमा से एक ही विराजमान राजा है, जो इस मनुष्यादि गौ आदि प्राणियों के शरीर की रचना करता है, हम लोग उस सुखस्वरूप, सकल ऐश्वर्य के देने वाले परमात्मा के लिए अपनी सकल उत्तम सामग्री से भक्ति करें ।

5. ओ३म् येन द्यौरुग्राः पृथिवी च दृढा येन स्व स्तभितं येन नाकः । योऽअन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

ब्रह्म ऋषिः परमात्मा देवताः यजु. 32-6

तारे रवि चन्द्रादिक रचकर, निज प्रकाश चमकाया है।
धरणी को धारण कर तूने, कौशल अलख जगाया है।।
तू ही विश्वविधाता पोषक! तेरा ही हम ध्यान करें।
शुद्ध भाव से भगवन् तेरे, भजनामृत का पान करें।।

जिस परमात्मा ने तीक्ष्ण स्वभाव वाले सूर्य और पृथ्वी को धारण किया है, जिस प्रभु ने सुख को धारण किया है, जिस ईश्वर ने दुःखरहित मोक्ष को धारण किया है, जो आकाश में सब लोकलोकान्तरों को विशेष मानयुक्त अर्थात् जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं वैसे सब लोकों का निर्माण करता और भ्रमण कराता है, हम लोग उस सुखदायक एवं कामना करने योग्य प्रभु प्राप्ति के लिए सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करें।

6. ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।।

हिरण्यगर्भ ऋषिः प्रजापति देवताः ऋ. 10-121-10

तुझसे बड़ा न कोई जग में, सबमें तू ही समाया है।
जड़-चेतन सब तेरी रचना, तुझमें आश्रय पाया है।।
हे सर्वोपरि विभो ! विश्व का तूने साज सजाया है।
धन दौलत भरपूर दीजिए, यही भक्त को भाया है।।

हे सब प्रजा के स्वामी प्रभु! आपसे भिन्न दूसरा कोई इन सब उत्पन्न हुए जड़ चेतनादिकों का तिरस्कार नहीं करता अर्थात् आप सर्वोपरि हैं। जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले हम लोग आपका आश्रय लेवें और वांछा करें, वे सब हमारी कामनाएं सिद्ध हों। जिससे हम धनैश्वर्यों के स्वामी होवें।

7. ओ३म् स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामान्नध्यैरयन्त।।

ब्रह्म ऋषिः परमात्मा देवताः यजु. 32-10

तू गुरु है प्रजेश भी तू है, पाप-पुण्य फल दाता है।
तू ही सखा मम बन्धु तू ही, तुझसे ही सब नाता है।।
भक्तों को इस भव-बन्धन से, तू ही मुक्त कराता है।
तू है अज, अद्वैत महाप्रभु, सर्वकाल का ज्ञाता है।।

हे मनुष्यो ! वह परमात्मा हमारा सहायक, सकल जगत् का उत्पादक, सब कार्यों को पूर्ण करने वाला, सम्पूर्ण लोकमात्र और नाम, स्थान जन्मों को जानता है तथा जिस परमात्मा में मोक्ष को प्राप्त होकर विद्वान् लोग स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं, वही परमात्मा अपना गुरु, आचार्य, राजा और न्यायधीश है । हम लोग मिलकर सदा उसकी भक्ति किया करें ।

8. ओ३म् अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठांते नम उक्तिं विधेम ।।

दीर्घतमा ऋषिः अग्नि देवताः यजु. 40-16

तू ही स्वयं प्रकाशरूप प्रभो ! सबका सृजनहार तू ही ।
रसना निशि दिन रटे तुम्हीं को, मन में बसना सदा तू ही ।।
कुटिल पाप से हमें बचाते रहना, हरदम दया निधान ।
अपने भक्तजनों को भगवन्, दीजे यही विशद् वरदान ।।

हे स्वप्रकाशस्वरूप ज्ञानस्वरूप, सब जगत् के प्रकाश करने वाले, सकल सुखदाता प्रभु ! आप जिससे सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं, कृपा करके हम लोगों को विज्ञान, राज्यादि ऐश्वर्य अच्छे धर्म युक्त मार्ग से प्राप्त कराइए और हमसे कुटिलता युक्त पापरूप कर्म को दूर कीजिए । इस कारण हम लोग आपकी नम्रतापूर्वक बहुत प्रकार की स्तुति और प्रशंसा सदा किया करें और सदा आनन्द में रहें ।

●●●

5. स्वस्तिवाचनम्

विशेष सूचना – केवल साप्ताहिक सत्संगों, विशेष यज्ञों एवं संस्कारों के अवसरों पर विशेष आहुतियाँ दें ।

1. ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ।। मधुच्छन्दा ऋषिः अग्नि देवताः ऋ. 1-1-1

विश्व-विधाता के चरणों पर जीवन पुष्प चढ़ाऊँ ।
जिसने यह ब्रह्माण्ड संवारा, उसकी गाथा गाऊँ ।।

मैं ज्ञानस्वरूप, पूर्व से ही जगत् को धारण करने वाले, यज्ञ के प्रकाशक, सदैव पूजनीय, सब अभीष्ट पदार्थों के दाता और सब सुन्दर पदार्थों के स्वामी प्रभु की स्तुति करता हूँ ।

2. ओ३म् स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये।। मधुच्छन्दा ऋषिः अग्नि देवताः ऋ. 1-1-9

जैसे सुत को शिक्षा देकर पिता सुजान बनाता है।
वैसे जगत्-पिता हमको ज्ञान पीयूष पिलाता है।।

हे ज्ञानस्वरूप प्रभु! जैसे पुत्र के लिए पिता वैसे आप हमारे लिए उत्तम ज्ञान और सुख देने वाले हैं। आप हम लोगों को कल्याण के लिए सदा से युक्त करें।

3. ओ३म् स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः। स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना।।

आत्रेय ऋषिः विश्वेदवा देवताः ऋ. 5-51-11

विद्युत, पवन, मेघ, नभ, धरणी मोदमयी भयहारी।
विद्वानों की वाणी होवे, सुखद सर्वहितकारी।।

प्रभु हमारा कल्याण करें। ऐश्वर्यरूप! आपका जल और वायु सुख का सम्पादन करें। अखण्डित प्रकाश वाली विद्युत-विद्या हम लोगों का कल्याण करे। पुष्टिकारी अन्न, दुग्धादि पदार्थ तथा प्राणों को बल देने वाले मेघादि हमें कल्याणकारी हों। द्यौ तथा पृथिवी उत्तम विज्ञान के साथ हमारे लिए कल्याणकारी हों।

4. ओ३म् स्वस्तये वायुमुपब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः। बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः।

आत्रेय ऋषिः विश्वेदवा देवताः ऋ. 5-51-12

जगत् पिता सबके स्वामी, सदा स्वस्ति कल्याण करें।
विविध रूप से ध्यान धरैं हम, स्वस्ति सुमंगल गान करें।।

वायु को गति एवं चन्द्रमा को सोमरस देने वाला, सबसे महान् जगत् का स्वामी प्रभु हमारे लिए कल्याणकारी हो। सब समूह वाले बड़े-बड़े ब्रह्माण्डों व वेद ज्ञान के रक्षक परमात्मा की हम स्तुति करते हैं। हे प्रभु! बड़े विद्वान्, भक्त, शूरवीर, आदित्य ब्रह्मचारी पुत्र हमारे कल्याण के लिए हों।

5. ओ३म् विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये। देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः।।

आत्रेय ऋषिः विश्वेदवा देवताः ऋ. 5-51-13

हे रुद्र प्रभु देव हमारे, हमारी सदा रक्षा करें।
पाप कर्मों से बचें हम, स्वस्ति के पथ पर बढ़ें।।

आज सब विद्वान् लोग हमारे कल्याण के लिए हों। सब व्यक्तियों में वर्तमान सर्वव्यापक ज्ञान स्वरूप प्रभु हमारा कल्याण करें। मेधावी-विद्वान् सुख के लिए हमारी रक्षा करें। दुष्टों को दण्ड देने वाले प्रभु! हमें पापों से सदा दूर रखे ताकि हमारा सदा कल्याण हो।

6. ओ३म् स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति। स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि।

आत्रेय ऋषिः विश्वेदवा देवताः ऋ. 5-51-14

प्राण अपान सुख दें विद्युत् भद्र बन जावें।
परमेश कृपा कर जीवन में उल्लास बढ़ावें।।

प्राण और उदान वायु सुखकर हों, वायु और विद्युत् हमारे लिए कल्याण करें। धनयुक्त धर्मयुक्त बड़े मार्ग हमें कल्याणकारी हो। ज्ञानमय अखण्डित प्रभु हमारा सदा कल्याण करें।

7. ओ३म् स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव। पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि। आत्रेय ऋषिः विश्वेदवा देवताः ऋ. 5-51-15

सूर्य-चन्द्र के स्वस्ति पथ पर हम प्रभु चलते रहें।
ज्ञानी-दानी बन अहिंसक सत्संग सदा करते रहें।।

हे प्रभु! जीवन मार्ग में कल्याण की भावना से हम विचरें जैसे सूर्य और चन्द्रमा सबके कल्याण के लिए विचरण करते हैं। पुनः पुनः प्राणिमात्र के प्रति सहायक, किसी को दुःख न देते हुए तथा ज्ञान सम्पन्न होकर हम सब मिल कर चलें।

8. ओ३म् ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः। ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।

वसिष्ठ ऋषिः विश्वेदवा देवताः ऋ. 7-35-15

यज्ञव्रती, विद्वान् सर्वदा कर्म तत्त्व बतलावें।
अन्तस्तल में ज्योति जगाकर, श्रेय मार्ग दिखलावें।।

जो यज्ञ के अधिकारी और विद्वानों से भी पूजनीय हैं, मननशील पुरुष के साथ संगति करने वाले, जीवमुक्त और सत्य-ज्ञानी हैं, हमें अत्यन्त

कीर्तिमय विद्या प्रदान करें। आप सब विद्वान् कल्याणकारी पदार्थों से सब काल में हमारी रक्षा किया करें।

9. ओ३म् येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः। उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनुमदा स्वस्तये।

गयः प्लात ऋषिः विश्वेदेवा देवताः ऋ. 10-63-3

वेद, धरती-माता, मेघ, मधुर अमृत रस प्रदान करें।
आदित्य ब्रह्मचारी ज्ञानी, कर्मठ जन सदा कल्याण करें।।

जिन आदित्य ब्रह्मचारियों के लिए सबका निर्माण करने वाली पृथिवी माधुर्य युक्त दुग्धादि पदार्थ देती है और अखण्डनीय मेघों से व्याप्त अन्तरिक्ष लोक सुन्दर जल आदि देता है, अत्यन्त बल वाले और शुभ कर्मों द्वारा वृष्टि का आह्वान करने वाले आदित्य ब्रह्मचारियों को कल्याण के लिए प्राप्त कराएं।

10. ओ३म् नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्देवासो अमृतत्वमानशुः। ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये।

गयः प्लात ऋषिः विश्वेदेवा देवताः ऋ. 10-63-4

यश गूंजे द्युलोक में, सदा शक्ति कल्याण करें।
अमरत्व को पाते सदा वे, पूजनीय महान् रहें।।

मानवमात्र के योगक्षेम पर दृष्टि रखने वाले, सदा सावधान रहने वाले, आदर के पात्र, बहुत बड़े विद्वान् जन अमरत्व को प्राप्त करते हैं। ज्ञानमार्ग के पथिक, बुद्धि के धनी, निष्पाप, प्रकाश वाले, उच्च स्थान प्राप्त करने वाले हमारे लिए कल्याणकारी हों।

11. ओ३म् सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम्। ताँ आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये।

गयः प्लात ऋषिः विश्वेदेवा देवताः ऋ. 10-63-5

आदर भरी मधुर वाणी से, जी भर उनका सम्मान करें।
याज्ञिक, सुव्रती, ब्रह्मचारी, हमारा सदा कल्याण करें।।

अपने तेज से अच्छी प्रकार विराजमान, ज्ञान आदि से वृद्ध जो विद्वान् लोग यज्ञ को प्राप्त होते हैं, और जो किसी से भी अपीड़ित, श्रेष्ठ द्युलोकवत्

प्रकाशमान बड़े-बड़े स्थानों में निवास करते हैं, उन श्रेष्ठ आदित्य ब्रह्मचारियों को मधुर वाणियों से सम्मानित कर कल्याण के लिए हम सेवा करें ।

12. ओ३म् को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यतिष्ठन । को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद् यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये ।

गयः प्लात ऋषिः विश्वेदेवा देवताः ऋ. 10-63-6

यज्ञों-महायज्ञों स्तुतियों के, फल का वही प्रदाता है ।
सभी दुःखों का हर्ता प्रभु है, सबका स्वस्ति विधाता है ।।

हे समस्त विद्वानो ! तुम जो स्तुति करते हो, उस वेदोक्त स्तुति को कौन बताता है ? हे अनेक जन्म वाले मननशील विद्वानो ! तुम सबके बीच कौन ऐसे यज्ञ को अलंकृत करता है जो तुम्हारे मन से पाप को हटाकर कल्याण के लिए प्रेरित करता है ? इसका विचार करो ।

13. ओ३म् येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्त होतृभिः । त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये ।

गयः प्लात ऋषिः विश्वेदेवा देवताः ऋ 10-63-7

वेद वचनों से हमारी सम्मान स्तुति लीजिये ।
आत्मानन्द के लिये ही हमारा सुमंगल कीजिये ।।

जिन व्यक्तियों के लिए मननशील विद्वान् सात होताओं (सात ज्ञानेन्द्रियों (दो आँख, दो कान, दो नाक, एक रसना) से मुख्य यज्ञ करता है, वे आदित्य ब्रह्मचारी भयरहित सुख को प्राप्त हों और हमारे कल्याण के लिए शोभन वैदिक मार्गों को समुचित ढंग से उपलब्ध कराएं ।

14. ओ३म् य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः । ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये ।

गयः प्लात ऋषिः विश्वेदेवा देवताः ऋ. 10-63-8

जड़-चेतन के ज्ञानी ऋषिगण, हमें शक्ति प्रदान करें ।
किये अकिये पाप कर्मों से, आज हमारा उत्थान करें ।।

स्थावर और जंगम सृष्टि के स्वामी प्रभु को जानने वाले विद्वान् अच्छे ज्ञान के साथ सबके अग्रगामी होते हैं । ऐसे श्रेष्ठ पुरुष हमें किये हुए और न किये हुए पापों से बचाकर हमारा कल्याण करें ।

15. ओ३म् भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेऽहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम्। अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावा पृथिवी मरुतः स्वस्तये।

गयः प्लात ऋषिः विश्वेदेवा देवताः ऋ. 10-63-9

जिसने अनल, मारुत, जल भूविद्या फैलाई।
उसकी सुयश पताका जग में गौरव से लहराई।।

हे प्रभु! पाप से छूटने में जिसका आह्वान प्रशंसायुक्त हो, ऐसे शक्तिशाली विद्वान् को हम अपने आन्तरिक और बाह्य संग्रामों में अपनी रक्षा के लिए बुलाते हैं। अनन्त और महान् लाभ के लिए अग्नि, प्राण और जलवायु सेवनीय विद्याओं और अन्तरिक्ष और पृथिवी की विद्या तथा वायु विद्या का हम कल्याण के लिए सेवन करें।

16. ओ३म् सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतम्। दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये।

गयः प्लात ऋषिः विश्वेदेवा देवताः ऋ. 10-63-10

वेद ज्ञान से जीवन अपना निर्मल स्वच्छ बनावें।
धर्म-डांड से खेकर उसको लक्ष्य तीर पहुँचावें।।

इस संसार रूपी सागर से पार उतरने के लिए हम ऐसी ज्ञान रूपी दिव्य नौका पर चढ़ें जो रक्षा करने वाली, अनन्त सीमा वाली, छिद्र आदि से रहित सुख देने वाली, अखण्डित, अच्छी प्रकार निर्मित, तथा सुन्दर साधन युक्त है। इस ज्ञान और भक्ति रूपी दृढ़ नौका पर चढ़कर हम दिव्य लोक को प्राप्त करें।

17. ओ३म् विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह्रुतः। सत्यया वो देवहूत्याहुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये।

गयः प्लात ऋषिः विश्वेदेवा देवताः ऋ. 10-63-11

यज्ञादिक सत्कर्मों से विद्वान् सुगम मार्ग दर्शावें।
स्वयं अभय हो सुख बरसावें हम सब को सुखी बनावें।।

हे पूजनीय विद्वानो! हमारी रक्षा के लिए आप उपदेश किया करें और पीड़ा देने वाली दुर्गति से हमारी रक्षा करें। हे विद्वानों! आप हमारी स्तुति सुनें और इस सच्ची देवतुल्य स्तुति की सहायता से शत्रुओं से हम रक्षा प्राप्त करें। सुख के लिए हम आपका आह्वान करते रहें।

18. ओ३म् अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः। आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतनोरुणः शर्म यच्छता स्वस्तये।

गयः प्लात ऋषिः विश्वेदेवा देवताः ऋ. 10-63-12

द्वेष पाप अशुभ कर्मों को हमसे सदा दूर धरें।
दान-यज्ञ-शुभ कर्म समभाव हम सदा नित करें।।

हे विद्वानो! हमें रोगादि से पृथक् करो। सब व्यक्तियों की नास्तिक बुद्धि को दूर करो। हम लोभ से रहित हो। पाप की इच्छा करने वाले शत्रु की दुष्ट भावना को दूर करो। द्वेष करने वाले हमसे दूर रहे। हमें बहुत सुख प्रदान करो।

19. ओ३म् अरिष्टः स मर्त्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि। यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये।

गयः प्लात ऋषिः विश्वेदेवा देवताः ऋ. 10-63-13

आदित्य देव गण जन-जन को, सन्मार्ग पर सदा चलावें।
धर्म पालन कर प्रजा सहित वे, आनन्द मार्ग पर बढ़ जावें।।

श्रेष्ठ पुरुषों की उत्तम नीतियाँ पापों से हटाकर सन्मार्ग में प्रवृत्त कराने वाली होती है। ऐसे सत्पुरुष विपरीत स्थिति में न घबराकर सदा धर्मानुष्ठान में रत रहते हैं। उनके पुत्र-पौत्रादि अपने पूर्वजों की कीर्ति को बढ़ाने वाले होते हैं।

20. ओ३म् यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने। प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये।

गयः प्लात ऋषिः विश्वेदेवा देवताः ऋ. 10-63-14

जीवन रूपी रथ को पावन पथ पर सदा बढ़ावें।
जग के उपकारी कार्यों में आगे बढ़ते जावें।।

हे मितभाषी विद्वान् लोगो! अन्न के लाभ के लिए जिस रमणीय गमन साधन की रक्षा करते हो और रखे हुए धन के कारण संग्राम में जिस रथ की रक्षा करते हो, इन्द्र को विजय और ऐश्वर्य प्राप्त कराने वाले, प्रातःकाल से ही गमन करने वाले और किसी को पीड़ा न देने वाले उसी रथ पर हम कल्याण के लिए चढ़ें।

21. ओ३म् स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति । स्वस्ति नः पूत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन ।

गयः प्लात ऋषिः पथ्यास्वस्ति देवताः ऋ. 10-63-15

सेना, सुत, जल, धेनु, धर्म मार्ग सुगम बनाओ ।
वातावरण विशुद्ध बनाकर वैर विरोध मिटाओ ।।

हे प्रभु ! हमें ऐसे सन्मार्ग पर चलाओ कि आपकी कृपा से हम जल वाले स्थलों वा मरुस्थलों में, लाभदायक संग्रामों में, पुत्रों के कर्मों से युक्त घरों में, भोज्य धनादि की प्राप्ति में सफलता सुख प्राप्त करें ।

22. ओ३म् स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वस्त्यभि या वाममेति । सा नो अमा सो अरणे निपातु स्वावेशा भवतु देवगोपा ।

गयः प्लात ऋषिः पथ्यास्वस्ति देवताः ऋ. 10-63-16

गुणवती धन-धान्य सम्पन्न पृथिवी सदा कल्याण करे ।
हम वीर मातृभूमि का मिलकर सदा सम्मान करें ।।

इस पृथिवी पर चलने वालों के लिए मार्ग कल्याणकारी हो । यह पृथिवी सुन्दर अन्नादि धन वाली है । सेवा के भाव से किये कर्मों से यह सुलभ है । यह हमारे गृह की रक्षा करे । वनादि देशों में यह हमारी रक्षा करती है । विद्वानों से रक्षित यह पृथिवी हमारे लिए अच्छे स्थान वाली हो ।

23. ओ३म् इषे त्वोर्जे त्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मा मा व स्तेनऽईशत माघशꣳसो ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून पाहि ।

परमेष्ठी ऋषिः सविता देवताः यजु. 1-1

वही अन्नदाता, वही बलदाता पालक पिता कहाता ।
गो रक्षा-यज्ञादि श्रेष्ठ कर्म कर नर उसके ढिग जाता ।।

हे प्रभु ! हम अन्नादि इष्ट पदार्थ के लिए और बलादि के लिए तुम्हारा आश्रय लेते हैं । हम वायु सदृश पराक्रम करने वाले हों । सब जगत् के उत्पादक यज्ञरूप श्रेष्ठ कर्म के लिए हम सबको सम्बद्ध करो । इस यज्ञ द्वारा अपने ऐश्वर्य के भाग को बढ़ाएं । यज्ञ-संपादन के लिए न मारने योग्य बछड़ों सहित गौएं प्राप्त करो जो व्याधि-विशेषों से रहित और यक्ष्मा-तपेदिक आदि बड़े रोगों से शून्य हों । हम लोगों के बीच जो चोरी आदि दुष्ट गुण युक्त हों, वे

उन गौओं के मालिक न बनें और अन्य पापी भी उन पर अधिकार न करें। ऐसा यत्न करो जिससे चिरकाल तक रहने वाली गौएं निर्दुष्ट गो-रक्षक के पास बनी रहें। प्रभो! यजमान के पशुओं की रक्षा करो।

24. ओ३म् आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे।

प्रजापति ऋषिः यज्ञो देवताः यजु. 25-14

शुभ कर्म संकल्प हों, सब भाँति सदा कल्याण हो।
विद्वज्जनों से ही चहुं दिशा सदा सम्मान हो।।

हे प्रभु! हमको स्तुति के योग्य संकल्प प्राप्त हों। सब ओर से किसी से बाधा न प्राप्त करने वाले सर्वोत्तम दुःखनाशक विद्वान् लोग हमारी सभा में हों और सर्वदा हमारी वृद्धि के लिए ही हों। इन विद्वानों को प्रतिदिन प्रमादशून्य और हमारी रक्षा करने वाले बनाओ।

25. ओ३म् देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाꣳरातिरभि नो निवर्त्तताम्। देवानाꣳसख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।

प्रजापति ऋषिः यज्ञो देवताः यजु. 25-15

सरल देवगणों से प्रतिभा पा हम अपना कल्याण करें।
उनके आदर्शों पर चल हम जीवन का निर्माण करें।।

हे प्रभु! सरल आचरण वाले विद्वानों की कल्याणमय श्रेष्ठ बुद्धि हमें प्राप्त हो और विद्वानों से विद्यादि पदार्थों का दान हमें प्राप्त हो। हम श्रेष्ठ पुरुषों को मित्र भाव से प्राप्त हों। ये दिव्य पुरुष हमारी आयु को दीर्घकाल पर्यन्त जीने के लिए बढ़ाएँ।

26. ओ३म् तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।

गोतम ऋषिः ईश्वरो देवताः यजु. 25-18

चर और अचर जगत् पति से, हम निर्मल नेह लगावें।
शुद्ध हृदय से करें प्रार्थना, प्रभु शरण हो जावें।।

चर-अचर जगत् के स्वामी और बुद्धि से सबको आनन्दित करने वाले परमात्मा का अपनी रक्षा के लिए हम आह्वान करते हैं। वह पुष्टिकर्ता धनों

की वृद्धि करे । रक्षक और पालक परमात्मा हमें कल्याण प्रदान करें ।

27. ओ३म् स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।

गोतम ऋषिः ईश्वरो देवताः यजु. 25-19

यशस्वी ऐश्वर्यशाली ईश! हमारा सदा कल्याण करें ।
सर्वज्ञाता, पालक, रक्षक, आनन्दित हमें भगवान करें ।।

बहुत कीर्ति तथा परमैश्वर्ययुक्त प्रभु हमारे लिए कल्याण प्रदान करे । पुष्टि कराने वाला सर्वज्ञाता प्रभु हमारे लिए कल्याण की वर्षा करे । तीक्ष्ण तेजस्वी तथा दुःखहर्ता प्रभु हमारा कल्याण करे । महान् पदार्थों का स्वामी प्रभु हमारे लिए कल्याणकारी हो ।

28. ओ३म् भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ।

गोतम ऋषि अग्नि देवताः यजु. 25-21

हे देव! कानों से हम सदा ही भद्र सुनते रहें ।
आँखों से भद्र लखें, अंगों से सुकर्म करते रहें ।।

हे प्रभु ! आपकी कृपा से हम कानों से अच्छा ही सुनें, नेत्रों से अच्छी वस्तुओं को देखें । प्रभु की स्तुति करने वाले हम लोग पुष्ट शरीरों से उस आयु को प्राप्त करें जो विद्वानों को कल्याण के लिए प्राप्त होती है ।

29. ओ३म् अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये । नि होता सत्सि बर्हिषि ।

भरद्वाज ऋषिः अग्नि देवताः साम. पूर्वा. 1-1-1

ज्योतिस्वरूप! मेरे अन्तर में दिव्य ज्योति फैलाओ ।
कर्मयोग का तत्त्व समझाकर नर-तन सफल बनाओ ।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन् कीर्ति और विशिष्ट तेज से प्रशंसित हुए आप दिव्य पुरुषों को उत्तम पदार्थ देने को प्राप्त होइए । सब पदार्थों के ग्रहण करने वाले आप का हम यज्ञादि शुभ कार्य में सदा स्मरण करें । आप हमारे हृदयों में स्थित हों ।

30. ओ३म् त्वमग्ने यज्ञानांꣳहोता विश्वेषांꣳहितः । देवेभिर्मानुषे जने ।

भरद्वाज ऋषिः अग्नि देवताः साम. पूर्वा. 1-2

जग के सकल यज्ञ के होता सच्चिदानन्द कहलाते ।
भक्ति भाव से उसको भजकर नर भवसागर तर जाते ।।

हे पूजनीय प्रभु ! आप छोटे-बड़े सब यज्ञों के उपदेष्टा हैं । विद्वान् और विचारशील पुरुष आपको भक्तिभावना द्वारा हृदय में स्थित करते हैं ।

31. ओ३म् ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः । वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वोऽअद्य दधातु मे । अथर्वा ऋषिः वाचस्पति देवताः अथर्व. 1-1-1

हे सकल जगत् के धारक स्वामी ! विनय मेरी स्वीकार करो ।
मेरे अन्तःकरण, तन में बल-शक्ति का आज संचार करो ।।

तीन गुण (सत्त्व, रज, तम) तथा सात ग्रह अथवा (21 तत्त्व) अर्थात् (5 महाभूत, 5 ज्ञानेन्द्रियाँ, 5 प्राण, 5 कर्मेन्द्रिय तथा अन्तःकरण) ये सब चराचरात्मक वस्तुओं का पोषण करते हुए परिवर्तित होते रहते हैं । हे वेदवाणी के पति ! आज मेरे शरीर में उन्हीं का बल प्रदान करें ।

●●●

6. शान्तिकरणम्

1. ओ३म् शं न इन्द्रानी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या । शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ ।

वसिष्ठ ऋषिः विश्वेदेवा देवताः ऋ. 7-35-1

विद्युत्, अग्नि, पवन, जल, सूर्य, चन्द्र, सुख सौभाग्य बढ़ावें ।
रोग-शोक-भय-त्रास हमारे पास कभी न आवें ।।

विद्युत् और अग्नि रक्षणादि द्वारा हमारे लिए सुखकारक हों । ग्रहण करने योग्य वस्तुएं देने वाले बिजली और जल हमारे लिए सुखकारक हों । विद्युत् और औषधिगण ऐश्वर्य के लिए शान्ति और सांसारिक दृष्टि से हमारे लिए प्रसन्नतापूर्वक हों । विद्युत् और वायु हमारे लिए युद्ध में और अन्न लाभ की दृष्टि से कल्याणकारी हो ।

2. ओ३म् शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः । शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु ।

वसिष्ठ ऋषिः विश्वेदेवा देवताः ऋ. 7-35-2

सत्य, धन, ऐश्वर्य, सुबुद्धि सदा शान्ति बढ़ावें ।
प्रभु के पद-पंकज पर हम श्रद्धा के पुष्प चढ़ावें ।।

हमारे लिए ऐश्वर्य सुखदायक हो और प्रशंसा शान्ति के लिए हो। हमारी तीव्र बुद्धि सुखकारक हो और धन शान्ति के लिए हो। अच्छे नियम से युक्त सत्य का कथन हमको सुखकारी हो। हमारे लिए बहुत प्रसिद्ध न्यायाधीश सुखकारी हो।

3. ओ३म् शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः। शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु।

वसिष्ठ ऋषिः विश्वेदेवा देवताः ऋ. 7-35-3

सर्व पोषक-धारक ईश्वर शान्ति बरसावें।
भूमि, पर्वत, मेघ, देव, सदा सुख शान्ति सरसावें।।

हमको पोषक प्रभु शान्तिकारी हो, सबका धारक प्रभु शान्ति के लिए हो। हमारे लिए पृथिवी अन्नादि पदार्थों को देती हुई कल्याणकारी हो। अन्तरिक्ष सहित महती पृथिवी तथा प्रकाश युक्त अन्तरिक्ष शान्ति देने वाले हों। मेघ हमारे लिए सुखकारी हों, विद्वानों के शोभन आह्वान सुखकारी हों।

4. ओ३म् शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम्। शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभिवातु वातः।

वसिष्ठ ऋषिः विश्वेदेवा देवताः ऋ. 7-35-4

हे ईश! पवन, चन्द्र, रवि हमारे दुःख सन्ताप मिटावें।
दिवस प्रमोद पूर्ण रजनी भी सुख-सौन्दर्य बढ़ावें।।

ज्योतिस्वरूप, ज्ञानस्वरूप प्रभु हमें सुखकारी हो। प्राण और उदान वायु हमें सुखकारी हों। सूर्य और चन्द्रमा हमें सुख पहुँचाने वाले हों। धर्मात्माओं के श्रेष्ठ आचरण हमें सुख देने वाले हों। हमारे लिए गमनशील वायु सुख देता हुआ बहे।

5. ओ३म् शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु। शं न औषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः।

वसिष्ठ ऋषिः विश्वेदेवा देवताः ऋ. 7-35-5

द्यौ, धरणी, रवि, चन्द्र, सत्कर्म में सुखदायक बन जावें।
अन्न-औषधि-वनस्पति से हम सदा सम्यक् लाभ उठावें।।

द्युलोक और पृथ्वी लोक हमारे लिए शान्तिदायक हों। अन्तरिक्षलोक

नेत्र ज्योति के लिए शान्तिदायक हों। औषधियाँ और वृक्ष हमारे लिए सुखकारक हों। जगत् का स्वामी हमारे लिए सुख देने वाला हो।

6. ओ३म् शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंस। शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टग्नाभिरिह शृणोतु।

वसिष्ठ ऋषिः विश्वेदेवा देवताः ऋ. 7-35-6

निर्मल नीर नीरोगी होवें, भानु सुख बरसावें।
विश्वकर्मा की ज्ञान-गंगा में गोता सदा लगावें।।

दिव्य गुणयुक्त सूर्य हमें सुखदायक हो, उत्तम गुणवाला जल सूर्य की किरणों के साथ हमें सुखदायी हो, जीवों की अभिलाषा पूरी करने हारा ज्ञानदाता प्रभु दुष्टों को दण्ड देने वाले गुणों के साथ हमारे लिए सुखकारी हो, विश्वकर्मा जगदीश हमारी प्रार्थना द्वारा हमें शान्तिदायक हो।

7. ओ३म् शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः। शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः।

वसिष्ठ ऋषिः विश्वेदेवा देवताः ऋ. 7-35-7

जगदीश का वेदज्ञान, औषधियाँ सुख सदा बढ़ावें।
यज्ञ कर्म से जग में मानव मन वांछित फल को पावें।।

हमारे लिए वनस्पतियाँ सुखकारक हों। हमारे लिए अन्नादि तत्त्व शान्तिदायक हों। शुभ कार्यों के साधन भूत जड़ पदार्थ हमें सुख देने वाले हों सब प्रकार के यज्ञ शान्ति के लिए हों। यज्ञ-स्तम्भों के परिमाण हमें सुखदायक हों। हमें औषधियाँ सुख देने वाली हों। यज्ञ की वेदी हमारी शान्ति के लिए हों।

8. ओ३म् शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु। शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः।

वसिष्ठ ऋषिः विश्वेदेवा देवताः ऋ. 7-35-8

जल, प्राण, पर्वत, दिशायें, रवि, रक्षक सब बन जावें।
वसुधा शान्त सुरम्य, समूचे जीव जन्तु सुख पावें।।

बहुत पदार्थों के दर्शन कराने वाला सूर्य हमारे लिए सुखदायक होकर उदय होवे। चारों दिशाएँ हमारे लिए सुखदायक हों। दृढ़ पर्वत हमें

सुखदायक हों। नदियाँ और सागर हमारे लिए सुखरूप हों और जल हमें सुखदायक हों।

9. ओ३म् शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः। शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः।

वसिष्ठ ऋषिः विश्वेदेवा देवताः ऋ. 7-35-9

धरती-गगन, भानु-जल वायु नित उल्लास बढ़ावें।
विद्वानों के वचनामृत से धर्म तत्त्व पा जावें।।

सत्कर्मों वाली विदुषी माताएँ हमारे लिए शान्तिप्रद हों। शोभन विचार युक्त मितभाषी विद्वान् हमारे लिए शान्तिप्रद हों। व्यापक ईश्वर शान्तिदायक हो। पुष्टिकारक ब्रह्मचर्यादि व्यवहार और अंतरिक्ष व जल हमें सुखकारक हो। पवन हमें शान्तिदायक हो।

10. ओ३म् शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः। शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शंभुः।

वसिष्ठ ऋषिः विश्वेदेवा देवताः ऋ. 7-35-10

सकल जग का स्रष्टा प्रभु ही हमारी सदा रक्षा करे।
सुप्रभात हो सुखकर, मेघामृत शान्ति की वर्षा करे।।

प्रकाशस्वरूप परमेश्वर रक्षा करता हुआ हमारे लिए सुखकारक हो। विशेष दीप्तिवाली प्रभात बेलाएँ हमारे लिए सुखदायक हों। मेघ हमारे और संसार के लिए कल्याणकारी हों। क्षेत्र का स्वामी परमात्मा सबको सुख देने वाला और हमारे लिए शान्तिकारी हो।

11. ओ३म् शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु। शमभिषाचः शमुरातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः।

वसिष्ठ ऋषिः विश्वेदेवा देवताः ऋ. 7-35-11

भू-नभ जल के सब पदार्थ मंगलदायक होवें।
विज्ञानी प्रकृति के सारे गूढ़ रहस्य बतावें।।

दिव्य गुणकारी सब देव-जन हमारे लिए सुखदायक हों। उत्तम बुद्धियों के साथ वेदविद्या कल्याणकारी हो। आत्मदर्शी योगी हमारे लिए सुखदायक हों। दान का सेवन करने वाले शान्तिदायक हों। आकाशीय पदार्थ, पृथिवी के पदार्थ हमें सुखदायक हों, जलीय पदार्थ हमारे लिए कल्याणकारी हों।

12. ओ३म् शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः। शं न ऋभवः सूकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु।

वसिष्ठ ऋषिः विश्वेदेवा देवताः ऋ. 7-35-12

सत्य वक्ता विद्वान् गौ-घोड़े सदा कल्याण करें।
याज्ञिक मात-पिता हमें सदा शान्ति का दान करें।।

सत्य-भाषणादि व्यवहार के पालक हमारे लिए सुखकारी हों। उत्तम घोड़े और गौएँ हमको सुखद एवं शान्तिप्रद हों। श्रेष्ठ बुद्धि वाले धर्मात्मा और अच्छे कामों में सहयोग का हाथ देने वाले हमारे लिए सुखद हों। यज्ञादि सत्कर्मों की पूर्ति के लिए माता-पिता आदि हमारे लिए सुखकारक हों।

13. ओ३म् शं नो अज एकपादेवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः। शं नो अपां नपात् पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा।

वसिष्ठ ऋषिः विश्वेदेवा देवताः ऋ. 7-35-13

अजर अमर अभय अखिलेश्वर को हम ध्यावें।
उत्पत्ति-स्थिति-प्रलयकार को पल भर नहीं भुलावें।।

हमारे लिए अजन्मा, एकमात्र रक्षक, सुखदाता प्रभु शांतिदायक हो। जलों का स्वामी प्रभु हमें सुखदायक हो, समुद्र हमें सुख दें। पार लगाने वाला परमात्मा हमें शान्तिदायक हो। दिव्य पदार्थों का रक्षक प्रभु हमें शान्तिदायक हो।

14. ओ३म् इन्द्रो विश्वस्य राजति। शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे।

अथर्वण ऋषिः इन्द्रो देवताः यजु. 36-8

सकल जगत् में फैल रही दिव्य ज्योति प्रभु की पावें।
दोपाये, चौपाये सदा ही सुख-शान्ति उसी की अपनावें।।

हे प्रभु! आप विद्युत् के समान सारे संसार में प्रकाशमान् हैं। आपकी कृपा से दौ पैर वाले तथा चार पैर वाले सभी प्राणियों का कल्याण हो।

15. ओ३म् शन्नो वातः पवताꣳ शन्नस्तपतु सूर्य्यः। शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभिवर्षतु।

अथर्वण ऋषिः वातादयो देवताः यजु. 36-10

पवन बहे विमल वसुधा पर, भानु रश्मि चमकावे।
समय-समय पर बरसे बादल, कभी अकाल न आवे।।

हे प्रभु! पवन हमारे लिए सुखकारी बहे। सूर्य हमारे लिए सुखकारी तपे। अत्यन्त शब्द करता हुआ उत्तम गुण युक्त विद्युत रूप अग्नि हमारे लिए कल्याणकारी हो और मेघ हमारे लिए सब ओर से सुखों की वर्षा करें।

16. ओ३म् अहानि शं भवन्तु नः शंꣳरात्रीः प्रति धीयताम्। शन्न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्न इन्द्रावरुणा रातहव्या। शन्न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः।

अथर्वण ऋषिः लिंगोक्ता देवताः यजु. 36-11

दिवस-निशा मंगलमय, विद्युत, अनल लाभ पहुँचावें।
अन्न जलौषधि रोग निवारक भू माता से पावें।।

दिन हमारे लिए सुखकारक हो। रात्रि हमें शान्ति प्रदान करे। विद्युत् और अग्नि रक्षणादि द्वारा हमारे लिए सुखकारक हों। ग्रहण करने योग्य वस्तुएं देने वाले बिजली और जल हमारे लिए सुखकारक हों। विद्युत् और औषधिगण ऐश्वर्य के लिए शान्ति और सांसारिक दृष्टि से हमारे लिए प्रसन्नतापूर्वक हों। विद्युत् और वायु हमारे लिए युद्ध में और अन्न लाभ की दृष्टि से कल्याणकारी हो।

17. ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभि स्रवन्तु नः।।

अथर्वण ऋषिः आपो देवताः यजु. 36-12

हे दिव्य रूप देवी, आनन्द इष्ट हेतु।
अमृत समान जल हो, कल्याण शान्ति सेतु।
चारों तरफ से वृष्टि, कल्याण युक्त होवे।
शान्ति की कामना से, सन्ताप आप धोवे।

हे प्रभु! इष्ट सुख की सिद्धि के लिए तथा पीने के अर्थ दिव्य उत्तम जल हमको सुखकारी होवें और हमारे लिए सुख की वृष्टि आप सब ओर से करें।

18. ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।

अथर्वण ऋषिः ईश्वरो देवताः यजु. 36-17

द्यौ, अन्तरिक्ष, भूमि, जल, वनस्पति औषधि रोग निवारें।
विश्व देव की दिव्य दया से सुख शान्ति दें सारे के सारे।।

हे प्रभु! प्रकाशयुक्त सूर्यादि, अन्तरिक्ष, पृथ्वी, जल, औषधियाँ, वनस्पतियाँ, सब विद्वान् लोग, सब ज्ञान और सब अन्य पदार्थ शान्तिदायक निरुपद्रव हों। शान्ति स्वयं अधिक शान्तिप्रद हो। हे प्रभु! आपकी कृपा से ऐसी ही शान्ति मुझे भी प्राप्त हो।

19. ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳशृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।

अथर्वण ऋषिः सूर्य्यो देवताः यजु. 36-24

है जो देवों का हितकर्ता और जगत् का द्रष्टा है।
तीनों कालों का जो धर्ता और जगत् का स्रष्टा है।।
दो आशीष प्रभो तुम मुझ को शत वर्षों का जीवन पाऊँ।
शत-शत वर्ष प्रभो कानों से, सुश्रुति मैं सुनता जाऊँ।।
शत-शत वर्ष प्रभो मैं मुख से जग को वैदिक गान सुनाऊँ।
शत वर्षों तक रहूँ निरोगी, सत्य-प्रिय नहीं दीन कहाऊँ।।

हे सूर्यवत् प्रकाशक प्रभु! आप विद्वानों के हितकारी शुद्ध नेत्र तुल्य सबके दिखाने वाले अनादिकाल से अच्छी तरह सबके ज्ञाता हैं। उस आपको हम सौ वर्ष तक ज्ञान द्वारा देखें और आपकी कृपा से सौ वर्ष तक हम जिएँ, सौ वर्ष तक सत् शास्त्रों को सुनें, सौ वर्ष पर्यन्त पढ़ावें एवं उपदेश करें और सौ वर्ष तक दीनता रहित हों और सौ वर्ष से भी अधिक देखें, जिएँ, सुनें और अदीन रहें।

20. ओ३म् यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।

शिवसंकल्प ऋषिः मनो देवताः यजु. 34-1

प्रभो! जागते हुए सदा जो दूर-दूर तक जाता है।
सोते में भी दिव्य शक्तिमय कोसों दौड़ लगाता है।।
दूर-दूर वह जाने वाला तेजों का भी तेज निधान।
नित्य युक्त शुभ संकल्पों से, वह मन मेरा हो भगवान्।।

जो दिव्यगुणों से युक्त, जागते हुए का, अधिक दूर जाता है और वह सोते हुए का भी उसी प्रकार जाता है। दूर जाने वाला और विषयों के

प्रकाशक चक्षुरादि इन्द्रियों का जो प्रकाशक है वह मेरा मन अच्छे संकल्प वाला होवे ।

21. ओ३म् येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः । यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।

शिवसंकल्प ऋषिः मनो देवताः यजु. 34-2

जिसके द्वारा बुद्धिमान् सब नाना करतब करते हैं ।
सत्कर्मों को करें मनीषी, वीर युद्ध में बढ़ते हैं ।।
पूजनीय अतिशय जिसका है, प्रजा वर्ग में अद्‌भुत मान ।
नित्य युक्त शुभ संकल्पों से, वह मन मेरा हो भगवान् ।।

हे प्रभु ! जिस मन से सत्कर्मनिष्ठ मन को दमन करने वाले, बुद्धिमान लोग अग्निहोत्रादि कार्यों में और वैज्ञानिक युद्धादि व्यवहारों में इष्ट कर्मों को करते हैं, और जो अद्‌भुत प्राणिमात्र के भीतर मिला हुआ है, वह मेरा मन श्रेष्ठ संकल्प वाला हो ।

22. ओ३म् यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु । यस्मान्नऽऋते किं चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।

शिवसंकल्प ऋषिः मनो देवताः यजु. 34-3

जिसमें धैर्य, शक्ति चिन्तन का तथा ज्ञान रहता भरपूर ।
प्राणिमात्र में अमृतमय है और प्रकाश का बहता पूर ।।
जिसके बिना नहीं चलता है निश्चय कोई कार्य विधान ।
नित्य युक्त शुभ संकल्पों से, वह मन मेरा हो भगवान् ।।

हे प्रभो ! जो बुद्धि का उत्पादक और स्मृति का साधन है जो धैर्यस्वरूप और मनुष्यों के भीतर नाशरहित प्रकाशस्वरूप है तथा जिसके बिना कोई भी काम नहीं किया जाता, वह मेरा मन शुद्ध संकल्प वाला है ।

23. ओ३म् येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम् । येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।

शिवसंकल्प ऋषिः मनो देवताः यजु. 34-4

अमर तत्त्व जो तीन काल का, भेद यथावत् पाता है ।
बुद्धि, ज्ञान की पाँच इन्द्रियाँ, अहंकार से नाता है ।।

सात हवन करने वालों का, जिसमें फैला यज्ञ-विधान।
नित्य युक्त शुभ संकल्पों से, वह मन मेरा हो भगवान्।।

हे प्रभु! जिस मन से भूत, वर्तमान भविष्यत् इन सब व्यवहारों को जाना जाता है, जिसमें ज्ञान और क्रिया है और जिसके प्रभाव से पांचों ज्ञानेन्द्रियों द्वारा यज्ञ विस्तृत किया जाता है, वह मेरा मन शुद्ध संकल्प वाला हो।

24. ओ३म् यस्मिन्नृचः साम यजूꣳषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिंश्चितꣳसर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।

शिवसंकल्प ऋषिः मनो देवताः यजु. 34-5

चार वेद निगम आगम सारे, ईश ज्ञान के सुन्दर स्रोत।
रथ के पहिये में ज्यों अरे, वैसे रहते ओत-प्रोत।।
जंगम जग का चित अचल हो, जिसमें रहता निष्ठावान्।
नित्य युक्त शुभ संकल्पों से, वह मन मेरा हो भगवान्।।

हे प्रभु! जिस शुद्ध मन से ऋग्वेद, सामवेद तथा यजुर्वेद रथ की नाभि में अरों की नाई स्थित हैं और जिसमें प्राणियों का समस्त ज्ञान सूत्र के मणियों में समान सम्बद्ध है, वह मेरा मन वेदादि सत्य शास्त्रों के प्रचार रूप शुद्ध संकल्प वाला हो।

25. ओ३म् सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिनऽइव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।

शिवसंकल्प ऋषिः मनो देवताः यजु. 34-6

मानव-जन को बांध डोर से, इधर-उधर ले जाता है।
चतुर सारथी ज्यों घोड़ों को, उत्तम चाल चलाता है।।
हृदय-देश में सदा विराजे जो, अतिगामी अजर महान्।
नित्य युक्त शुभ संकल्पों से, वह मन मेरा हो भगवान्।।

अच्छा सारथि जिस प्रकार लगामों से वेगवाले घोड़ों को बलात् ले जाता है, उसी प्रकार जो मन मनुष्यों को इधर-उधर विचार क्षेत्र में ले जाता है, जो हृदय में स्थित और कभी बूढ़ा न होने वाला और अत्यन्त वेगवान् है, वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्प वाला हो।

26. ओ३म् स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते। शंॐ राजन्नोषधीभ्यः। वैखानस ऋषिः सोम देवताः सा. उत्तरा. 1.1.3

धेनु, अश्व, औषध हमारा कल्याण कमावें।
भगवन्! आप सदा हम पर सुख शान्ति बरसावें।।

हे सर्वत्र प्रकाशमान प्रभु! आप हमारे दूध देने वाले गाय आदि पशुओं के लिए सुखकारक हों, मनुष्यमात्र के लिए शान्ति देने वाले हों, सवारी के काम में आने वाले घोड़े आदि पशुओं के लिए सुखकारक हों। अन्न और औषधियाँ हमारे लिए शान्तिदायक हों।

27. ओ३म् अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे। अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु।।

अथर्वा ऋषिः जगती देवताः अथर्व. 19-15-5

मेरे प्रभु अन्तर्यामी! सब विधि अभय प्रदान करें।
अन्तरिक्ष, द्यावा, पृथिवी सब दिशा भय का नाश करें।।

हे प्रभु! अन्तरिक्ष लोक हमारे लिए निर्भयता देने वाला हो। द्युलोक और पृथिवी लोक निर्भयता प्रदान करें। हमें पीछे से भय न हो। आगे से भय न हो। ऊँचे और नीचे से हमको भय न हो।

28. ओ३म् अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्। अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।

अथर्वा ऋषिः जगती देवताः अथर्व. 19-15-6

मित्र-अमित्र जाने-अनजाने, दिन-रात अभय बनावें।
सभी दिशायें मित्र बनें, जीवन में निर्भयता लावें।।

हे प्रभु! हमें मित्र से भय न हो, शत्रु से भय न हो। जाने हुए पदार्थ से भय न हो, न जाने हुए पदार्थों से भय न हो। हमें रात्रि में भय न हो, दिन में भय न हो। सब दिशाएँ हमारे लिए मित्र सदृश हों।

●●●

7. देवयज्ञ (अग्निहोत्र) हवन

आचमन

निम्न मंत्रों को बोलकर यज्ञ पर बैठे हुए सब लोग एक-एक आचमन करें।

ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।।1।।

ओ३म् अमृतापिधानमसि स्वाहा।।2।।

ओ३म् सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।।3।।

तैत्ति. आ. 10-32-35

हे ईश अमृत-सम हमें, सुख शान्ति सब विध दीजिए।
और जल से पुष्ट हों हम, तब शुभाश्रय दीजिए।।
हो सत्यमय जीवन हमारा, औज यशस्वी कीजिए।
शुभ लाभ हमको प्राप्त हो, लक्ष्मी हमें शुभ दीजिए।।

अविनाशी प्रभो! आप ही मेरे आधार हैं, आप ही मेरे रक्षक हैं। सब ओर से आपके संरक्षण में रहता हुआ मैं सत्य, कीर्ति और सबको आश्रय देने वाली श्री को प्राप्त करूँ। मेरी प्रार्थना सत्य हो।

अंग स्पर्श

आचमन के बाद बायीं हथेली में जल लेकर दाहिने हाथ की बीच की दो अंगुलियों से नीचे के मंत्र बोलकर अंग स्पर्श करें।

ओं वाङ्मऽआस्येऽस्तु। इस मंत्र से मुख का स्पर्श करें

ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु। इससे दोनों नासिका

ओम् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु। इससे दोनों आँखें

ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु। इससे दोनों कान

ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु। इससे दोनों भुजाएँ

ओम् ऊर्वोर्म ओजोऽस्तु। इससे दोनों जंघाएँ

इससे पूरे शरीर पर जल छिड़कें।

ओम् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु।।

पारस्कर गृह्य 1-3-25

मुख में सदा हो भद्र वाणी, नासिका सुश्वास ले।
दृष्टि सुखदा ओ पुनीता, कर्ण सुध्वनि भास ले।।
शक्तिशाली हों भुजाएँ, ओज पग विश्वास लें।
हों सुतनु सुस्वस्थ सुन्दर, तब प्रभो विश्वास ले।।

हे सर्वशक्तिमान्! आपकी कृपा से मेरे मुख में वाक् शक्ति, नासिका में घ्राण शक्ति, आँखों में दृष्टि शक्ति, कानों में श्रवण शक्ति, भुजाओं में बल और जंघाओं में सामर्थ्य बनी रहे। मेरा शरीर और शरीर के साथ सब अंग रोगरहित और स्वस्थ अवस्था में रहें।

अग्न्याधानम्

इस मंत्र का उच्चारण करके, घृत के दीपक से कपूर को अग्नि से जला हवनकुण्ड में अग्नि प्रदिप्त करें।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। गोभिल 1-1-11

हे उत्पत्तिकर्त्ता, पालनकर्त्ता और आनन्दस्वरूप प्रभु।
भू जो जग की सत्य शक्ति है, और भुव जो चेतन शक्ति।।
और वही स्वः आनन्द रूप है, मनुज हृदय की उत्तम भक्ति।
शुद्ध भाव से आज यहाँ पर, यज्ञ अग्नि को दीप्त करें।।
और सदा निज जीवन को हम, दिव्य बना संदीप्त करें।।

जगत् का आधार, सर्वोत्पादक, सर्वरक्षक, परमात्मा, प्राणस्वरूप दुःख विनाशक और सुखप्रदाता है।

इसके बाद दीपक से कपूर जलाएं और नीचे का मंत्र बोलकर अग्नि हवनकुण्ड में रखें।

1. ओ३म् भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे।।

प्रजापतिः ऋषिः अग्निवायुसूर्य्या देवताः यजु. 3-5

द्यू लोक सी मण्डित मही को, आज हम हैं कर रहे।
सूर्य सी ज्योति जलाने आज पावक धर रहे।।
देव यजनी इस मही को आज सुरभित कर रहे।
अन्न, औषध, घृत जलाकर, प्यास जन की हर रहे।।

प्राणदाता दुःखहर्ता, इष्ट सुख फल दीजिए।
अन्न-औषध से धरा को, ऋद्ध फिर कर दीजिए।।

हे पृथिवी! जिस पर देव लोग यज्ञ किया करते हैं, उस तुम्हारे धरातल पर आज मैं इस अग्नि का आधान कर रहा हूँ, ताकि मुझे अन्नादि ऐश्वर्य की प्राप्ति हो और मैं इसके जैसा ही अग्निस्वरूप बन कर अपने समाज और राष्ट्र के लिए प्राणस्वरूप, दुःखविनाशक और सुखस्वरूप बन सकूं। साथ ही मेरा हृदय द्युलोक-सा विशाल और ज्योतिर्मय हो तथा मेरी मनोभूमि पृथिवी के समान धैर्ययुक्त और श्रेष्ठ हो।

अगले *मंत्र से छोटी और पतली समिधा लगाकर अग्नि प्रदीप्त करें।*

2. ओ३म् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सꣳसृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।

परमेष्ठी ऋषिः अग्नि देवताः यजु. 15-54

हे अग्ने ज्योतिर्मय स्वामी, ज्ञान ज्योति से भूषित कर दो।
जो हो पूत कामना सब की, पितृ भाव से पूरित कर दो।।
भू पर जो यजमान देवगण, स्नेह भाव से सदा रहें।
इसी प्रेम से यज्ञ अग्नि को, किया प्रज्वलित सदा करें।।

हे अग्ने! तू अच्छी तरह प्रदीप्त हो, सब प्रकार से जागृत हो। तुम्हारी सहायता से यजमान सब यज्ञादि तथा लोकोपकार के कार्यों का सम्पादन करे। हे यजमान और विद्वान् जनो! इस उत्कृष्ट स्थान पर जिस पर आने के बाद सब ऊँच-नीच के भाव समाप्त हो जाते हैं, तुम सब बैठो।

घृताहुति मंत्र

निम्नलिखित मंत्र को बोल कर प्रज्ज्वलित अग्नि में पाँच 5 घृताहुतियाँ दें।

3. ओ३म् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय। चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।। आश्व. गृ. 1-10-12

व्याप्त अग्नि जो वस्तु-वस्तु में, आधार काष्ठ कहलाती है।
पाकर सुन्दर भेंट काष्ठ की, चण्ड रूप हो जाती है।।

सुख-सन्तान हमें मिल जाए, पशु धन भी बढ़ता जाए।
इसी अग्नि से हे प्रभु जग में, अन्न-पुष्प नित सरसाए।।
शुद्ध भाव से स्वाहा कह कर अग्नि रूप को अर्पित करते।
स्वार्थ भाव से ऊपर उठ कर प्रभु चरणों में सब कुछ धरते।।

हे वेदों के मूलस्रोत! समस्त पदार्थों में विद्यमान अग्ने! यह आत्मा तेरी समिधा है (जैसे कि यह समिधा अग्नि की आत्मा है) हे अग्ने! इससे तुम प्रदीप्त हो, बढ़ो और हमको भी प्रजा, पशु, ब्रह्मवर्चस तथा अन्नादि प्राप्त कराकर भौतिक रूप से आगे बढ़ाओ तथा आत्मिक उन्नति में भी हमारे सहायक हो। परमात्मन्! यह आपके लिए है और जो कुछ मैं आहुति दे रहा हूँ सब आपका ही है, मेरा कुछ नहीं।

जलप्रोक्षणम्

तत्पश्चात् दाहिनी अंजलि में जल लेकर निम्न मंत्रों से वेदी के चारों दिशाओं में जल सिंचन करें।

ओ३म् अदितेऽनुमन्यस्व। पूर्व दिशा में

ओ३म् अनुमतेऽनुमन्यस्व। पश्चिम दिशा में

ओ३म् सरस्वत्यनुमन्यस्व।। उत्तर दिशा में गोभिल गृ.सू. 1 से 3

हे प्रभु! कृपया आप मुझे उत्तम बुद्धि प्रदान कीजिए।
हे प्रभु! मुझे कृपया श्रेष्ठ ज्ञान प्रदान कीजिये।
हे प्रभु! मुझे कृपया भरपूर ज्ञान प्रदान कीजिये।
अगले मंत्र से चारों दिशाओं में जल सिंचन करें।

4. ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।।

नारायण ऋषिः सविता देवताः यजु. 30-1

सत्कर्म करने के लिए, शुभ बुद्धि अदिते दीजिए।
शुभ कर्म हित अनुकूल प्रतिभा, प्रिय विभो बस दीजिए।।
पुण्य करने हेतु भगवन् बुद्धि मेधा दीजिए।
मैं यहाँ जल सींचता हूँ जीव रक्षा कीजिए।।

हे देव! सवितर यज्ञकर्ता विश्व में उत्पन्न हों,
प्रेरणा पाकर चतुदिक् यज्ञ ही सम्पन्न हों।।
शक्तिशाली वायु जल भू विभव से हमको भरें।
यज्ञ से सद्बुद्धि पावें माधुर्य वाणी में धरें।।

हे अखण्ड, अनुकूल, ज्ञानमय, परमात्मन्! हमारी प्रार्थना स्वीकार कीजिए। हे प्रकाशस्वरूप, सकल जगत् के उत्पादक, अलौकिक, वेदवाणी के स्रोत, बुद्धि को पवित्र करने वाले, वाणी के रक्षक प्रभो। हमारी बुद्धि को पवित्र कीजिए और हमारी वाणी को मधुर बनाइए।

आधारावाज्याहुति

प्रथम मंत्र से वेदी की उत्तर अग्नि में–

5. ओ३म् अग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम।

दूसरे मंत्र से वेदी की दक्षिण अग्नि में–

ओ३म् सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदन्न मम।

वरुण ऋषिः अग्न्यादयो मन्त्रोक्ता देवताः यजु. 10-5

हे ज्ञानस्वरूप, अग्रणी, न्यायकारी, शान्तिमय परमात्मा के लिए सुन्दर आहुतियों के रूप में समर्पण करता हूँ। यह सब उसी के लिए है, मेरा इसमें कुछ नहीं।

तीसरे और चौथे मंत्र से वेदी के मध्य में।

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदन्न मम।

प्रजापति ऋषिः वाजादयो देवताः यजु. 22-32

ओम् इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय इदन्न मम।

प्रजापति ऋषिः अग्नादयो देवताः यजु. 22-6

मैं इन आहुतियों के रूप में अपना सब कुछ प्रजापालक एवं परम ऐश्वर्य के अधिष्ठाता उस परमात्मा को समर्पित करता हूँ।

अग्नि रूप प्रकाशमय हे ज्ञान के दाता प्रभो।
सुख शान्ति के भंडार मेरे, सोम रूप बहा विभो।
तुम प्रजापालक जनक तुम, हो प्रजापति हे प्रभो।
ऐश्वर्यदाता, सुखप्रदाता, इन्द्र रूप महा विभो।

शुद्ध भाव से स्वाहा कहकर अग्नि रूप को अर्पित करते।
स्वार्थ भाव से ऊपर उठकर प्रभु चरणों में सब कुछ धरते।

प्रातः और सायं दोनों समय की आहुतियाँ

अब निम्नलिखित मंत्रों से घी के साथ सामग्री की भी आहुति दें।

6. **ओ३म् सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।**
सूर्यो वर्च्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।।
ज्योति सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।

प्रजापति ऋषिः सूर्य देवताः यजु. 3-9

सत्य ही गुणी, पवित्र, धार्मिक, मनुष्यों की प्रगति करने वाला प्रभु परम ज्योति और कान्तिमय है जैसे कि संसार में प्रकाशमान यह अग्नि है। यह अग्नि सर्वोत्पादक, प्रकाशस्वरूप, परमात्मा तथा अपनी कान्ति से शोभायुक्त रात्रि के साथ एक रहकर इन आहुतियों को प्राप्त करके सर्वत्र प्रसारित करे।

7. **ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजुरुषसेन्द्रवत्या। जुषाण सूर्योवेतु स्वाहा।।**

प्रजापति ऋषिः सूर्य देवताः यजु. 3-10

अग्नि समान जो ज्योति तुम्हारी, अग्नि ज्योति के दाता हो।
अग्नि तुल्य है ज्ञान तुम्हारा, सकल ज्ञान उद्गाता हो।
अग्नि ज्योति के रक्षक तुम हो, अग्नि तेज विधाता हो।
सकल ज्ञान ऐश्वर्य प्रकाशक, सुख आनन्द प्रदाता हो।
शुद्ध भाव से स्वाहा कहकर अग्नि रूप को अर्पित करते।
स्वार्थ भाव से ऊपर उठकर प्रभु चरणों में सब कुछ धरते।

ईश्वर ने सामर्थ्य करके कारण से अग्नि आदि सब जगत् उत्पन्न करके प्रकाशित किया है। उनमें से अग्नि अपने प्रकाश से आप वा और सब पदार्थों का प्रकाश करता है तथा परमेश्वर वेद के द्वारा सब विद्याओं का प्रकाश करता है। इसी प्रकार अग्नि और सूर्य भी शिल्पविद्या का प्रकाश करते हैं।

8. **ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम।**
ओ३म् भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम।
ओ३म् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय इदन्न मम।

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्यवादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा । इदमग्नि वाय्यवादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः इदन्न मम । तैत्तिरीय 10-2

अग्नि रूप प्राणों के दाता, हवि प्राणों के हित देते हैं ।
वायु रूप तुम दुःख विनाशक हम अपान हित हवि देते हैं ।
तुम आदित्य रूप सुखदाता, व्यान वृद्धि हित हवि देते हैं ।
भूर्भुवः स्वः रूप तुम्हारा, सकल वायु हित हवि देते हैं ।
शुद्ध भाव से स्वाहा कहकर अग्नि रूप को अर्पित करते ।
स्वार्थ भाव से ऊपर उठकर प्रभु चरणों में सब कुछ धरते ।

प्राण से भी प्रिय, दुःखविनाशक, सुखस्वरूप, ज्ञानमय, सबको गति देने वाले, अविनाशी और नित्य परमात्मा के लिए, उसकी शक्ति से तथा उनके नियंत्रण में काम आने वाले अग्नि, सूर्य और वायु की अनुकूलता के लिए और सब जीवों के प्राण, अपान और व्यान की स्वस्थता के लिए मैं यह आहुति देता हूँ । मेरे पास जो कुछ भी है वह सब इन्हीं के लिए है । मेरा अपना कुछ नहीं ।

9. **ओ३म् आपो ज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरो३म् स्वाहा ।**

तैतिरीय आ० 10-15, गोभिल गृ.सू. 1-8-14

भूर्भुवः स्वः रक्षक जिसका ज्योति छटा छिटकाता है ।
वही ब्रह्म जो घट घट व्यापी, रस पीयूष पिलाता है ।
उसी ज्योति को कर धारण मैं ज्योतिर्मय बन जाऊँ ।
उत्तम रस का सेवन कर मैं और सरस हो जाऊँ ।
शुद्ध भाव से स्वाहा कहकर अग्नि रूप को अर्पित करते ।
स्वार्थ भाव से ऊपर उठकर प्रभु चरणों में सब कुछ धरते ।

सत्य ही वह परमपिता परमात्मा सर्वव्यापी, सबकी ज्योति, आनन्दस्वरूप, अमर, सबसे बड़ा, सर्वाधार, पापों से अपने भक्तों की रक्षा करने वाला, पवित्र धार्मिक मनुष्यों को सुख देने वाला और सबकी सब समय रक्षा करने वाला है ।

सायंकाल की आहुतियों के मंत्र

1. **ओ३म् अग्निर्ज्योतिरग्नि स्वाहा ।** यजु. 3-6

आपकी ज्योति प्रभु सारे जग को जगमगा रही है ।
हर पुष्प में प्रभु तुम्हारी खुशबू आ रही है ।।

आपकी अग्नि के ताप से पकते अन्न औषधि सारे।
आपके तेज से तेजवान है सूरज चांद और तारे।।

हे प्रभु! जिस प्रकार भौतिक अग्नि ज्योति समान है। उसी प्रकार यह आत्मा भी ज्योर्तिमय है। आपके प्रकाश से ही सारा जगत् प्रकाशित है। भौतिक अग्नि से ही बहुत सी वस्तुओं का निर्माण किया जाता है।

2. ओ३म् अग्निवर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।

भौतिक अग्नि से संचालित सभी कल-कारखाने।
भौतिक अग्नि के बग़ैर नहीं पकते गेहूँ चावल के दाने।।

हे प्रभु! जिस प्रकार यह भौतिक अग्नि शक्ति और प्राणरूप है। वैसे ही यह आत्मा भी शक्ति और प्राणरूप है।

3. ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्नि स्वाहा।

सारे ब्रह्माण्ड को प्रकाशित करता है सूर्य एक अकेला।
सारे ब्रह्माण्ड को संचालित करता है ईश्वर एक अकेला।।

प्रकाशस्वरूप परमेश्वर ज्योति है और ज्योति ही परमेश्वर है। यह सत्य है।

4. ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा।

हे ईश सुखद रात्रि सब को प्रतिदिन प्राप्त हो।
प्राण शक्ति रात्रि में सुखद सम्पन्न प्राप्त हो।।

हे प्रभु! जिस प्रकार भौतिक अग्नि प्राण शक्ति और सुखद रात्रि के साथ प्रतिदिन प्राप्त होती है। उसी प्रकार आत्मा भी प्राण शक्ति एवं ऐश्वर्य सम्पन्न आनन्द सहित हमें प्राप्त हो।

इससे आगे प्रातःकाल के मन्त्र **'ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा से लेकर ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये .....'** तक के मंत्रों से आहुति देवें।

आधारावाज्यभागाहुतियाँ

(इन मत्रों से केवल घी की आहुति देवें)

1. **ओ३म् अग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम।**

इस मंत्र से वेदी के उत्तर भाग में आहुति दें।

2. ओ३म् सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदन्न मम।

इस मंत्र से वेदी के दक्षिण भाग में आहुति दें।

गो.भि.गृ.प्र.1 खं.8 सू. 3-4

हे ज्ञानस्वरूप, अग्रणी, न्यायकारी, शान्तिमय परमात्मा के लिए सुन्दर आहुतियों के रूप में समर्पण करता हूँ। यह सब उसी के लिए है, मेरा इसमें कुछ नहीं।

तीसरे और चौथे मंत्र से वेदी के मध्य में।

3. ओ३म् प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदन्न मम।

कात्या. श्रो. 3 सू. 12

4. ओम् इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय इदन्न मम।

कात्या. श्रो. 3 सू. 16

चार व्याहृतियाँ

ओ३म् भूरग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम।

विश्व के आधार अग्नि रूप परमात्मा के लिए आहुति समर्पित है। यह अग्नि के लिए है। इसमें मेरा कुछ भी नहीं है।

ओ३म् भुवर्वायवे स्वाहा। इदं वायवे इदन्न मम।

वायु के समान सर्वव्यापक दुःख विनाशक ईश्वर के लिए समर्पित है। यह वायु के लिए है, मेरे लिये नहीं।

ओ३म् स्वरादित्याय स्वाहा। इदमादित्याय इदन्न मम।

आदित्य रूप और सुख देने वाले ईश्वर के लिए यह आहुति है। यह आदित्य के लिए है मेरे लिए नहीं।

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्यवादित्येभ्यः स्वाहा। इदमग्नि वाय्यवादित्येभ्यः इदन्न मम। गोभि. गृ. 1-8-15

सृष्टि के आधार, सुख स्वरूप, दुःख विनाशक, अग्नि, वायु और आदित्य के लिए यह आहुति है, मेरे लिए नही।

10. ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा। मेधाकाम ऋषिः परमात्मा देवताः, यजु. 32-14

जिस श्रेष्ठ प्रज्ञा प्राप्ति हेतु देवगण भक्ति करें।
औ सुमेधा हित पितर जन, ईश आसक्ति करें।
अग्नि रूप महा विभो हे! प्रार्थना सुन लीजिए।
अमृत समान ऋतम्भरा जो वह सुमेधा दीजिए।
शुद्ध भाव से स्वाहा कहकर अग्नि रूप को अर्पित करते।
स्वार्थ भाव से ऊपर उठकर प्रभु चरणों में सब कुछ धरते।

आत्मा का दर्शन कराने वाली तथा विवेकमयी जिस बुद्धि को विद्वान् और पितर प्राप्त करते हैं और उपयोग करते हैं, हे ज्ञानस्वरूप परमात्मन्! आप कृपा करके वही मेधा-बुद्धि मुझे देकर मेधावी बनाइए। यह मेरी आपसे हार्दिक प्रार्थना है।

11. ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव स्वाहा।

नारायण ऋषिः सविता देवताः, यजु. 30-3

तू सर्वेश सकल सुखदाता, शुद्ध स्वरूप विधाता है।
उसके कष्ट नष्ट हो जाते, शरण तेरी जो आता है।
सारे दुर्गुण दुर्व्यसनों से, हमको नाथ बचा लीजै।
मंगलमय गुण कर्म पदार्थ, प्रेम सिन्धु हमको दीजै।
शुद्ध भाव से स्वाहा कहकर अग्नि रूप को अर्पित करते।
स्वार्थ भाव से ऊपर उठकर प्रभु चरणों में सब कुछ धरते।

हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त, शुद्धस्वरूप, सब सुखों के दाता प्रभु! आप कृपया हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन तथा दुःख को दूर कीजिए और जो कल्याणकारी पदार्थ हैं, वह सब हमको प्राप्त कराइए।

12. ओ३म् अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा।

दीर्घतमा ऋषिः आत्मा देवताः, यजु. 40-16

तू ही स्वयं प्रकाशरूप प्रभो, सबका सृजनहार तू ही।
रसना निशि दिन रटे तुम्हीं को, मन में बसना सदा तू ही।
कुटिल पाप से हमें बचाते रहना, हर दम दया निधान।
अपने भक्तजनों को भगवन्, दीजे यही विशद् वरदान।
शुद्ध भाव से स्वाहा कहकर अग्नि रूप को अर्पित करते।
स्वार्थ भाव से ऊपर उठकर प्रभु चरणों में सब कुछ धरते।

हे स्वप्रकाशक ज्ञानस्वरूप सब जगत् के प्रकाश करने वाले, सकल सुखदाता प्रभु! आप जिससे सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं, कृपया हम लोगों को विज्ञान तथा राज्यादि ऐश्वर्य अच्छे धर्म युक्त मार्ग से प्राप्त कराइए और हमसे कुटिलतायुक्त पापरूप कर्म को दूर कीजिए। इस कारण हम लोग आपकी नम्रतापूर्वक बहुत प्रकार की स्तुति और प्रशंसा सदा किया करें।

●●●

8. विशेष आहुतियाँ

स्विष्टकृदाहुति

1. ओ३म् यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते इदन्न मम। —शतपथ ब्राह्मण14-9-24

इस जीवन के पूत यज्ञ में जो कुछ न्यूनाधिक होवे।
अग्नि देव! हे इष्ट देव! करो सब सिद्धि सफलता भी होवे।
प्रायश्चित हेतु आहुति यह यज्ञ अग्नि को भेंट करूँ।
मनोकामना पूरी होवे विश्व शान्ति हित भेंट धरूँ।
शुभ इष्ट सभी का सब विधि होवे भक्ति भाव से गाता हूँ।
स्वार्थ भाव का त्याग करूँ मैं सदा सुफल ही पाता हूँ।
शुद्ध भाव से स्वाहा कहकर अग्नि रूप को अर्पित करते।
स्वार्थ भाव से ऊपर उठकर प्रभु चरणों में सब कुछ धरते।

परमपिता परमात्मा सारी शुभ इच्छाओं को पूर्ण करने वाला है और वह मेरी सब शुभ कामनाओं को जानता है। मैंने यज्ञ कर्म में जो कुछ भी विधि से किया हो वह दयालु परमात्मा उसे पूर्ण कर दे। मेरे इस यज्ञ को सुसम्पादित करने वाले परमात्मा के लिए यह सब समर्पित है। हे प्रभु! हमारी सब कामनाएं पूर्ण कीजिए। यह सब जो कुछ मेरे पास है, वह आपको ही समर्पित है और इसमें मेरा कुछ नहीं है।

प्राजापत्यरहुति मन्त्र

इस मंत्र को मन में बोल कर घृतादि आहुति देवें ।

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये इदन्न मम ।

प्रजापति ऋषिः वाजादयो देवताः यजु. 22-32

मैं इन आहुतियों के रूप में अपना सब कुछ प्रजापालक एवं परम ऐश्वर्य के अधिष्ठाता उस परमात्मा को समर्पित करता हूँ ।

आज्याहुति मन्त्र

निम्नलिखित चार मंत्रों से एक-एक घृताहुति देवें

2. ओ३म् भूर्भुवः स्वः । अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः । आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा । इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम ।

वैखानसा ऋषिः अग्नि देवताः, ऋ. 9-66-19

सत्य रूप चेतन प्रभु हो तुम दिव्यानन्द प्रदाता हो ।
जीवन सब का रहे सुरक्षित बल औ अन्न सुदाता हो ।
अहित भाव से हमें बचाकर सारे संकट दूर करो ।
तुम ही रक्षा करो हमारी भद्र भाव भरपूर भरो ।
शुद्ध भाव से स्वाहा कहकर अग्नि रूप को अर्पित करते ।
स्वार्थ भाव से ऊपर उठकर प्रभु चरणों में सब कुछ धरते ।

हे सर्वाधार, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, ज्ञानस्वरूप प्रभो! तुम हमारे जीवन को पवित्र करने वाले हो । हमें बल और अन्न प्रदान करो और दुर्भाग्य, दुःख और आपत्तियों को हम से दूर रखो । यह मेरी हार्दिक प्रार्थना है । मेरे पास जो भी कुछ है सब आपका ही है । मेरा इसमें कुछ भी नहीं है ।

3. ओ३म् भूर्भुवः स्वः । अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः । तमीमहे महागयं स्वाहा । इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम ।

वैखानसा ऋषिः अग्नि देवताः, ऋ. 9-66-20

पांचजन्य हे सब विध रक्षक, अग्नि ज्ञान से पूरित कर दो ।
स्तुति प्रशंसा के अधिकारी भक्तिभाव से हमको भर दो ।
हमें पुरोहित सदा बनाओ नित आगे ही बढ़ते जाएँ ।
यज्ञ रूप इस पूत कर्म से नित ऊपर ही चढ़ते जाएँ ।
शुद्ध भाव से स्वाहा कहकर अग्नि रूप को अर्पित करते ।
स्वार्थ भाव से ऊपर उठकर प्रभु चरणों में सब कुछ धरते ।

प्राणप्रिय, दुःखविनाशक, सुखस्वरूप प्रभु, स्वप्रकाशस्वरूप, सर्वद्रष्टा, पवित्रकर्ता और निष्पक्ष होकर सबका समान रूप से हित करने वाला है । वह ही हमारा अग्रणी है । महान् स्तुति के योग्य उस परमपिता को हम प्राप्त करें । मेरे पास जो भी कुछ है सब आपका ही है । मेरा इसमें कुछ भी नहीं है ।

4. ओ३म् भूर्भुवः स्वः । अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम् । दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा । इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम ।

वैखानसा ऋषिः अग्नि देवताः, ऋ. 9-66-21

भूर्भुवः स्वः रूप तुम्हारा पूत अग्नि को दीप्त करो ।
ओज तेज को प्राप्त करें हम, सब विध मुझ में पुष्टि धरो ।।
धन ऐश्वर्य सहित हो जावें, परहित में हम लगे रहें ।
नाना विध हम यज्ञ रचाकर पूत कर्म तल्लीन रहें ।।
शुद्ध भाव से स्वाहा कहकर अग्नि रूप को अर्पित करते ।
स्वार्थ भाव से ऊपर उठकर प्रभु चरणों में सब कुछ धरते ।।

हे सर्वाधार, दुःखविनाशक, सुखस्वरूप, प्रकाशमय प्रभो ! आप उत्तम कर्मों के अधिष्ठाता हैं । आप हमें वर्चस् और पराक्रम देकर पवित्र करो । मुझे ऐश्वर्य सम्पत्ति और शरीर की पुष्टि दो । मेरे पास जो भी कुछ है सब आपका ही है । मेरा इसमें कुछ भी नहीं है ।

5. ओ३म् भूर्भुवः स्वः । प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणां स्वाहा । इदं प्रजापतये इदन्न मम । हिरण्यगर्भ ऋषिः प्रजापति देवताः, ऋ. 10-121-10

भूर्भवः स्वः प्रजापते तुम एक मात्र हो रक्षक मेरे ।
पिता बने सम्पूर्ण जगत् के पूर्ण प्रभु और शिक्षक मेरे ।।
जिस-जिस कलित कामना युत् हों, हे प्रभु हम तुमको ध्यावें ।
हों सम्पूर्ण कामना वे सब उत्तम सुधन सदा पावें ।।
शुद्ध भाव से स्वाहा कहकर अग्नि रूप को अर्पित करते ।
स्वार्थ भाव से ऊपर उठकर प्रभु चरणों में सब कुछ धरते ।।

हे सब प्रजा के स्वामी परमात्मा ! आपसे भिन्न दूसरा कोई इन सब उत्पन्न हुए जड़ चेतनादिकों का तिरस्कार नहीं करता अर्थात् आप सर्वोपरि है । जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले हम लोग आपका आश्रय ले और वांछा करें, वे सब हमारी कामनाएँ सिद्ध हों । जिससे हम धन ऐश्वर्यों के स्वामी बनें । मेरे पास जो भी कुछ है सब आपका ही है । मेरा इसमें कुछ भी नहीं है ।

निम्नलिखित मंत्रों से सर्वत्र मंगलकार्यों में आठ सामग्री एवं घृताहुति देवें

6. ओ३म् त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळोऽव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्याम् इदन्न मम।

वामदेव ऋषिः अग्निर्वा वरुणश्च देवताः, ऋ. 4-1-4

हे परम श्रेष्ठ विद्वान् प्रभो तुम अग्नि रूप कहलाते हो।
राग-द्वेष और क्रोध-मोह को तुम ही दूर भगाते हो।।
उत्तम याज्ञिक देव जनों के सब विध संकट दूर करो।
परम पूत इस महा यज्ञ में सब विधि उत्तम शक्ति भरो।।
शुद्ध भाव से स्वाहा कहकर अग्नि रूप को अर्पित करते।
स्वार्थ भाव से ऊपर उठकर प्रभु चरणों में सब कुछ धरते।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन् आप सब कुछ जानते हैं। ऐसी कृपा करो कि हमारे हाथों किसी श्रेष्ठ वरणीय विद्वान् का अपमान न हो आप यजनीयों में, वहन करने वालों में, दीप्तिमान् पदार्थों में सर्वोत्तम हैं। आप हमसे सभी द्वेष भावों को दूर कीजिए। मेरे पास जो भी कुछ है सब आपका ही है। मेरा इसमें कुछ भी नहीं है।

7. ओ३म् स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृळीकं सुहवो न एधि स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्याम् इदन्न मम।

वामदेव ऋषिः अग्नि देवताः, ऋ. 4-1-5

उषा काल की शुभ वेला में, रक्षाहित तुम को ध्याते।
सब विध ताप हरो हे स्वामी, गीत तुम्हारे ही गाते।।
भक्ति भाव से तुम्हें बुलाते, सुख-सौन्दर्य प्रदान करो।
स्वार्थ सहित परमार्थ यज्ञ में सब विश्व शक्ति सुदान करो।।
शुद्ध भाव से स्वाहा कहकर अग्नि रूप को अर्पित करते।
स्वार्थ भाव से ऊपर उठकर प्रभु चरणों में सब कुछ धरते।।

हे प्रकाशस्वरूप प्रभु! आप अपने सभी रक्षा-साधनों से हमारी रक्षा करें। इस उषाकाल के इस शुभ कर्म में आप ही हमारे निकटतम हैं। हमें

सुमति प्रदान कीजिए और विद्वानों की संगति कराइए । आप ही मेरे एकमात्र श्रद्धा और स्तुति के पात्र हैं ।

8. ओ३म् इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय । त्वामवस्युराचके स्वाहा । इदं वरुणाय इदन्न मम । शुनशेप ऋषिः वरुण देवताः ऋ. 1-25-19

हे उपास्य अन्तर्यामी प्रभु, वरुण श्रेष्ठ कहलाते हो ।
हर विध सुखी बनाते हम को, भू-रक्षक कहलाते हो ।
आवाहन मैं करूँ तुम्हारा, मेरी विनती श्रवण करो ।
यज्ञ रूप में अर्चन करता, सब विध सबका भरण करो ।
शुद्ध भाव से स्वाहा कहकर अग्नि रूप को अर्पित करते ।
स्वार्थ भाव से ऊपर उठकर प्रभु चरणों में सब कुछ धरते ।

हे वरणीय पिता ! आप मेरी प्रार्थना सुनिए और आज मेरी सहायता कीजिए तथा मुझे सुख दीजिए । रक्षा की इच्छा करता हुआ मैं आपको पुकार रहा हूँ । यह हवि वरुण के लिए है, मेरे लिए नहीं ।

9. ओ३म् तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्र मोषीः स्वाहा । इदं वरुणाय इदन्न मम । विश्वामित्र ऋषिः वरुण देवताः, ऋ. 1-24-11

श्रुति मंत्रों से स्मरण तुम्हारा, सुखप्रद आयु प्रदान करो ।
नाना विध यज्ञों के रक्षक दिव्य बोध आधान करो ।
विविध रूप में यजमान अनेकों, अपना शीश झुकाते हैं ।
न कर तिरस्कृत कभी किसी को पूर्ण आयु पा जाते हैं ।
शुद्ध भाव से स्वाहा कहकर अग्नि रूप को अर्पित करते ।
स्वार्थ भाव से ऊपर उठकर प्रभु चरणों में सब कुछ धरते ।

वरणीय प्रभो ! वेद मन्त्रों का पाठ करने वाला मैं यही चाहता हूँ कि आपको प्राप्त करूँ । हवियों की आहुति देने वाला यजमान तुम्हें ही पाने की आशा करता है । महान् प्रशंसा वाले हे पिता ! आप हमारी प्रार्थना को अस्वीकार न करें और हमारी आयु को नष्ट न करें । मेरे पास जो भी कुछ है सब आपका ही है । मेरा इसमें कुछ भी नहीं है ।

10. ओ३म् ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः इदन्न मम।

कात्यायन श्रोत. 25-1-11

शत-शत और सहस्रों बाधा, शुभ कर्मों में आती हैं।
कृपा तुम्हारी देव स्वयं वे भाग्य हमें दे जाती हैं।
विष्णु रूप हे पाश-विमोचक, सदा सुयुक्ति सुदान करो।
विश्व देव हे मरुत तुल्य ही, सब विध मुक्ति प्रदान करो।
शुद्ध भाव से स्वाहा कहकर अग्नि रूप को अर्पित करते।
स्वार्थ भाव से ऊपर उठकर प्रभु चरणों में सब कुछ धरते।

हे वरणीय प्रभो! आपकी सृष्टि में जो बड़े-बड़े सैकड़ों और हजारों बन्धन विस्तृत हैं। सर्वोत्पादक और सर्वव्यापक आप तथा समस्त प्रशंसित विद्वान्, जो समाज के प्राण रूप हैं, हमें यज्ञों की सहायता से इन बन्धनों से छुड़ावें। यह सब कुछ जो मेरे पास है वह वरणीय आप के लिए, सर्वोत्पादक के लिए, सर्वव्यापक के लिए, विद्वानों के लिए, समाज के लिए और अच्छी प्रशंसा वाले के लिए है। इसमें मेरा कुछ नहीं है।

11. ओ३म् अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमयाऽसि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजं ँ स्वाहा। इदमग्नये अयसे इदन्न मम।

कात्यायन श्रोत. 25-1-11

घट-घट व्यापी महा प्रकाशक, रस औषध का दान करो।
पर-निंदक जो रागी-द्वेषी उनका भी कल्याण करो।
स्वार्थ भाव से ऊपर उठ कर हम सब विध यज्ञ विधान करें।
तुम ही रक्षक दिव्य यज्ञ के बहुविध अन्न वितान करें।
शुद्ध भाव से स्वाहा कहकर अग्नि रूप को अर्पित करते।
स्वार्थ भाव से ऊपर उठकर प्रभु चरणों में सब कुछ धरते।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप सर्वत्र व्याप्त हैं। सर्वव्यापक होकर हमारा सर्वत्र कल्याण करते हैं। आप निर्दोष प्राणियों की रक्षा करते हैं। आप

हमारे इस यज्ञ को सफल बनाइये और हम में रोग निवारक शक्ति दीजिए जिससे हम दुःखों और पापों में न पड़ें। मेरे पास जो कुछ है वह आपका ही है। इसमें मेरा कुछ नहीं है।

12. ओ३म् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदबाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणायाऽऽदित्यायाऽदितये च इदन्न मम।

विश्वामित्र ऋषिः वरुण देवताः, ऋ. 1-24-15

आत्मा के मन के काया के बन्धन प्रभु तुम शिथिल करो।
उत्तम मध्यम और अधम जो, दूर पाश, तुम निखिल करो।
हे आदित्य रूप व्रत धारक, मुक्ति मार्ग पर हमें चलाओ।
जीवन यज्ञ सफल हो मेरा सिद्धि मार्ग पर ही ले जाओ।
शुद्ध भाव से स्वाहा कहकर अग्नि रूप को अर्पित करते।
स्वार्थ भाव से ऊपर उठकर प्रभु चरणों में सब कुछ धरते।

हे वरणीय प्रभो! आप मेरे सभी बन्धनों को शिथिल कर दें। हे अविनाशी नित्य परमात्मन्! हम आपके अनुशासन और नियम में रहते हुए हमेशा निष्पाप बने रहे ताकि सर्वथा बन्धनयुक्त हो सकें। यह सब वरुण, आदित्य के लिए है। मेरे पास जो कुछ है वह आपका ही है। इसमें मेरा कुछ नहीं है।

13. ओ३म् भवतं नः समनसो सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञꣳहिꣳसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा। इदं जातवेदोभ्याम् इदन्न मम।

गोतम ऋषिः यज्ञो देवताः यजु. 5-3

एक मनन से मिल सभी हम, ज्ञान का अर्जन करें।
स्नेह से मिलकर सभी जन, सृष्टि का सर्जन करें।
नित्य यज्ञानल जला हम दोष त्रय वर्जन करें।
भेद-भावों को मिटाकर ईश का अर्चन करें।
स्थान-स्थान पर यज्ञ रचाकर जल वायु के दोष हरें।
जात-पात का भूत भगाकर सब विध सबका तोष करें।

शुद्ध भाव से स्वाहा कहकर अग्नि रूप को अर्पित करते।
स्वार्थ भाव से ऊपर उठकर प्रभु चरणों में सब कुछ धरते।।

संसार के समस्त पदार्थों का ज्ञान रखने वाले विद्वान् स्त्री और पुरुष अनुकूल मन वाले, एक से ज्ञान वाले तथा निष्काम हो। वे कभी हमारे यज्ञ का अथवा यज्ञपति का हनन न करे और हम सबके लिए कल्याणकारी हों। यही हमारी प्रार्थना है। यह सब ज्ञान के भण्डार परमात्मा के लिए है। मेरे पास जो कुछ है वह आपका ही है। इसमें मेरा कुछ नहीं है।

महर्षि दयानंद लिखते हैं–

यह पुस्तक नित्यकर्मविधि का है। इसमें पंचमहायज्ञ का विधान है जिनके ये नाम है–ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ और नृयज्ञ। उनके मंत्र, मंत्रों के अर्थ और जो-जो करने का विधान लिखा है, सो-सो यथावत् करना चाहिये।

–पंचमहायज्ञविधि

विशेष सूचना – परन्तु आधुनिक युग में पंचमहायज्ञविधि का विधान साधारण व्यक्ति के लिये न व्यावहारिक, न सम्भव है क्योंकि उसके पास न ही इतनी समझ होती है और न ही समय। अतः साधारण व्यक्ति हिन्दी भाषा में भी देवयज्ञ कर सकता है क्योंकि प्रभु केवल भावना के भूखे होते हैं न कि विद्वता के। यहाँ तक कि यदि उसके पास समय की कमी है या उस को यज्ञ नहीं करना आता तो वह गायत्री मंत्र की 35 आहुतियाँ देकर भी यज्ञ कर सकता है क्योंकि यज्ञ में भावना प्रधान होती है न कि शब्द।

विशेष आहुतियाँ

1. ओ३म् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। वसिष्ठ ऋषिः रुद्रो देवताः, ऋ. 7-59-12

तीनों कालों में रक्षा करने वाले, पुष्ट करने वाले परमात्मा की हम उपासना करते हैं। वह परमात्मा मृत्यु रूपी बन्धन से छुड़ा कर मोक्ष रूपी सुख देने वाला है।

2. ओ३म् स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्। मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्। ब्रह्मा ऋषिः गायत्री देवताः, अथर्व. 19-71-1

ईश्वर उपदेश करता है कि इष्ट फल देने वाली, ज्ञानमयी वेदवाणी मेरे द्वारा प्रशंसित की गई है। यह वेदवाणी द्विजों को पवित्र करने वाली है। यह आयु, प्राण, सुप्रजा, गौ, पशु, कीर्ति, धन और ब्रह्मविद्या के देने वाली है, इसको द्विजों में आगे प्रचारित करो। इसके द्वारा प्राप्त किये गये शुभ कर्मों को मुझे अर्पण करके तुम ब्रह्मलोक को प्राप्त करो।

3. ओ३म् असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमतं गमयेति। बृहदारण्यकोपनिषद् 1-3-28

मिथ्या मति मिटाकर, तुम सत्य में लगा दो।
अज्ञान-तम हटाकर, तुम ज्योति जगमगा दो।
जीवन-मरण का बन्धन, काटने की साधना दो।
अमृत-सुधा पिलाकर, मुझको अमर बना दो।

हे दयालु प्रभो! आप हमें मिथ्या से हटाकर सत्य पथ पर ले चलो, अज्ञान-तम से हटाकर प्रकाश की ओर ले चलो, जन्म-मरण के बन्धन को काट कर मोक्ष का आनन्द प्रदान करो।

4. त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव। त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव। प्रपन्नगीता श्लोक 28

तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो, तुम्हीं हो बन्धु सखा हमारे।
तुम्हीं हो विद्या, द्रविण तुम्हीं हो, तुम्ही हो सर्वस्व प्रभु हमारे।।

हे प्रभु! आप ही मेरी माता हो और आप ही मेरे पिता भी हो, आप ही मेरे बन्धु हो और सखा भी आप ही हो। आप ही मेरी विद्या हो, धन-सम्पत्ति हो। हे प्रभु! आप तो मेरे सब कुछ हो।

5. सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्। गरुड़ पुराण

सबका भला करो भगवान्, सब पर दया करो भगवान्।
सब पर कृपा करो भगवान्, सबका सब विधि हो कल्याण।।
हे ईश सब सुखी हों, कोई न हो दुखारी।
सब हों नीरोग भगवन्, धन-धान्य के भण्डारी।।

सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों।
दुखिया न कोई होवे, सृष्टि में प्राणाधारी।।

हे प्रभु! सब सुखी, सब स्वस्थ और निरोगी हों, सब का कल्याण हो, कोई भी प्राणी दुःखी न हो।

6. ओ३म् पूर्णात् पूर्णमुदचति पूर्ण पूर्णेन सिच्यते। उतो तदद्य विद्याम यतस्तत् परिषिच्यते।। अथर्व. 10-8-29

पूर्ण परमेश्वर से पूर्ण जगत् उत्पन्न होता है। पूर्ण परमेश्वर से यह समस्त जगत् माली से वाटिका के समान सींचा जा रहा है और अब हम उस परब्रह्म का ध्यान करें, जिससे यह जगत् सींचा जा रहा है।

7. ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।। वृ. 5-1-10

वह ब्रह्म पूर्ण है, यह जगत् भी पूर्ण है। पूर्ण ब्रह्म से पूर्ण जगत् प्रकट होता है। पूर्ण की पूर्णता को लेने पर भी पूर्ण ही शेष रहता है।

अन्त में निम्न मंत्र से तीन बार पूर्णाहुति दें।

ओ३म् सर्वं वै पूर्णꣳस्वाहा।
ओ३म् सर्वं वै पूर्णꣳस्वाहा।
ओ३म् सर्वं वै पूर्णꣳस्वाहा।

हे प्रभु! हम परोपकार के लिये कर्म को करते हैं, वह कर्म आप की कृपा से परोपकार के लिये समर्थ हो। पूर्ण परमात्मा को पूर्णाहुति द्वारा यह यज्ञ समर्पित है।

विशेष सूचना – जो घी एवं सामग्री शेष बचे, थोड़ी-थोड़ी यज्ञकुण्ड में छोड़ते जायें।

●●●

9. पितृयज्ञ

पितृयज्ञ के दो भेद हैं – एक तर्पण और दूसरा श्राद्ध । तर्पण उसे कहते हैं जिस कर्म से विद्वान् रूप देव, ऋषि और पितरों को सुख युक्त करते हैं । उसी प्रकार जो उन लोगों का श्रद्धा से सेवन करना है, सो श्राद्ध कहाता है ।

यह तर्पण आदि कर्म विद्यमान अर्थात् जो प्रत्यक्ष है उन्हीं में घटता है, मृतकों में नहीं । क्योंकि उनकी प्राप्ति और उनका प्रत्यक्ष होना दुर्लभ है । इसी से उनकी सेवा भी किसी प्रकार से नहीं की जा सकती । किन्तु जो उनका नाम लेकर देवे वह पदार्थ उनको कभी नहीं मिल सकता । इसलिए मृतकों को सुख पहुँचाना सर्वथा असम्भव है । इसी कारण विद्यमानों के अभिप्राय से तर्पण और श्राद्ध वेद में कहा है । सेवा करने योग्य और सेवक अर्थात् सेवा करने वाले इनके प्रत्यक्ष होने पर यह सब काम हो सकता है ।

तर्पण आदि कर्म में सत्कार करने योग्य तीन हैं – देव, ऋषि और पितर । उनमें से देवों में प्रमाण–

देव : – जो सत्य बोलने, सत्य मानने और सत्य कर्म करने वाले हैं वे देव और वैसे ही झूठ बोलने, झूठ मानने और झूठ कर्म करने वाले मनुष्य कहाते हैं । जो झूठ से अलग हो के सत्य को प्राप्त होवें वे देवजाति मे गिने जाते हैं । इससे सब काल में सत्य ही कहें, मानें और करें । सत्यव्रत का आचरण करने वाला मनुष्य यशस्वियों में यशस्वी होने से देव और उससे उलटे कर्म करने वाला असुर होता है । इसी कारण से यहाँ विद्वान् भी देव हैं ।

ऋषि – सब विद्याओं को पढ़ के जो पढ़ाना है, वह ऋषि कर्म कहाता है । उस पढ़ने और पढ़ाने से ऋषियों का ऋण अर्थात् उनको उत्तम उत्तम पदार्थ देने से निवृत्त होता है । जो इन ऋषियों की सेवा करता है, वह उनको सुखी करने वाला होता है । यही व्यवहार विद्या कोश की रक्षा करने वाला होता है । जो सब विद्याओं को जानके सबको पढ़ाता है वह ऋषि कहाता है ।

जो पढ़ कर पढ़ाने के लिए विद्यार्थी का स्वीकार करना, सो आर्षेय अर्थात् ऋषियों का कर्म कहलाता है । जो उस कर्म को करता हुआ उन ऋषियों और देवों के लिए प्रसन्न करने वाले पदार्थों का निवेदन तथा सेवा करता है, वह विद्वान् अति पराक्रमी हो के विशेष ज्ञान को प्राप्त होता हैं जो

विद्वान् और विद्या को ग्रहण करने वाला है, उसका ऋषि नाम होता है। इस कारण से इस आर्षेय कर्म को सब मनुष्य स्वीकार करें।

पितर – ईश्वर सबको आज्ञा देता है कि पिता वा स्वामी अपने पुत्र, पौत्र, स्त्री या नौकरों को सब दिन के लिये आज्ञा देके कहे कि जो मेरे पिता-पितामहादि, माता-मातामहि आदि तथा आचार्य और इनसे भिन्न भी विद्वान् लोग अवस्था अथवा ज्ञान से वृद्ध, मान्य करने योग्य हों, उन सबके आत्माओं को यथायोग्य सेवा से प्रसन्न किया करो। सेवा करने के ये पदार्थ हैं–

जो उत्तम-उत्तम जल अनेकविध रस, घी, दूध अनेक संस्कारों से सिद्ध किये रोग नाश करने वाले उत्तम-उत्तम अन्न, सब प्रकार के उत्तम-उत्तम फल हैं, इन सब पदार्थों से उनकी सेवा सदा करते रहो। जिससे उनका आत्मा प्रसन्न होके तुम लोगों को आशीर्वाद देता रहे कि उससे तुम लोग भी सदा प्रसन्न रहो। हे पूर्वोक्त पितृ लोगों ! तुम सब हमारे अमृत रूप पदार्थों के भागों से सदा सुखी रहो और जिस पदार्थ की तुम को अपने लिए इच्छा हो, जो-जो हम लोग कर सकें, उस-उस की आज्ञा सदा हमें करते रहें। हम लोग मन, वचन, कर्म से तुम्हारे सुख करने में स्थित हैं। तुम लोग किसी प्रकार से दुःख मत पाओ। जैसे तुम लोगों ने बाल्यावस्था और ब्रह्मचर्याश्रम में हम लोगों को सुख दिया है। वैसे हमको भी आप लोगों का प्रत्युपकार करना अवश्य चाहिये जिससे हमको कृतघ्नता दोष न प्राप्त हो।

जीवित देवों-ऋषियों और पितरों का श्राद्ध और तर्पण करना ही पितृ यज्ञ है, ये ऋग्वेद, यजुर्वेद आदि के वचन और मनु जी ने भी कहा कि पितरों को वसु, पितामहों को रुद्र और प्रपितामहों को आदित्य कहते हैं। यह सनातन श्रुति है।

●●●

9. बलिवैश्वदेवयज्ञ (भूतयज्ञ)

जब भोजन सिद्ध हो तब जो कुछ भोजनार्थ बने उसमें से खट्टा, लवणान्न और क्षार को छोड़कर घृत-मिश्रितयुक्त अन्न जो कुछ पाकशाला में सिद्ध हो उसको दिव्य गुणों के अर्थ पाकाग्नि में निम्नलिखित 10 मन्त्रों से विधिपूर्वक नित्य होम करें ।

1. ओ३म् अग्नये स्वाहा ।

ज्ञानस्वरूप और सर्वत्र व्याप्त दुःख विनाशक परमात्मा के लिए यह सुन्दर आहुति समर्पित है ।

2. ओ३म् सोमाय स्वाहा ।

सब पदार्थों को उत्पन्न और पुष्ट करके सुख देने हारे सोम परमेश्वर के लिये यह सुन्दर आहुति समर्पित है ।

3. ओ३म् अग्नीषोमाभ्याम् स्वाहा ।

सब प्राणियों के जीवन और दुःख के नाश करने वाले परमात्मा के लिए यह सुन्दर आहुति समर्पित है ।

4. ओ३म् विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ।

संसार के प्रकाशक, दिव्य गुणों के भण्डार परमात्मा के लिए यह सुन्दर आहुति समर्पित है ।

5. ओ३म् धन्वन्तरये स्वाहा ।

जन्म-मरणादि रोगों को नाश करने हारे परमात्मा के लिए यह सुन्दर आहुति समर्पित है ।

6. ओ३म् कुह्वै स्वाहा ।

सबके साथ बसी हुई शक्ति परमात्मा के लिए यह सुन्दर आहुति समर्पित है ।

7. ओ३म् अनुमत्यै स्वाहा ।

सम्पूर्ण परिमेय या आकारवान् पदार्थों की आधार शक्ति परमात्मा के लिए यह सुन्दर आहुति समर्पित है ।

8. ओ३म् प्रजापतये स्वाहा ।

सब जगत् के स्वामी प्रजापालक, सर्वरक्षक परमात्मा के लिए यह सुन्दर आहुति समर्पित है ।

9. **ओ३म् सह द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा ।**

अग्नि और पृथिवी के उत्पादक परमात्मा के लिए यह सुन्दर आहुति समर्पित है ।

10. **ओ३म् स्विष्टकृते स्वाहा ।**

सबको इष्ट सुख देने वाले परमात्मा के लिए यह सुन्दर आहुति समर्पित है ।

तत्पश्चात् थाली अथवा पत्तल में पूर्व दिशादि क्रमानुसार यथाक्रम इन मन्त्रों से भाग रखें ।

1. **ओ३म् सानुगायेन्द्राय नमः ।** इससे पूर्व की ओर

सब ऐश्वर्यों के स्वामी वा गुणों के भंडार परमात्मा के लिये यह बलि भाग है ।

2. **ओ३म् सानुगाय यमाय नमः ।** इससे दक्षिण की ओर

सत्य न्यायकारी परमेश्वर और उसकी सृष्टि में सत्य न्याय का अनुसरण करने वाले सज्जनों के लिये यह बलि भाग है ।

3. **ओ३म् सानुगाय वरुणाय नमः ।** इससे पश्चिम की ओर

सबसे उत्तम परमात्मा और उसके धार्मिक भक्तों के लिए यह बलि भाग है ।

4. **ओ३म् सानुगाय सोमाय नमः ।** इससे उत्तर की ओर

पुण्य आत्माओं को आनन्दित करने वाले परमात्मा के लिये यह बलि भाग है ।

5. **ओ३म् मरुद्भ्यो नमः ।** इससे द्वार की ओर

प्राण के रक्षक परमात्मा के लिये यह बलि भाग है ।

6. **ओ३म् अद्भ्यो नमः ।** इससे जल की ओर

सबको आनन्द देने वाले सर्वव्यापक ईश्वर के लिए यह बलि भाग है ।

7. **ओ३म् वनस्पतिभ्यो नमः ।** इससे मूसल और ओखली की ओर

वनस्पतियाँ जिनसे वर्षा अधिक होती है और जिनके फलादि से जगत् का उपकार होता है, के रक्षक परमेश्वर के लिये यह बलि भाग है ।

8. **ओ३म् श्रियौ नमः ।** इससे ईशान कोण की ओर

जो सबसे सेवा करने योग्य परमात्मा है, उसकी सेवा से राज्यश्री की प्राप्ति के लिए सदा उद्योग करना चाहिए, उसी के लिए यह बलि भाग है ।

9. **ओ३म् भद्रकाल्यै नमः ।** इससे नैर्ऋत्य कोण की ओर

कल्याण करने वाली परमात्मा की शक्ति अर्थात् सामर्थ्य का सदा आश्रय लेना चाहिये, उसी के लिए यह बलि भाग है ।

10. **ओ३म् ब्रह्मपतये नमः ।** इससे मध्य में

वेद के स्वामी ईश्वर की प्रार्थना और विद्या प्रचार के लिए उद्योग अवश्य करना चाहिए, उसी के लिए यह बलि भाग है ।

11. **ओ३म् वास्तुपतये नमः ।** इससे भी मध्य में

गृह सम्बन्धी पदार्थों के रक्षक परमात्मा का सहाय सर्वत्र होना चाहिए, उसी के लिए यह बलि-भाग है ।

12. **ओ३म् विश्वेभ्य देवेभ्यो नमः ।** इससे ऊपर की ओर

संसार के प्रकाशक दिव्य गुणों के भण्डार जगदीश के लिए यह बलि भाग है ।

13. **ओ३म् दिवाचरेभ्यो भूतेभ्यो नमः ।** इससे भी ऊपर की ओर

दिन में विचरने वाले प्राणियों से उपकार लेना तथा उनका सुख देना मनुष्य का काम है, उन्हीं के लिए यह बलि भाग है ।

14. **ओ३म् नक्तंचारिभ्यो भूतेभ्यो नमः ।** इससे भी ऊपर की ओर

रात्रि में विचरने वाले प्राणियों से उपकार लेना तथा उनको सुख देना मनुष्य का काम है, उन्हीं के लिए यह बलि भाग है ।

15. **ओ३म् सर्वात्मभूतये नमः ।** इससे पीठ की ओर

सब में व्याप्त ईश्वर की सत्ता को सदा ध्यान में रखना चाहिए । उसी के लिए यह बलि-भाग है ।

16. **ओ३म् पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः ।** इससे दक्षिण की ओर

माता-पिता आदि सुख देने वाले पितरों की सेवा-सुश्रुषा से कर्त्तव्य पूर्ति के लिये यह बलि भाग है ।

●●●

11. अतिथि यज्ञ (नृयज्ञ)

अतिथि उसको कहते हैं कि जिसकी कोई तिथि निश्चित न हो अर्थात् अकस्मात् धार्मिक, परोपकारी, सत्योपदेशक, सबके उपकारार्थ सर्वत्र घूमने वाला, पूर्ण विद्वान्, जितेन्द्रिय, परम योगी, संन्यासी गृहस्थ के यहाँ आवे तो उसको अर्घ्य और आचमनीय तीन प्रकार का जल देकर, पश्चात् आसन पर सत्कारपूर्वक बिठाकर, खान-पान आदि उत्तमोत्तम पदार्थों से सेवा-शुश्रूषा करके उनको प्रसन्न करें। पश्चात् सत्संग कर उनसे ज्ञान-विज्ञान आदि जिनसे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होवे, ऐसे-ऐसे उपदेशों का श्रवण करें और अपना चाल-चलन भी उनके उपदेशानुसार रखें। समय पाकर गृहस्थ, राजादि भी अतिथिवत् सत्कार करने योग्य हैं।

●●●

12. यज्ञफल

1. ब्रह्मयज्ञ – ईश्वरभक्ति, स्वाध्याय अर्थात् भली-भाँति परमेश्वर का ध्यान स्तुति-प्रार्थना-उपासना, ज्ञान-कर्त्तव्य पालन, विद्या, धर्म आदि शुभ गुणों की प्राप्ति।

2. देवयज्ञ – परमेश्वर की उपासना, विद्वानों का सत्संग, उपकार की भावना, कर्त्तव्य-पालन। अग्निहोत्र से वायु, वृष्टि जल की शुद्धि होकर वृष्टि द्वारा संसार को सुख प्राप्त होना अर्थात् शुद्ध वायु का श्वास, स्पर्श, खान-पान से आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम बढ़कर धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का अनुष्ठान पूरा होना इसलिए इसको देवयज्ञ कहते हैं।

3. पितृयज्ञ – गृहस्थ जब माता-पिता और ज्ञानी-महात्माओं की सेवा करेगा तब उसका ज्ञान बढ़ेगा। उसे सत्यासत्य का निर्णय कर सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करके सुखी रहेगा। दूसरा कृतिज्ञता अर्थात् जैसी सेवा माता, पिता और

आचार्य ने सन्तान और शिष्यों के लिए की है वैसी जीवित माता-पितादि, पितरों की श्राद्ध-तर्पण द्वारा सेवा द्वारा कर्त्तव्य पालन करना अवश्य चाहिये ।

यह तो समझ लो श्राद्ध और तर्पण का अर्थ होता है क्या?
आत्मा ने शरीर त्याग कहाँ जन्म लिया कोई जानता है क्या?
जीवित माता-पिता, विद्वान् परोपकारी कहलाते हैं पितर।
उनकी सेवा भोजन वस्त्र मान सम्मान है उनका तर्पण।
पण्डित झूठा दिखा रहे दर्पण मरने पर कोई न होता तर्पण।
क्या पण्डित खाया भोजन आपके मात-पिता को होगा अर्पण।
पण्डित को वर्ष में एक बार खिलाते बाकी दिनों भूखे रहते है क्या?
जीवित मात-पिता को खिलाया नहीं अब मरने पर खिलाने बैठे हो क्या?

—लालचन्द चौहान

4. बलिवैश्व देव यज्ञ – इसका प्रयोजन यह है कि पाकशालास्थ वायु का शुद्ध होना और जो अज्ञात, अदुष्ट जीवों की हत्या होती है, उसका प्रत्युपकार कर देना ।

5. अतिथि यज्ञ – जब तक उत्तम अतिथि जगत् में नहीं होते तब तक उन्नति भी नहीं होती । उनके सब देशों में घूमने और सत्योपदेश करने से पाखण्ड की वृद्धि नहीं होती और सर्वत्र गृहस्थों को सहज से सत्य विज्ञान की प्राप्ति होती रहती है और मानव मात्र में एक ही धर्म स्थिर रहता है । बिना अतिथियों के सन्देह निवृत्ति नहीं होती । सेन्दह निवृत्ति के बिना दृढ़ निश्चय भी नहीं होता । धार्मिक, परोपकारी, सत्योपदेशक, पक्षपात रहित, शान्त, सर्वहितकारी विद्वानों की अन्नादि से सेवा, उनसे प्रश्नोत्तर आदि द्वारा विद्या प्राप्त करना अतिथि यज्ञ कहाता है ।

●●●

13. पंचमहायज्ञ

पांच श्रेष्ठतम यज्ञ कर्म जो मनुज ध्यान में लावे,
अमित लगन श्रद्धा से वह नर आगे बढ़ता जाये।
ज्ञान ज्योति मानव के जब मन्दिर में जग जाती है,
अज्ञान अविद्या की अंधियारी, कहीं नजर न आती है।

ब्रह्मयज्ञ

होकर अतिशय श्रद्धा विभोर जो ईश्वर के गुण गाता है,
ईश्वर चिन्तन हो सुबह-शाम यह ब्रह्म यज्ञ कहलाता है।
जो प्राणी अखिलेश 'ओ३म्' का सतत् ध्यान नित धरते हैं,
वे सद्विचार निज हृदय धार, साक्षात् प्रभु का करते हैं।

देवयज्ञ

अग्निहोत्र है 'देवयज्ञ' सर्वोपरि कर्म सर्वहितकारी,
वायु मण्डल होता है शुद्ध, सुख पाते सभी प्राणाधारी।
यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म सर्वदा-जो प्राणी अपनाता है,
लोक और परलोक सुधारे मन वांछित फल पाता है।

पितृयज्ञ

तृतीय यज्ञ है पितृयज्ञ, पितु-माता की सेवा करना,
आचार्य और विद्वान् जनों की, शिक्षा निज चित्त में धरना।
जो माता-पिता, गुरुजनों की, सेवा से चित्त चुराये,
निश्चय समझो बस वह प्राणी घोर क्लेश उठाये।

बलिवैश्व देव यज्ञ

सब जीवों पर दया दिखाना, बलिवैश्व यज्ञ कहलाता है।
इसके द्वारा पाप कर्म से, मनुज स्वयं बच जाता है।

अतिथि यज्ञ

पांचवाँ श्रेष्ठतम यज्ञ कर्म, अतिथि गृह द्वारे आ जाये,
कर्त्तव्य गृहस्थ का आदर कर, उच्चासन पर बिठलाये।
क्षुधा निवारणार्थ, पदार्थ रख, दुग्ध फलादि से उसका,
सब विधि, अतिथि सत्कार करे, सद् उपदेश सुने उसका।

14. मुख्य विशेष पर्व

1. मकर सौर संक्रान्ति

भूगोल खगोल की जानकारी रखने वाले विद्वानों के परिक्षण अनुसार पृथिवी अपनी परिधि में घूमते हुए सूर्य की पूरी परिक्रमा कर लेती उसे सौर वर्ष कहते हैं और एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण करती उसको संक्रान्ति कहते हैं ।

पृथिवी परिभ्रमण की परिधि को 12 भागों में विभक्त किया करके ज्योतिषविदों ने मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन, नामक राशियाँ कल्पित हैं । सूर्य सिद्धान्त अनुसार 12 मास की 12 राशियाँ किस संक्रान्ति से आरम्भ होती हैं जोकि निम्नलिखित हैं ।

सौर मास	*किस संक्रान्ति से आरम्भ होता है*	*उस दिन की अंग्रेज़ी तिथि*
वैशाख	मेष	14 अप्रैल
ज्येष्ठ	वृष	15 मई
आषाढ़	मिथुन	15 जून
श्रावण	कर्क	17 जुलाई
भाद्रपद	सिंह	17 अगस्त
आश्विन	कन्या	17 सितम्बर
कार्तिक	तुला	18 अक्तूबर
मार्गशीर्ष	वृश्चिक	17 नवम्बर
पौष	धनु	16 दिसम्बर
माघ	मकर	14 जनवरी
फाल्गुन	कुम्भ	13 फरवरी
चैत्र	मीन	15 मार्च

यह गणना है, मनुष्य के साथ राशि आदि को जोड़ना कल्पित कपोल कल्पना है, इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं ।

2. नव संवत्सरोत्सव

महा प्रलय की अवस्था में ईश्वर की ईक्षण शक्ति से जब प्रकृति में विकार आता है, तब जड़ जंगम जगत् की उत्पत्ति होती है और वसन्त ऋतु के उषा काल में पृथ्वी से बहार आये ईश्वरीयज्ञान (अत्यंत पवित्र अन्तःकरण वाले) मनुष्यों की वाणी प्रस्फुटित होती है ।

3. वसन्त ऋतु

वैदिक मान्यतानुसार आदि मानव समुदाय वसन्तऋतु में पृथ्वी से बाहर आया था, उस समय सर्दी-गर्मी समान थीं । नूतन पत्तों पुष्प सब ओर सुशोभित हो रहे थे । उस मनमोहक वातावरण में पृथ्वी के गर्भ से बाहर आये युवक युवतियों को एक दूसरे का साहचर्य प्राप्त हुआ ।

प्रकृति की आकर्षक घटा में ईश्वर का दर्शन करने अरण्य संस्कृति प्रिय हमारे बुद्धिमान् पूर्वज ऐसे अवसर पर आमोद-प्रमोद से कैसे वंचित रह सकते थे । नव संवत्सर के पश्चात् वसन्तोत्सव की परम्परा का शुभारम्भ किया ।

4. होलिकोत्सव (फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा)

इस पर्व को होली का दहन से अक्सर लोग जानते हैं । यह एक कपोलकल्पित कथा है । आग में बैठे दो व्यक्तियों में से एक जल जाये और एक बच जाये यह अग्नि के गुणों से विपरीत है । केवल बुद्धिहीन ही ऐसी बातों पर विश्वास कर सकता है । इस अवसर पर नया अन्न, गेहूँ, चना आदि की फसल का आगमन होता है । किसान इस उत्सव को नाच, गान से खुशी को प्रकट करते थे और शीतकालीन वर्षा से उत्पन्न हुए वायु प्रदूषण के लिये यज्ञ (हवन) वैदिक काल में करते थे, परन्तु पौराणिकों ने इस महान् उत्सव को कीचड़ में लथपथ कर दिया और कीचड़ फैंक डंडे मार खुशी को इजहार करना मूर्खों के अतिरिक्त और किस का काम हो सकता है ।

विद्वानों को चाहिये कि इन पर्वों की उपयोगिता के विषय में लोगों में जागरुकता लायें और इसके विकृतस्वरूप से होने वाली हानियों का सर्वसाधारण को ज्ञान करायें ।

●●●

15. कुछ विशेष पर्वों पर आहुति देने के मंत्र

1. जन्म दिन

भारत में प्रायः जन्म दिन मनाने की प्रथा आदि काल से ही रही है। परन्तु वर्तमान में इस प्रथा को बदल दिया गया है। अतः जन्म दिन पर यज्ञ करके निम्न मंत्र से आहुति देनी चाहिये।

ओ३म् उप प्रियं पनिप्नतं युवानमाहुती वृधम्।
अगन्म विभ्रतो नमो दीर्घमायु कृणोतु मे।।

हे परमपिता परमात्मा! जिस प्रकार मैं आहुति के द्वारा इस यज्ञाग्नि को बढ़ा रहा हूँ, वैसे ही मैं सात्त्विक अन्न का सेवन करके अपनी आयु को बढ़ाता हुआ प्रतिवर्ष अपना जन्म दिन मनाता रहूँ।

ओ३म् शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमन्ताञ्छतमु वसन्तान्।
शतमिन्द्राग्नी सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषेमं पुनर्दुः।।

ऋ० 10-161-4

मनुष्य श्रेष्ठ कर्म व संयम धारणा कर सौ वर्ष तक जीने का प्रयास करे। विद्युत्, अग्नि, सूर्य, बृहस्पति आदि से समुचित सहयोग व उपयोग लेकर व्यक्ति सौ वर्ष तक जीवन धारण कर सकता है।

2. वैवाहिक वर्षगांठ

ओ३म् समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ।
स मातरिश्वा संधाता समु देष्ट्री दधातु नौ। ऋ० 10-85-47

हम दोनों के हृदय परस्पर जल के समान मिले हुए रहेंगे। जैसे प्राण वायु सबको प्रिय है, वैसे ही हम एक दूसरे को चाहते हैं। जैसे संसार का धारक सब को धारण कर रहा है, वैसे ही हम एक दूसरे की सुख-सुविधा को धारण करते रहेंगे। जैसे उपदेशक अपने श्रोताओं का हित चाहता है, उन्नति चाहता है, वैसे हम भी एक दूसरे की उन्नति के लिये कार्य करते रहेंगे।

ओ३म् यदेतद् हृदयं त तदस्तु हृदयं मम।
यदिदꣳहृदयं मम तदस्तु हृदयं तव।। ब्रा० 1-3-9

तुम्हारा आत्मा वा अन्तःकरण सदा मेरे आत्मा व अन्तःकरण के अनुकूल हो, ऐसी हम इच्छा करते हैं। मेरा हृदय, मन आदि भी तुम्हारे हृदय मन के अनुकूल होकर, हम परस्पर एक दूसरे के दुःख दर्द में बराबर साथ निभाते रहें।

3. नए भवन का शिलान्यास

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आसुव।। यजु० 30-3

हे सकल जगत् के बनाने वाले, सब सुखों के दाता परमेश्वर! कृपा करके हमारे कार्य में आने वाली विघ्न-बाधाओं को दूर कीजिए। और जो इस कार्य को सफल करने के लिये शुभ कर्म व पदार्थ हैं, वे सब हमको प्राप्त कराइये ताकि हम इस कार्य को सफलतापूर्वक आपकी असीम कृपा से पूर्ण कर सकें।

ओ३म् ऊर्जस्वती पयस्वती पृथिव्यां निमिता मिता।
विश्वान्नं बिभ्रती शाले मा हिसीः प्रतिगृह्वत।। अथर्व० 9-3-16

समस्त आवश्यकताओं, सुविधाओं, उपयोगिताओं के अनुसार बनाये गये ये भवन हमें बल, पराक्रम व धनसमृद्धि से युक्त करने वाले हों। ये दूध, अन्न, धन, धान्य आदि से सदा भरे रहें और बड़े ही सुखदायक और कीर्ति प्रदान करने वाले हों। हम इनकी सुन्दरता को सदा बनाये रखने में आपके आशीर्वाद से सदा सक्षम हों। ऐसी हमारी मनोकामना प्रभु पूर्ण हों।

●●●

16. यज्ञ-प्रार्थना

यज्ञस्वरूप प्रभो हमारे, भाव उज्ज्वल कीजिये।
छोड़ देवें छल कपट को, मानसिक बल दीजिये।।
वेद की बोलें ऋचायें, सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे, शोक सागर से तरें।।
अश्वमेधादिक रचायें, यज्ञ पर-उपकार को।
धर्म-मर्यादा चलाकर, लाभ दें संसार को।।
नित्य श्रद्धा भक्ति से, यज्ञादि सब करते रहे।
रोग पीड़ित विश्व के, सन्ताप सब हरते रहें।।
भावना मिट जाय मन से, पाप अत्याचार की।
कामनाएं पूर्ण होवें, यज्ञ से नरनार की।।
लाभकारी हो हवन, हर प्राणधारी के लिये।
वायु जल सर्वत्र हो, शुभ गन्ध को धारण किये।।
स्वार्थ भाव मिटे हमारा, प्रेम-पथ विस्तार हो।
इदन्न मम का सार्थक, प्रत्येक में व्यवहार हो।।
हाथ जोड़ झुकाएं मस्तक, वन्दना हम कर रहे।
'नाथ' करुणारूप! करुणा, आपकी सब पर रहे।।

—पंडित लोकनाथ

17. अग्निहोत्र के लाभ

अथर्ववेद (6.79.3) में कहा गया है कि यज्ञ करने से मेधा शक्ति तीक्ष्ण होती है और परमैश्वर्य की प्राप्ति होती है। ऋग्वेद के (1.18.7) में आता है कि यज्ञ करने वाले का मन शुद्ध और पवित्र होता है। ऋग्वेद के (1.36.4) में लिखा है कि यज्ञ की हवि देवताओं को पहुँचती है, अग्नि देवताओं का दूत है। देवता उसको पाकर महान् शक्तिशाली होते हैं और बदले में यजमान को उत्तम सन्तान, धन और ऐश्वर्य देते हैं। यजुर्वेद (5.14) में कहा है कि यज्ञ से मन एकाग्र होता है और विचार पवित्र होते हैं।

यज्ञ से रोगों के कीटाणु मरते हैं। संसार यज्ञरूप है। संसार का आधार यज्ञ पर है। यज्ञ मानसिक रोगों का नाश करता है। यज्ञ करने से वाणी में शक्ति आती है, यज्ञ से टी.बी., कैंसर आदि भयानक रोग नष्ट हो जाते हैं। परिवार एवं सन्तान पर अच्छा प्रभाव पड़ता है, यज्ञ से पारिवारिक जीवन एवं घर स्वर्गमय हो जाता हैं यज्ञ से पितरादि तृप्त होते हैं। यज्ञ से राज्य, पुत्र-पौत्र, धनादि ऐश्वर्यों की प्राप्ति होती है, आत्मा पवित्र होती है। यज्ञ परोपकारादि का साधन है। मनुष्य को यज्ञ अवश्य ही करना चाहिये।

जिस देश में समय-समय पर यज्ञ होते रहते हैं वहाँ अकाल नहीं पड़ता। यज्ञ में जो हवि अग्नि में डाली जाती है वह जलकर सूक्ष्म होकर ऊपर अन्तरिक्ष में जाती है और मेघों से मिलती है और वर्षा करने में सहायक होती है। यज्ञ करने पर हमारी कामना वर्षा से पूर्ण होती है। यज्ञ में दी हुई हवि वर्षा के रूप में वापिस आ जाती है। यजुर्वेद के (25.8) में कहा है कि विधिपूर्वक किया हुआ, भली-भाँति किया हुआ, मंत्र पाठ से किया हुआ यज्ञ वृष्टि द्वारा नदी-नाले सब भर देता है। यज्ञ की अग्नि से वायु गर्म होकर हल्की होकर ऊपर को जाती है और सूक्ष्म हवि को ले आती है। यजुर्वेद (2.23) में आता है कि यज्ञ में घी और सुगन्धयुक्त सामग्री आदित्यों, वसुवों और मरुतों को मिलती है और सूर्यलोक तक जाती है। वह अधिक लाभदायक वृष्टि करती है। घी के परमाणु जब मेघों में मिलते हैं तो चिकनाहट से शीघ्र ही वर्षा होती है। अन्न बहुत होता है, जनता प्रसन्न होती है।

यज्ञों में मंत्र पाठ बहुत आवश्यक है और लाभकारी भी है। विधिपूर्वक मंत्र पाठ हो तो वायुमण्डल में लहरें चलती हैं जो वर्षा कराने में सहायक होती है। मंत्र पढ़कर स्वाहा के साथ हवि देते हैं, पाठ करने में जो समय लगता है उनमें हवि जलकर सूक्ष्म हो जाती है। वेद पाठ का एक और लाभ है, इससे ज्ञान की वृद्धि होती है। प्राचीन परम्परा बनी रहती है और वेदों की रक्षा होती है। यजुर्वेद (5.28) में वेद भगवान् मनुष्य मात्र को आज्ञा देता है कि नित्य यज्ञ किया करो, पति-पत्नी प्रातः सायं यज्ञ किया करें।

यज्ञ करने से यजमान के हृदय में त्याग की भावना आती है। जीवन उत्कृष्ट होता है। ईश्वर की प्रेरणा से मन शुद्ध होता है। शतपथ ब्राह्मण में लिखा है कि '' पुरुषो वै यज्ञः'' अर्थात् यज्ञ रूप मनुष्य जीवन है, यह भरद्वाज ऋषि ने कहा था। जो मनुष्य यज्ञ नहीं करते, प्रभु उनको दण्ड देते हैं। ऋग्वेद में कहा गया है कि यज्ञ न करने वालों की हानि होती है। जो यज्ञ नहीं करते उनको न इस जन्म में और न ही अगले जन्म में सुख मिलता है।

गीता में भी यज्ञ के सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा गया है। ''यज्ञाद् भवन्ति पर्जन्य'' यज्ञ से वृष्टि होती है। अन्न द्वारा जीवन है और अन्न वर्षा से ही होते हैं। गीता के श्लोक (3.10) में कहा है कि प्रजापति ने जब सृष्टि की रचना की तो मनुष्य को यज्ञ करने का आदेश दिया कि इससे तुम्हारी सब कामनायें पूर्ण होंगी। श्लोक (3.61) में कहा है कि यज्ञ से देवता प्रसन्न होते हैं और वह यजमान को सुख देते हैं। यज्ञ से मोक्ष की प्राप्ति होती है। निष्काम यज्ञ से बन्धन नहीं होता। ''यज्ञ, दान, तप, कर्म पावनानि मनीषिणा'' अर्थात् यज्ञ मनुष्य को पवित्र करता है। यज्ञ करना मनुष्य का कर्त्तव्य है, यज्ञ से आत्मा बलवान् होती है। यज्ञ एक महान् कर्म है।

यज्ञ शेष का भोजन करने का बहुत लाभ बताया है। जो यज्ञ शेष दूसरों को खिलाते हैं उनका कल्याण होता है। यज्ञ शेष खाने वाला मनुष्य पापों से छूट जाता है। जो केवल अपने लिए पकाता है वह पाप खाता है। यज्ञ की समाप्ति पर यजमान पुरोहित को दक्षिणा देता है, इसका यजमान को बहुत लाभ होता है। दक्षिणा देने से ही यज्ञ संस्कारादि सफल होते हैं।

लाभ :–

(1) अग्निहोत्र से वायु, जल की शुद्धि होकर वृष्टि द्वारा संसार को सुख प्राप्त होता है अर्थात् शुद्ध वायु का श्वास, स्पर्श, खानपान से आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम बढ़के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का अनुष्ठान पूरा होता है इसीलिए इसको देवयज्ञ कहते हैं । (सत्यार्थप्रकाश चतुर्थ समुल्लास)

(2) दुर्गन्धयुक्त वायु और जल से रोग, रोग से प्राणियों को दुःख और सुगन्धित वायु तथा जल से आरोग्य और रोग के नष्ट होने से सुख प्राप्त होता है । (सत्यार्थप्रकाश तृतीय समुल्लास)

(3) जब तक इस होम करने का प्रचार रहा तक तक आर्यावत देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाए । (सत्यार्थप्रकाश तृतीय समुल्लास)

(4) जहाँ होम होता है वहाँ से दूर देश में स्थित पुरुष की नासिका से सुगन्ध का ग्रहण होता है वैसे ही दुर्गन्ध का भी इतने से ही समझ लो कि अग्नि में डाला हुआ पदार्थ सूक्ष्म होकर फैलकर वायु के साथ दूर देश में जाकर दुर्गन्ध की निवृत्ति करता है । (सत्यार्थप्रकाश तृतीय समुल्लास)

(5) उस पुष्प, इतर आदि के सुगन्ध में वह सामर्थ्य नहीं है कि दूषित वायु को बाहर निकाल कर शुद्ध वायु का प्रवेश करा सके क्योंकि उसमें भेदक शक्ति नहीं है और अग्नि का ही सामर्थ्य है कि हल्का करके बाहर निकाल कर पवित्र वायु का प्रवेश कर देता है । (सत्यार्थप्रकाश तृतीय समुल्लास)

(6) केसर कस्तूरी आदि सुगन्ध, घृत, दुग्ध आदि पुष्ट, गुड़, शर्करा आदि मिष्ट, सोमलता आदि औषधि रोगनाशक जो ये चार प्रकार के बुद्धि, वृद्धि, शूरता, धीरता, बल और आरोग्य करने वाले गुणों से युक्त पदार्थ हैं, उनका होम करने के पवन और वर्षा जल की शुद्धि करके शुद्ध पवन और जल के योग से पृथिवी के सब पदार्थों की जो अत्यन्त उत्तमता होती है उसमें सब जीवों को परम सुख होता है । इस कारण उस अग्निहोत्र कर्म करने का लाभ होता है तथा ईश्वर भी उन मनुष्यों

पर प्रसन्न होता है। जैसे-जैसे प्रयोजनों के अर्थ अग्निहोत्रादि का करना अत्यन्त उचित है। (पंचयज्ञ महाविधि)

(7) पूर्वोक्त सुगन्धादि युक्त चार प्रकार के द्रव्यों का अच्छी प्रकार संस्कार करके अग्नि में होम करने से जगत् का अत्यन्त उपकार होता है। जैसे दाल, शाक आदि में सुगन्धित द्रव्य और घी को चमचे में अग्नि में तपाकर उनमें छौंक देने से वे सुगन्धित हो जाते हैं क्योंकि उस सुगन्धित द्रव्य और घी के अणु उनको सुगन्धित करके दाल आदि पदार्थों को पुष्टि और रुचि बढ़ाने वाले कर देते हैं। वैसे ही यज्ञ से जो भाप उठता है वह भी वायु और वृष्टि के जल को निर्दोष और सुगन्धित करके सब जगत् को सुखी कर देता है। इससे यह यज्ञ परोपकार के लिए ही होता है। (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका—वेदविषय)

(8) इत्र और पुष्पादि का सुगन्ध तो उसी दुर्गन्ध वायु मे ही मिलकर रहता है। उसको छेदन करके बाहर नहीं निकाल सकता और न वह ऊपर चढ़ सकता है क्योंकि उसमें हलकापन नहीं होता। उसके उसी अवकाश में रहने से बाहर की शुद्ध वायु उस ठिकाने में भी नहीं जा सकती क्योंकि खाली जगह के बिना दूसरे का प्रवेश नहीं हो सकता। फिर सुगन्ध और दुर्गन्धयुक्त वायु के वहाँ रहने से रोग नाशादि फल भी नहीं होते। (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका—वेदविषय)

(9) वह सूर्य निरन्तर सब जगत् के रसों को पूर्वोक्त प्रकार से ऊपर खींचता है और जो पुष्पादि का सुगन्ध है वह भी दुर्गन्ध का निवारण करता है। परन्तु वे परमाणु सुगन्ध और दुर्गन्धयुक्त होने से जल और वायु को भी मद्धम कर देते हैं। उस जल की वृष्टि से औषधि, अन्न, वीर्य और शरीर आदि भी मद्धम गुण वाले हो जाते हैं और उनके योग से बुद्धिबल, पराक्रम, धैर्य, शूरवीरता आदि गुण भी मद्धम ही होते हैं। (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका—वेदविषय)

(10) जो वायु सुगन्धादि द्रव्य के परमाणुओं से युक्त होम द्वारा आकाश में चढ़ कर वृष्टि जल को शुद्ध कर देता है और उससे वृष्टि भी अधिक होती है। क्योंकि होम करके नीचे गर्मी अधिक होने से जल भी ऊपर

अधिक चढ़ता है। शुद्ध जल और वायु के द्वारा अन्नादि औषधि भी अत्यन्त शुद्ध होती हैं ऐसे प्रतिदिन सुगन्ध के अधिक होने से जगत् में नित्यप्रति अधिकाधिक सुख बढ़ता हैं यह फल अग्नि में होम किए बिना दूसरे प्रकार से होना असम्भव है। (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका– वेदविषय)

(11) ईश्वर की प्रसन्नता के लिए हम होम करते हैं.... परमेश्वर हमको विदित हो। उसके अर्थ हम होम करते हैं..... परोपकार के लिए होम करते हैं... परमेश्वर हमको प्राप्त हो जिसके लिए हम होम करते हैं। (पंचमहायज्ञ)

ठीक विधि से जो यज्ञ नहीं करते उनका यज्ञ निष्फल है–

योग्य रीति से यथाविधि होम करना चाहिये। एकदम मन भर घी जला दिया और चम्मच-चम्मच करके मन भर घी को वर्ष भर जलाते रहे तो भी होम नहीं होगा। (पूना व्याख्यान)

एक बार किया हुआ हवन कब तक सुगन्धि देता है–

जो संध्या काल में होम होता है वह हुत द्रव्य प्रातःकाल तक वायु शुद्धि द्वारा सुखकारी होता है। जो अग्नि में प्रातःकाल में होम किया जाता है वह हुत द्रव्य सायंकाल पर्यन्त वायु शुद्धि द्वारा बल, बुद्धि और आरोग्यकारक होता है। (सत्यार्थप्रकाश तृतीय समुल्लास)

●●●

18. विदेशों में अग्निहोत्र

जब हम इस विश्व के इतिहास को पढ़ते हैं तो ज्ञात होता है कि यज्ञ का प्रचलन केवल भारत में ही नहीं अपितु इसके अतिरिक्त विदेशों में भी यज्ञ का प्रचलन रहा है। हनुमान जी जब सीता को खोजने लंका में गये तो उन्होंने लंका के निवासियों को यज्ञ करते देखा। प्रत्येक परिवार में वेद मंत्रों की ध्वनि के साथ-साथ दैनिक यज्ञ किया जाता था। सुदूर पूर्व में यज्ञों का प्रचलन निकट भूत में भी था। बोर्निया में कूटेई प्रान्त से 1876 ई० में प्राप्त

शिलालेखों से पता चलता है कि वहाँ के सम्राट् मूलवर्मन (400 ई०) ने बहुसुवर्णक यज्ञ किये तथा ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा आदि से सम्मानित किया।

श्रीमूलवर्मा राजेन्द्रो यष्ट्वा बहुसुवर्णकम्।
तस्य यज्ञस्य युपोऽयम् द्विजैन्द्रस्सम्प्रकल्पित।।

कम्बूज देश (कम्बोड़िया) में शिवाचार्य सम्राट् ईशानवर्मन्द्वितीय (925-928 ई०), जयवर्मन (529-941 ई०) तथा राजेन्द्रवर्मन (944-966 ई०) के काल में वैदिक यज्ञ किये जाते थे। सम्राट् उदयादित्यवर्मन देव (1001 ई०) के समय में जयेन्द्र वर्मन राजगुरु थे और उन्होंने ब्रह्मयज्ञ आदि बड़े-बड़े यज्ञ किये तथा याज्ञिक को यजमान की ओर से दक्षिणादि द्वारा सम्मानित किया गया। सम्राट् सूर्यवर्मन द्वितीय (1112-3) के नाम सड़क लेखानुसार उसने कोटिहोम, लक्षहोम, महाहोम तथा पितरों के लिए यज्ञ किये। सम्राट् ने लक्षहोम तथा कोटिहोम के पश्चात् आचार्य दिवाकर पण्डित को बहुत दक्षिणा दी। यज्ञ केवल राजवंश तक ही सीमित न थे अपितु जनसाधारण में भी प्रिय थे। मध्यदेश की विदुषी मालनी नाम की महिला द्वारा ब्रह्मयज्ञ का भी उल्लेख मिलता है।

चम्पा देश (अनम) के लेखों से ज्ञात होता है कि वहाँ का राजा दैनिक एवं संध्या यज्ञ करता था और उसे ब्राह्मण तथा राज पुरोहित यज्ञों एवं संस्कारों के विषय में उपदेश व परामर्श दिया करते थे। ईसा की आरम्भिक शताब्दियों में जावा, सुमात्रा, बाली, मलाया आदि प्रायद्वीपों में वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) में अपना स्थान बना लिया था और वहाँ पर खूब यज्ञ होते थे।

चीन के राजा सूफी ने अपने देश में यज्ञों का (अनुष्ठान) संगठन किया था। चीन में यज्ञों के बारे में डॉ० लैग लिखते हैं कि यज्ञों से पूर्व व्रत और अनेक प्रकार की शुद्धियों का करना राजा और उसके पुरोहितों के लिए अत्यावश्यक होता था। सुगन्धित रसों की आहुति दी जाती थी ताकि देवता बुलाये जा सकें और उनका आह्वान करने का काम एक कार्यकर्ता करता था, जो मुख्य द्वार के अन्दर की ओर खड़ा होता था।

चीन और जापान में यज्ञ को 'घोम' कहते हैं जो 'होम' का ही अशुद्ध

रूप समझना चाहिये। वहाँ मन्दिरों में आज भी धूप जलाने की परम्परा है। जापान में यज्ञों के बारे में वर्णन मिलता है एक और संस्कार, सुगन्धित धूप जलाने का, जो कि हेयन काल में पहले ही प्रचलित रह चुका है और अब भी लोकप्रिय है। 'शुको' तथा उसका शिष्य 'शिनोदोकन' उनके सर्वाधिक प्रसिद्ध शिक्षक थे। दोकन के शिष्य शिनोशेशिन ने धूप जलाने की विधि एवं संस्कारों को उन्नत करके इसे एक स्वतन्त्र कला बना दिया।

ईरान के यहूदियों में यज्ञ करने का बहुत प्रचार था। वे यज्ञकुण्ड को कैर कहते हैं। जिन्दावस्था में होता को जोता कहा गया है। यहूदी अब भी अपने घरों में पवित्र अग्नि (आतिशे बहराम) प्रज्ज्वलित रखते हैं। इस अग्नि का बुझ जाना किसी भावी दुःख एवं संकट का पूर्व संकेत माना जाता है। जिन पुरोहितों ने अपनी आत्मा तथा शरीर की सर्वोच्च शुद्धि कर ली हो, वे इस अग्नि का पूरा ध्यान रखते हैं। इसे पत्थर की वेदी पर चांदी या कांसे के पात्र में प्रज्ज्वलित रखा जाता हैं जिन्दावस्था में यज्ञ वेदी के निर्माण का कोई विशेष संकेत नहीं है। परन्तु गृहाग्नि को खुश्क ईंधन तथा सुगन्धित पदार्थों के द्वारा प्रज्ज्वलित रखा जाता था। कालान्तर में यज्ञ वेदियों का निर्माण भी आरम्भ हो गया था।

प्राचीन ईरानी अग्नि पूजक नहीं थे अपितु यज्ञ के द्वारा प्रभु की स्तुति, प्रार्थना, उपासना एवं आराधना किया करते थे। कुछ संस्कार ऐसे हैं जिनका पूर्ण संचालन केवल पुरोहित ही करता है। कुछ ऐसे हैं जिनमें उपकरणों को सामान्य व्यक्ति भी छू सकता है। परन्तु ऐसे छोटे-छोटे संस्कार कम ही हैं जिन्हें पुरोहित तथा जनसाधारण मिलकर करते हैं। सुगन्धियुक्त लकड़ी विशेषकर चन्दन के द्वारा अग्नि प्रज्ज्वलित की जाती है। फिर उसमें घी, दूध, सोम बूटी का रस, पवित्र रोटी तथा जल-फल-फूल तथा अन्य सुगन्धित धूप (सामग्री) की आहुतियाँ दी जाती हैं। प्राचीन ईरानियों की यह प्रथा अब तक पारसियों में प्रचलित है। भारत तथा ईरान में यज्ञ सुसंगठित प्रक्रियाओं का केन्द्र था और पुरोहित वर्ग द्वारा सम्पादित होता था। सोमबूटी की कूटछान कर दूध में मिला कर आहुति दी जाती थी। अग्नि में हवि प्रदान करना भारतीयों एवं ईरानियों की परम्परा है जो कि ग्रीक तथा रोम में भी पाई जाती है। विवाह संस्कार में नव-दम्पत्ति वैवाहिक अग्नि की परिक्रमा करते हैं, वर

अग्नि में हवन करता है तथा वधु के द्वारा 'लाजा होम' होता है। यह सब भारतीय ईरानी प्रथा है। रोम देश में भी नवविवाहित वाम दिशा से दक्षिण की ओर वेदी की परिक्रमा करते हैं और अग्नि में रोटी की आहुति देते हैं। पारसी लोग हवन कुण्ड को भी बड़ा महत्त्व देते हैं। इनके धार्मिक स्थानों (मन्दिरों) के ऊपर चारों कोनों पर यज्ञकुण्ड बने हुए मिलते हैं।

बौद्ध भिक्षु चमन लाल ने अमेरिका के विषय में महत्त्वपूर्ण खोज की है। उन्होंने लिखा है कि प्राचीन समय में वहाँ के विद्यार्थियों का कर्त्तव्य होता था कि वे मन्दिर में झाड़ू लगायें तथा पवित्राग्नि की देखभाल करें। बालक के जन्म के अवसर पर चार दिन तक यज्ञ होता था। किसी अवस्था में भी चार दिन तक इस अग्नि को बुझने नहीं दिया जाता था। मन्दिरों में देवदासियों का एक मुख्य कर्त्तव्य पवित्राग्नि की रक्षा करना, उसे बुझने से बचाना तथा उसमें देवताओं के लिए प्रतिदिन भोजन की आहुति देना था। भारतीयों की भाँति कृषि के देवता की आराधना के लिए प्रत्येक व्यक्ति हाल के बीच में रखे पात्र में जलती अग्नि में भोजन की थोड़ी सी आहुति देता था। युद्ध से पूर्व भी पुरोहित यज्ञ करते थे।

पुरातन काल में रोम तथा यूनान के निवासी यज्ञ किया करते थे। रेड़ इण्डियनों तथा मिश्र में भी यज्ञ का प्रचार था। आयरलैंड तथा दक्षिणी अमेरिका में महामारी की रोकथाम के लिए अग्नि प्रज्ज्वलित करके यज्ञ किया जाता था। अग्नि जलाने की प्रथा गत शताब्दि तक स्कॉटलैण्ड में भी थी। रोम में बेसटा देवी के मन्दिर में एक कुण्ड में अग्नि जलती रहती है तथा उस अग्नि में सुगन्धित पदार्थ डाले जाते हैं।

●●●

19. शान्तिः पाठ

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि। अथर्वण ऋषिः ईश्वर देवताः, यजु. 36-17

ओ३म् शान्तिः! शान्ति!! शान्ति!!!

शान्ति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में, शान्ति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में।
जल में, थल में और गगन में, अन्तरिक्ष में, अग्नि, पवन में।
ओषधि-वनस्पति वन-उपवन में, सकल विश्व में जड़-चेतन में।
शान्ति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में, शान्ति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में।
ब्राह्मण के उपदेश वचन में, क्षत्रिय के द्वारा हो रण में।
वैश्यजनों के होवे धन में, और शूद्र के हो अर्चन में।
शान्ति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में, शान्ति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में।
शान्ति राष्ट्र निर्माण सृजन में, नगर-ग्राम में और भवन में।
जीवमात्र के तन-मन में और जगती के हो कण-कण में।
शान्ति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में, शान्ति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में।

हे प्रभु! प्रकाशयुक्त सूर्यादि, अन्तरिक्ष, पृथ्वी, जल, औषधियाँ, वनस्पतियाँ, सब विद्वान् लोग, सब ज्ञान और सब अन्य पदार्थ शान्तिकारी निरुपद्रव हों। शान्ति स्वयं अधिक शान्तिप्रद हो। हे प्रभु! कृपया ऐसी ही शान्ति मुझे भी प्राप्त हो।

●●●

20. वेदमहिमा

सुनो भाइयो तुम्हें वेदों की कुछ बात सुनाता हूँ
सुन भी रखी होगी तुमने फिर भी सुनाता हूँ
प्रलय के बाद सृष्टि, सृष्टि के बाद प्रलय का होता आना
जैसे जन्म के बाद मृत्यु, मृत्यु के बाद पुनः होता गर्भ में आना
कर्मानुसार मिलता सबको शरीर, कर्मफल की बात बताता हूँ–
पुण्य आत्माओं को ईश्वर सृष्टि के पूर्व में पैदा करता
हज़ारों की संख्या में युवावस्था में उत्पन्न करता प्रभु
बिन मात-पिता पालता कौन ईश्वर की व्यवस्था बतलाता हूँ–
पुण्य कर्मों से मिलता है मनुष्य योनि में जन्म
कर्मों के अनुसार ही ग़रीब अमीर के घर में होता है जन्म

पाप कर्मों से मिलती पशु, पक्षी योनि यह वेद की बात बताता हूँ–
यदि ईश्वर वेदज्ञान न देता तो सब रह जाते अज्ञान
वेद ईश्वर वाणी महर्षि दयानन्द ने मानो यह तुम्हें बताता हूँ–
वेद में सभी सत्य विद्याएं मानव जीवन के कर्त्तव्य का संविधान
वेदों में भूगोल खगोल विज्ञान का पड़ा अनन्त ज्ञान
वेद ईश्वरकृत किसी इन्सान ने नहीं बनाये यह तुम्हें बताता हूँ–
ईश्वरीय सृष्टि के उपरान्त होती है मैथुनी सृष्टि की शुरुआत
ईश्वरीय सृष्टि में नहीं होती कोई मानव की जात पात
योग्यतानुसार वर्ण व्यवस्था यह मनुस्मृति की बात सुनाता हूँ–
योग्यता के अनुसार कहलाये ये ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य
पाखण्डियों ने कर दिया वर्णव्यवस्था को तहस-नहस
मनु ने की थी वेदानुसार वर्ण व्यवस्था यह तुम्हें बताता हूँ–
ईश्वर जीवन अनादि सृष्टि रचना के अणु भी अनादि
मनुष्यों के भोग भुगाने को ईश्वर ने सृष्टि रचादि
प्रकृति के सभी पदार्थ ने दखे दान में यह तुम्हें बताता हूँ–
पाँच तत्त्वों से शरीर की रचना पाँच तत्त्वों से होती सृष्टि की रचना
पाँच कर्मेन्द्रियां पाँच ज्ञानेन्द्रियां 11वें मन की चंचलता से बचना
बिन कब्जों के जुड़े हैं हड्डियों के जोड़ विचित्र रचना तुम्हें बताता हूँ–
ये पर्वत समुन्द्र नदियाँ ईश्वर की अनन्त सामर्थ्य को बताते हैं
प्रलय में समस्त प्रकृति तत्त्व ईश्वर के गर्भ में समा जाते हैं
ऋषियों ने वेदों से की विज्ञान की खोज यह बात तुम्हें बताता हूँ–
अन्न जल औषधि ईश्वर ने दे रखी सभी जीवों को दान में
सच्चाई ईमानदारी ही सम्मान कराती है सारे जहान में
सत्य विद्याओं का वेद में अनन्त खज़ाना यह तुम्हें बताता हूँ–
वेद में कहीं नहीं ईश्वर के अवतार धारण का वर्णन
अज्ञानी ऐसा मानते हैं जिन्होंने नहीं किया वेदों का श्रवण
ईश्वर जन्म-मरण के बन्धन में नहीं आता यह वेदों की बात बताता हूँ–

ईश्वर आज्ञा को मान उसको सर्वज्ञ सर्वव्यापक ही जान
मूर्ति नहीं होती भगवान् पाखण्डियों की इस बात को न मान
मूर्ति है बेजान उसमें नहीं हो सकती प्राणप्रतिष्ठा यह वेदों की बात बताता हूँ–
यदि वेद नहीं पढेंगे सुनोगे तो सदा ही रहोगे वेद शास्त्रों से अनजान
क़ुरान पुराणों के पढ़ने से नहीं होता सत्य-असत्य का वास्तविक ज्ञान
सत्य प्रकाशित करने को लिखा देव दयानन्द ने 'सत्यार्थप्रकाश' यह तुम्हें बताता हूँ–
अन्ध विश्वास अज्ञानता को छोड़ो सत्य विद्या वेदों से नाता जोड़ो
वेद शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त कर पाखण्डियों के पाखण्ड का भांडा फोड़ो
वेद स्वतः प्रमाण अन्य नहीं चाहिये कोई प्रमाण यह लाख टके की बात बताता हूँ–

–लालचंद चौहान

●●●

लेखक द्वारा प्रकाशित एवं निःशुल्क वितरित पुस्तकों की सूची :–

1. रामचरितमानससार
2. गीतासार
3. उपनिषद्सार
4. सत्यार्थप्रकाशसार
5. भक्ति
6. सुखीजीवन
7. आत्मबोध
8. वेदवाणी
9. वैदिकसाहित्य
10. अमृतवाणी
11. महर्षि दयानंद
12. स्वामी विवेकानंद
13. शरणागति
14. वैदिक रामायण
15. क्या आप जानते हैं ?
16. शेंर-ओ-शायरी

लेखक द्वारा अप्रकाशित पुस्तकों की सूची :–

1. वैदिक उपनिषद्वाणी
2. वैदिक दर्शनवाणी
3. वैदिक महाभारत
4. वैदिक गीता
5. अमर धर्मग्रंथ
6. अमर नीतिग्रंथ
7. पुराणपरिचय
8. ईश्वरसिद्धि
9. राष्ट्रभाषा हिन्दी
10. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम
11. महावीर हनुमान
12. योगिराज श्रीकृष्ण
13. आदिशंकराचार्य
14. आचार्य चाणक्य
15. दस गुरु
16. आर्यसमाज के महामानव
17. स्वामी रामतीर्थ
18. संस्कार
19. गीतांजलि
20. आर्यसमाज
21. ओ३म्
22. गायत्रीरहस्य
23. ज्ञानामृत
24. यज्ञ
25. संत
26. संतवाणी
27. सामान्य हिन्दी (भाग I-II)
    (सब कक्षाओं के लिये)
28. **Great Thoughts**
29. **General English (Part I to V)**
    (For All Classes)